ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
મશબ/1215/170-179/છ, તા. 23-3-2016 – થી મંજૂર

हिन्दी

(प्रथम भाषा)

कक्षा 9

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है ।
सभी भारतवासी मेरे भाई–बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परंपरा पर गर्व है।
मैं हंमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता–पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा– एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

राज्य सरकारनी विनामूल्ये योजना हेठळनुं पुस्तक

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेकटर 11-ए, गांधीनगर-382 010

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर

इस पाठ्यपुस्तक के सभी अधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन है। इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

विषय परामर्शन

डॉ. वीरेन्द्रनारायण सिंह

लेखन-संपादन

डॉ. किशोरीलाल कलवार (कन्वीनर)
श्री राजेन्द्रपालसिंह राणा
श्री विजयकुमार तिवारी
डॉ. शान्तिबहन शर्मा
डॉ. नंदिता शुक्ला
डॉ. हसमुख बारोट
श्री जे. पी. चोहान
डॉ. हसुमतीबहन पटेल
डॉ. पारुलबहन दवे

समीक्षा

डॉ. नयना डेलीवाला
डॉ. चंद्रकांता शाक्य
डॉ. प्रेमसिंह क्षत्रिय
श्री पी. एच. मारु

संयोजन

डॉ. कमलेश एन. परमार
(विषय-संयोजक : हिन्दी)

निर्माण-संयोजन

श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन

श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गए नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसंधान में गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकृति दी है।

नये राष्ट्रीय अभ्यासक्रम के परिपेक्ष में तैयार किए गए विभिन्न विषयों के नये अभ्यासक्रम के अनुसार तैयार की गई **कक्षा 9 हिन्दी (प्रथम भाषा)** की यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है। नये पाठ्यपुस्तक की हस्तप्रत निर्माण की प्रकिया में संपादकीय पेनल ने विशेष ख्याल रख कर तैयार की है। एन.सी.ई.आर.टी. एवं अन्य राज्यों के अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए गुजरात के नये पाठ्यपुस्तक को गुणवत्तालक्षी कैसे बनाया जाय उस पर संपादकीय पेनल ने सराहनीय प्रयत्न किया है।

इस पाठ्यपुस्तक को प्रसिद्ध करने से पहले इसी विषय के विषय निष्णांतों एवं इस स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकों की ओर से सर्वांगीण समीक्षा की गई है। समीक्षा शिबिर में मिले सुझावों को इस पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। पाठ्यपुस्तक की मंजूरी क्रमांक प्राप्त करने की प्रकिया के दौरान गुजरात माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड के द्वारा प्राप्त हुए सुझावों के अनुसार इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक सुधार करके प्रसिद्ध किया गया है।

नये अभ्यासक्रम का एक उदेश्य है, इस स्तर के छात्र व्यवहारिक भाषा का उपयोग करने के साथ-साथ अपनी भाषा अभिव्यक्ति को विशेष असरकारक बनाएँ। साहित्यिक स्वरूप एवं सर्जनात्मक भाषा का परिचय के साथ-साथ हिन्दी भाषा की खूबियों को समझकर अपने स्व-लेखन में प्रयोग करना सीखें, इस लिए भाषा-अभिव्यक्ति एवं लेखन के लिए छात्रों को पूर्ण अवकाश दिया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक को रुचिकर, उपयोगी एवं क्षतिरहित बनाने का पूरा प्रयास मंडल द्वारा किया गया है, फिर भी पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा में रुचि रखनेवालों से प्राप्त सुझावों का मंडल स्वागत करता है।

एच. एन. चावडा
नियामक

डॉ. नीतिन पेथाणी
कार्यवाहक प्रमुख

दिनांक : 03-03-2016 गांधीनगर

प्रथम संस्करण : 2016

प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, विद्यायन , सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से एच. एन. चावडा, नियामक

मुद्रक :

मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह – *

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे ;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे ;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे ;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो ;ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं ;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व संझे और उसका परिरक्षण करे ;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे ;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे ;

(झ) सार्वजनिक सम्पति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे ;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के क्षेत्रों में उत्कर्ष की और बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले ;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, बालक या प्रतिपाल्य के लिए यथास्थिति शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

---

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

अनुक्रमणिका

1. दोहे और पद	(मुक्तक)	कबीर	1
2. बड़े घर की बेटी	(कहानी)	प्रेमचंद	4
3. नीति के दोहे	(मुक्तक)	वृंद	10
4. तर्क और विश्वास	(निबंध)	बालकृष्ण भट्ट	12
5. भूतल को स्वर्ग बनाने आया	(महाकाव्यांश)	मैथिलीशरण गुप्त	15
6. दिल बहादुर दाज्यू	(संस्मरण)	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	18
7. प्रथम रश्मि	(कविता)	सुमित्रानंदन पंत	23
8. गरीबी नंबर दो	(कहानी)	मधु काँकरिया	27
9. लीक पर वे चलें	(कविता)	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	30
10. श्रम देवता की उपासना	(निबंध)	विनोबा भावे	33
11. पानी में घिरे हुए लोग	(कविता)	केदारनाथ सिंह	38
12. नदियों में फिर प्राण प्रतिष्ठा करें	(लेख)	अमृतलाल वेगड़	42
13. महाराजा का इलाज	(कहानी)	यशपाल	47
14. दो ग़ज़लें	(ग़ज़ल)	सुल्तान अहमद	51

(द्वितीय सत्र)

15. भारतीय संस्कृति	(निबंध)	हजारीप्रसाद द्विवेदी	53
16. बिहारी के दोहे	(मुक्तक)	बिहारी	57
17. अपना-अपना भाग्य	(कहानी)	जैनेन्द्र कुमार	60
18. श्रीकृष्ण भक्ति	(सवैया)	रसखान	65
19. सादगी और स्वच्छता	(आत्मकथांश)	मोहनदास करमचंद गाँधी	67
20. बहुत दिनों के बाद	(कविता)	नागार्जुन	71
21. दर्द की पृष्ठभूमि में	(यात्रा-वर्णन)	मीरा सीकरी	73
22. दो कविताएँ	(कविता)	केदारनाथ अग्रवाल	78
23. वीर बादल	(कहानी)	आचार्य चतुर्सेन शास्त्री	81
24. बिरसा मुंडा	(जीवनी)	संकलित	86
25. सन्नाटा	(कविता)	भवानीप्रसाद मिश्र	90
26. सिद्धार्थ का गृहत्याग	(एकांकी)	नरेश मेहता	94
27. नीलकंठ : मोर	(रेखाचित्र)	महादेवी वर्मा	98
28. देख चिड़िया	(कविता)	राजेश जोशी	105
29. सहानुभूति	(कहानी)	हरिशंकर परसाईं	107

- व्याकरण 112
- रचना
- प्रयोजन मूलक हिन्दी

(पूरक वाचन)

1. सच्चा प्रेम	(खंड काव्यांश)	रामनरेश त्रिपाठी	141
2. प्रतिदिन तीन मिनट दौड़िए	(लेख)	संकलित	143
3. ठुकरा दो या प्यार करो	(कविता)	सुभद्राकुमारी चौहान	145
4. भूकंप	(संस्मरण)	रामवृक्ष बेनीपुरी	146

•

प्रथम सत्र

1 दोहे और पद

कबीर

(जन्म : सन् 1398 ई . निधन : सन् 1518 ई.)

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा में कबीर का स्थान सर्वोपरि है। उनका जन्म काशी के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ। अनंतदास द्वारा रचित कबीर परचई के अनुसार कबीर जन्म से जुलाहे थे। किन्तु किंवदंतियों ने उन्हे विधवा ब्राह्मण के गर्भ से पैदा हुआ बतलाया गया है। उन्होंने रामानंद को अपना गुरु माना । कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे परंतु उनके पास अनुभव से प्राप्त अथाह ज्ञान था। कबीर ईश्वर के अवतार, मूर्तिपूजा, उपवास, आडम्बर एवं कर्मकांड में विश्वास नहीं करते थे। वे तो सदाचार, क्षमा, दया, प्रेम, अहिंसा और सहनशीलता के समर्थक थे। उनका मन भेदभावपूर्ण समाज व्यवस्था के कारण व्यथित था। अत: तत्कालीन समाज में अन्तर्विरोधों को देखकर उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से उनपर खुलकर तीखा प्रहार किया।

वे मानवतावादी थे और मानव को मानव की दृष्टि से देखने के पक्षपाती थे- प्रेम के क्षेत्र में राजा, प्रजा, ऊँच-नीच, जाति-वाँति का भेद उन्हें सहन नहीं था । उनका दृढ़ विश्वास था कि सहज समाधि सहज प्रेम से ही सिद्ध होती है । वे कागद की लेखी के बजाय, आँखिन की देखी को अधिक प्रामाणिक मानते थे। उनकी आत्मा में सच्चाई और वाणी में विश्वास था। कबीर ने निर्गुण ब्रह्म का चिंतन किया । कबीर की वाणी का संग्रह बीजक नाम से प्रसिद्ध है । इसके तीन भाग हैं - साखी सबद और रमैनी। उनकी भाषा को सधुक्कड़ी कहा जाता है । उनकी कविता जीवनानुभवों तथा जीवनोपयोगी उपदेश से भरी होने कारण हृदय को छूती है।

दोहे

सुमिरन से सुख होत है , सुमिरन से दुख जाय ।
कह कबीर सुमिरन किए , साईं मांहि समाय ॥ 1 ॥

वृच्छ कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर ।
परमारथ के कारने , साधुन धरा सरीर ॥ 2 ॥

रुखा सूखा खाइ के , ठण्डा पानी पीव ।
देख पराई चूपड़ी , मत ललचावै जीव ॥ 3 ॥

कबिरा संगति साधु की, हरै और की व्याधि ।
संगति बुरी असाधु की, आठौं पहरि उपाधि ॥ 4 ॥

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढे बन माहिं ।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखे नाहिं ॥ 5 ॥

सबद (पद)

मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में ॥
ना मैं देवल ना मैं मसजिद , ना काबे कैलास में ॥
ना तो कौने क्रिया-करम में, नहीं योग बैराग में ॥
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं , पल भर की तालास में ॥
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वांसों की स्वांस में ॥

शव्दार्थ-टिप्पणी

सुमिरन स्मरण **सांई** ईश्वर **मालिक** माँहि में **वृच्छ** पेड़ **भखैं** खाना **संचै** संचय, एकत्रकरना **नीर** पानी **चूपड़ी** घी लगी हुई रोटी **साधु** सज्जन **उपाधि** कष्ट, विघ्न **मोको** मुझको **देवल** मंदिर **बैराग** वैराग्य, विरक्ति **व्याधि** पीड़ा

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कबीर के मतानुसार दु:ख कैसे दूर होता है ?
(2) कौन अपना फल कभी नहीं खाता है ?
(3) सज्जन लोग शरीर क्यों धारण करते है ?
(4) सज्जनों की संगति से क्या लाभ होता है ?
(5) बुरे लोगों की संगति का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
(6) मृग कस्तूरी को कहाँ ढूँढ़ते हैं ?
(7) कबीर ने परमात्मा का वास कहाँ बताया है ?

2. दो-तीन वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) ईश्वर स्मरण से कौन-कौन से लाभ होते हैं ?
(2) वृक्ष और नदी का दृष्टान्त देकर कबीर ने सज्जनों के विषयों में क्या कहा ?
(3) कबीर के मतानुसार परमात्मा कहाँ पर निवास नहीं करते ?
(4) कबीर ने परमात्मा को ढूँढ़ने की कौन सी सलाह दी है ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) कबीरदास ने निराकार ब्रह्म के निवास के बारे में क्या कहा है?
(2) आत्मसंतोष के विषय में कबीरजी क्या कहते हैं ?
(3) कबीरदासजी संगतिके विषय में क्या कहते हैं ?
(4) कस्तूरी और मृग का दृष्टांत देकर कवि ने परमात्मा के बारे में क्या कहा है ?
(5) कबीर के मतानुसार सज्जनों में कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए ?

4. काव्य पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर ।
(2) संगति बुरी असाधु की, आठौं पहरि उपाधि ।

5. मुहावरे के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) आठौं पहरि उपाधि । (2) जीव ललचाना ।

6. तद्‌भव शब्दोंके तत्सम रूप लिखिए :

वृच्छ	तुरतै
भखैं	मिलिहौं
मोको	तलास

7. समानार्थी शब्द लिखिए:

नीर, व्याधि, देवल, मृग, वन

8. विपरीतार्थक शब्द लिखिए :

साधु, संगति, संयोग, दूर

9. सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए :

(1) मृग के शरीर में कस्तूरी कहाँ होती है ?

(A) नाभि में (B)हृदय में (C) आँख में (D) पैर में.

(2) असाधु की संगति से क्या प्राप्त होता है ?

(A) धन (B) ज्ञान (C) वैभव (D) व्याधि

(3) रूखा-सूखा खाकर ठंडा पानी पीने का क्या तात्पर्य है ?

(A) लोभ करना (B) संतोष करना (C) आलस्य करना (D) फेशन करना

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- छात्र कबीरजी के दोहों को कंठस्थ करें और कक्षा में सस्वर गान करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- कबीरदासजी के नीति विषयक दोहों का संकलन करवायें ।
- कक्षा में दोहों की अन्ताक्षरी करवायें ।

•

2 बड़े घर की बेटी

प्रेमचंद

(जन्म : **सन्** 1880 ई . निधन : **सन्** 1936 ई.)

प्रेमचंद हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। आपका जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर लमही नामक गाँव में हुआ था- आपकी प्रारंभिक शिक्षा लमही में हुई, मौलवी साहब से आपने उर्दू और फारसी पढ़ी - आप हिन्दी साहित्य के महत्त्वपूर्ण कहानीकार एवं उपन्यासकार हैं। हिन्दी से पूर्व आप उर्दू में नवाबराय के नाम से लिखते थे। हिन्दी जगत आपको उपन्यास सम्राट से जानता है ।

प्रेमचंद के नाम से लिखी 'बड़े घर की बेटी' आपकी पहली कहानी है। आपकी रचनाओं में भारतीय ग्रामीण एवं कृषक जीवन जीवंत हो उठा है। मानसरोवर के आठ भागों में आपका सम्पूर्ण कहानी-साहित्य संग्रहीत है। नमक का दरोगा , पंच परमेश्वर, सुजान भगत, और कफन आपकी महत्त्वपूर्ण कहानियाँ हैं। आपके आगमन से हिन्दी उपन्यास को एक नई ऊँचाई प्राप्त हुई, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला, गबन और गोदान आपके महत्त्वपूर्ण उपन्यास हैं। अपने समकालीन जीवन के यथार्थ चित्रण के कारण उनकी रचनाएँ अपने युग का दस्तावेज बन गई हैं।

'बड़े घर की बेटी' ग्रामीण संयुक्त परिवार से सम्बन्धित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में आदर्शवादी धरातल पर संयुक्त कुटुम्बप्रथा एवं उच्च संस्कारों का चित्रण हुआ है। आनंदी का देवर लालबिहारी शिकार करके घर में चिड़िया लाता है, उससे व्यंजन बनाते समय घी की समस्या पर देवर भाभी में घर्षण के चित्रण से शुरू होता है, आगे बढ़कर भाई-भाई में मनमुटाव हो जाता है । श्रीकंठसिंह और उनकी पत्नी आनंदी मर्यादावादी हैं, इसलिए घर छोड़ने को तत्पर पश्चाताप ग्रस्त लालबिहारी सिंह को गले लगा लेते हैं। इसमें आनंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जो व्यक्तिगत मान प्रतिष्ठा को दर किनार कर परिवार के हित में निर्णय करती है। देवर लालबिहारी सिंह से अपमानित होने के बावजूद आनंदी उसे क्षमा कर देती है, जिससे परिवार टूटने से बच जाता है। अपने संस्कारों के चलते 'बड़े घर की बेटियाँ ' दु:ख, अपमान सहकर भी परिवारों को टूटने से बचा लेती हैं।

बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के जमींदार और नंबरदार थे। उनके पितामह किसी समय बड़े धन-धान्यसंपन्न थे । गाँव का पक्का तालाब और मंदिर जिनकी अब मराम्मत भी मुश्किल थी, उन्हीं के कीर्तिस्तंभ थे। कहते हैं, इस दरवाजे पर हाथी झूमता था, अब उसकी जगह एक बूढ़ी भैंस थी, जिसके शरीर में पंजर के सिवा और कुछ शेष न रहा था। पर दूध शायद बहुत देती थी, क्योंकि एक-न-एक आदमी हाँडी लिए उसके सिर पर सवार ही रहता था। बेनीमाधवसिंह अपनी आधी से अधिक संपत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे। उनकी वर्तमान आय एक हजार वार्षिक से अधिक न थी। ठाकुर साहब के दो बेटे थे। बड़े का नाम श्रीकंठ सिंह था। उन्होंने बहुत दिनों तक परिश्रम और उद्योग के बाद बी.ए. की डिग्री प्राप्त की थी। अब एक दफतर में नौकर थे। छोटा लड़का लालबिहारीसिंह दोहरे बदन का सजीला जवान था-मुखड़ा भरा हुआ, चौड़ी छाती। भैंस का दो सेर ताजा दूध वह सबेरे उठ पी जाता था। श्रीकंठसिंह की दशा उसके विलकुल विपरीत थी। इन नेत्रप्रिय गुणों को उन्होने बी.ए. के दो अक्षरों पर न्योच्छावर कर दिया था। इन दो अक्षरों ने उनके शरीर को निर्बल और चेहरे को कांतिहीन बना दिया था। इसी से वेधक ग्रंथों पर उनका विशेष प्रेम था। आयुर्वेदिक औषधियों पर उनका अधिक विश्वास था। साँझ-सबेरे उनके कमरे से प्राय:खरल की सुरीली कर्णमधुर ध्वनि सुनाई दिया करती थी। लाहौर और कलकत्ते के वैद्यों से बड़ी लिखा-पढ़ी रहती थी.

श्रीकंठ इस अंग्रेजी डिग्री के अधिपति होने पर भी अंग्रेजी सामाजिक प्रथाओं के विशैष प्रेमी न थे, बल्कि वे बहुधा बड़े जोर से उनकी निंदा और तिरस्कार किया करते थे। इसीसे गाँव में उनका बड़ा सम्मान था। दशहरे के दिनों में वे बड़े उत्साह से रामलीला में सम्मिलित होते और स्वयं किसी-न-किसी पात्र का पार्ट लेते। गौरीपुर में रामलीला के वे ही जन्मदाता थे। प्राचीन हिंदू सभ्यता का गुणगान उनकी धार्मिकता का प्रधान अंग था। सम्मिलित कुटुंब प्रथा के तो वे एकमात्र उपासक थे। आजकल स्त्रियों की कुटुंब में मिल-जुलकर रहने की ओर जो अरुचि होती है, उसे वे जाति और देश के लिए बहुत ही हानिकर समझते थे। यही कारण था कि गाँव की ललनाएँ उनकी निंदक थीं। कोई-कोई तो उन्हें अपना शत्रु समझने में भी संकोच न करती थीं। स्वयं उन्की पत्नी को ही इस विषय में उनसे विरोध था। वह इसलिए नहीं कि उसे अपने सास, ससुर,देवर, जेठ से घृणा थी, बल्कि उसका विचार था कि यदि बहुत कुछ सहन करने और तरह देने पर ही परिवार के साथ निर्वाह न हो सके तो आए दिन के कलह से जीवन के नष्ट करने की अपेक्षा यही उत्तम है कि अपनी खिचड़ी अलग पकाई जाए।

आनंदी एक बड़े घर की लड़की थी। उसके बाप एक छोटी-सी रियासत के ताल्लुकेदार थे- विशाल भवन, एक हाथी, तीन कुत्ते, बाज, बहली, शिकरे, झाड़-फानूस, आनरेरी मैजिस्ट्रेट और ऋण जो एक प्रतिष्ठित ताल्लुकोदार के योग्य पदार्थ है,

वे सभी यहाँ विद्यमान थे। भूपसिंह नाम था। बड़े उदारचित्त, प्रतिभाशाली पुरुष थे। पर दुर्भाग्यवश लड़का एक भी नहीं था। सात लड़कियाँ हुई और देवयोग से सब की सब जीवित रही। पहली उमंग में तो उन्होंने तीन ब्याह दिल खोलकर किए, पर जो पंद्रह-बीस हजार का कर्ज सिर पर हो गया तो आँखेंखुलीं, हाथ समेट लिया-आनंदी चौथी लड़की थी-अपनी सब बहिनों , अधिक रुपवती और गुणशीला थी- इसी से ठाकुर भूपसिंह उसे बहुत प्यार करते थे- सुंदर संतान को कदाचित उसके माता-पिता भी अधिक चाहते हैं- ठाकुर साहब बड़े धर्मसंकट में थे कि इसका विवाह कहाँ करें- न तो यही चाहते थे कि ऋण का बोझ बढ़े और न यही स्वीकार था कि उसे अपने को भाग्यहीन समझना पड़े- एकदिन श्रीकंठ उनके पास किसी चंदे का रुपया मांगने आए। शायद नागरीप्रचार का चंदा था- भूपसिंह उनके स्वभाव पर रीझ गए- और धूमधाम से श्रीकंठसिंह का आनंदी के साथ विवाह हो गया।

आनंदी अपने नये घर में आई तो यहाँ का रंग-ढ़ंग कुछ और ही देखा। जिस टीम-टाम की उसे बचपन से ही आदत पड़ी हुई थी, वह यहाँ नाम मात्र को भी न थी- हाथी-घोडों की तो बात ही क्या, कोई सजी हुई सुंदर बहली तक न थी। रेशमी स्लीपर साथ लाई थी, पर यहाँ बाग कहाँ? मकान में खिड़कियाँ तक न थी, न जमीन पर फर्श, न दीवार पर तस्वीरें। यह एक सीधे-सादे देहाती गृहस्थ का मकान था- किंतु आनंदी ने थोड़ा ही दिनो में अपने को इस अवस्था के ऐसा अनुकूल बना लिया, मानो उसने विलास के सामान कभी देखे ही न थे ।

एक दिन दोपहर के समय लालबिहारी सिंह चिड़िया लिए हुए आया और भावज से कहा-जल्दी से पका दो, सुझे भूख लगी है- आनंदी भोजन बनाकर इनकी राह देख रही थी- अब यह नया व्यंजन बनाने बैठी- हाँडी में देखा तो घी पाव भर से अधिक न था- बड़े घर की बेटी किफायत क्या जाने-उसने सब घी माँस में डाल दिया- लालबिहारी खाने बैठा तो दाल में घी न था, बोला-दाल में घी क्यों नहीं छोड़ा ?

आनंदीने कहा घी सब माँस में पड़ गया- लालबिहारी जोर से बोला-अभी परसों घी आया है, इतनी जल्दी उठ गया?

आनंदीने उत्तर दिया-आज तो कुल पाव भर रह गया होगा- वह सब मैंने माँस में डाल दिया।

जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है, उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य जरा-जरा सी बात पर तिनक जाता है।

लालबिहारी को भावज की यह ढिठाई बहुत बुरी मालूम हुई- तिनककर बोला-मैंके में तो चाहे घी की नदी बहती है।

स्त्री गालियां सह लेती है, मार भी सह लेती है, पर मायके की निंदा उससे सही नहीं जाती- आनंदी मुँह फेरकर बोली। हाथी मरा भी तो नौ लाख का, वहाँ इतना घी नित्य मामूली नौकर खा जाते है ।

लालबिहारी जल गया, थाली उठाकर पटक दी और बोला-जी चाहता है जीभ पकड़कर खींच लूँ । आनंदी को भी क्रोध आया। मुँह लाल हो गया, बोली-वे होते तो आज इसका मजा चखा देते ।

अब अपढ़ उजड्ड ठाकुर से रहा न गया । उसकी स्त्री एक साधारण जमींदार की बेटी थी । जब जी चाहता उसपर हाथ साफ कर लिया करता था । उसने खड़ाऊ उठाकर आनंदी की ओर जोर से फेकी और बोला - जिसके गुमान पर फूली हुई हो, उसे भी देखूँगा और तुम्हें भी ।

आनंदी ने हाथ से खड़ाऊँ रोकी, सिर बच गया, पर अँगुली में बड़ी चोट आई । क्रोध के मारे हवा से हिलते हुए पत्ते की भाँति काँपती हुई अपने कमरे में आकर खड़ी हो गई । स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है । उसे अपने पति के बल और पुरुषत्व का घमंड होता है । आनंदी लोहू का घूँट पीकर रह गई ।

श्रीकंठ सिंह शनिवार को घर आया करते थे। बृहस्पति को यह घटना हुई थी। दो दिन तक आनंदी कोपभवन में रही। कुछ खाया न कुछ पिया, उनकी बाट देखती रही । अंत में शनिवार को वे नियमानुकूल संध्या समय घर आए और बैठकर कुछ इधर-उधर की बातें, कुछ देश और काल संबंधी समाचार, तथा कुछ नए मुकदमों आदि की चर्चा करने लगे । यह वार्तालाप दस बजे तक होता रहा । गाँव के भद्र पुरुषों को इन बातों में ऐसा आनंद मिलता था कि खाने पीने की भी सुधि न रहती थी । श्रीकंठको पिंड छुड़ाना मुश्किल हो जाता था । यह दो-तीन घंटे आनंदी ने बड़े कष्ट से काटे । किसी तरह भोजन का समय आया, पंचायत उठी । जब एकांत हुआ तब लालबिहारी ने कहा - भैया, आप जरा घर में समझा दीजिएगा कि मुँह सँभालकर बातचीत किया करें, नहीं तो एक दिन अनर्थ हो जाएगा ।

बोनीमाधव सिंह ने बेटे की ओर से साक्षी दी - हाँ बहू-बेटियों का यह स्वभाव अच्छा नहीं की पुरुषों के मुंह लगें ।

लालबिहारी-वह बड़े घर की बेटी है तो हम लोग भी कोई छोटे नहीं है ।

श्रीकंठ ने चिंतित स्वर से पूछा - आखिर बात क्या हुई ?

लालबिहारी ने कहा - कुछ भी नहीं, यों ही आप-ही-आप उलझ पड़ीं। मैके के सामने हम लोगों को तो कुछ समझती ही नहीं ।

श्रीकंठ खा-पीकर आनंदी के पास गए । वह भरी बैठी थी । हजरत भी कुछ तीखे थे । आनंदी ने पूछा-चित्त तो प्रसन्न है ?

श्रीकंठ बोले-बहुत प्रसन्न है, पर तुमने आजकल घर में यह क्या उपद्रव मचा रखा है ।

आनंदी की तेवरियों पर बल पड़ गए और झुँझलाहट के मारे बदन में ज्वाला-सी दहक उठी। बोली -जिसने तुम्हें आग लगाई है, उसे पाऊँ तो मुँह झुलस दूँ ।

श्रीकंठ-इतनी गरम क्यों होती हो, बात तो कहो ।

आनंदी-क्या कहूँ, यह मेरे भाग्य का फेर है । नहीं तो एक गँवार छोकरा जिसका चपरासीगिरी करने का भी ढंग नहीं, मुझे खड़ाऊँ से मारकर यों न अकड़ता ।

श्रीकंठ-सब साफ-साफ हाल कहो तो मालूम हो, मुझे तो कुछ पता नहीं ।

आनंदी-परसों तुम्हारे लाडले भाई ने मुझसे माँस पकाने को कहा । घी हाँडी मे पाव भर से अधिक न था । वह सब मैंने माँस में डाल दिया । जब खाने बैठा तो कहने लगा, दाल में घी क्यों नहीं ? बस, इसपर मेरे मैके को भला-बुरा कहने लगा । मुझसे न रहा गया, मैंने कहा कि वहाँ इतना घी तो मामूली नौकर खा जाते हैं और किसी को जान भी नहीं पडता । बस, इतनी सी बात पर अन्यायी ने मुझपर खड़ाऊँ फेंककर मारी । यदि हाथ से न रोक लेती तो सिर फट जाता । उसी से पूछो कि मैंने जो कुछ कहा है वह सच है या झूठ ।

श्रीकंठ की आँखें लाल हो गई । बोले-यहाँ तक हो गया । इस छोकरे का यह साहस ।

आनंदी स्त्रियों के स्वभावानुसार रोने लगी क्योंकि आँसू उनकी पलकों पर रहते हैं । श्रीकंठ बड़े धैर्यवान और शांत पुरुष थे । उन्हे कदाचित ही कभी क्रोध आता था, पर स्त्रियों के आँसू पुरुषों की क्रोधाग्नि भड़काने में तेल का काम देते है । रात भर करवटें बदलते रहे । उद्‌विग्नता के कारण पलक तक नहीं झपकी । प्रात:काल अपने बाप के पास जाकर बोले-दादा, अब इस घर में मेरा निर्वाह न होगा ।

इसी तरह की विद्रोहपूर्ण बातें कहने पर श्रीकंठ ने कितनी ही बार अपने कई मित्रों को आड़े हाथों लिया था । परंतु दुर्भाग्य, आज उन्हें स्वयं वही बात अपने मुँह से कहनी पड़ी । दूसरों को उपदेश देना भी कितना साहस है।
बेनीमाधव सिंह घबड़ाकर उठे और बोले-क्यों, क्यों ?

श्रीकंठ-इसलिए कि मुझे भी अपनी मान-प्रतिष्ठा का कुछ विचार है। आपके घर में अब अन्याय और हठ का प्रकोप हो रहा है। जिनको बड़ों का आदर-सम्मान करना चाहिए वे उनके सिर चढ़ते हैं। मैं दूसरे का चाकर ठहरा, घर पर रहता नहीं यहाँ मेरे पीछे स्त्रियों पर खड़ाउँ और जूतों की बौछारें होती है। कड़ी बात तक की चिंता नहीं, कोई एक की दो कह ले, यहाँ तक मैं सह सकता हूँ। किंतु यह कदापि नहीं हो सकता कि मेरे ऊपर लात, घूँसे पड़ें और मैं दम न मारुँ।

बेनीमानव सिंह कुछ जवाब न दे सके। श्रीकंठ सदैव उनका आदर करते थे। उनके ऐसे तेवर देखकर बूढ़े ठाकुर अवाक रह गए। केवल इतना ही बोले-बेटा, तुम बुद्धिमान होकर ऐसी बातें करते हो ? स्त्रियाँ इसी तरह घर का नाश कर देती हैं। उनको बहुत सिर चढ़ाना अच्छा नहीं।

श्रीकंठ-इतना मैं जानता हूँ। आपके आशीर्वाद से ऐसा मूर्ख नहीं हूँ। आप स्वयं जानते हैं कि मेरे ही समझाने-बुझाने से इसी गाँव में कई घर सँभल गए। पर जिस स्त्री की मान प्रतिष्ठा का मैं ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूँ, उस,के साथ ऐसा घोर अन्याय और पशुवत् व्यवहार मुझे असह्य है। आप सच मानिए , मेरे लिए यही कुछ कम नहीं है कि लालबिहारी को कुछ दंड नहीं देता।

अब बेनीमाधव सिंह भी गरमाए। ऐसी बातें और न सुन सके। बोले-लालबिहारी तुम्हारा भाई है, उससे जब कभी भूल हो, उसके कान पकड़ो लेकिन...

श्रीकंठ-लालबिहारी को मैं अपना भाई नहीं समझता।

बेनीमाधव सिंह-स्त्री के पीछे ?

श्रीकंठ-जी नहीं, उसकी क्रूरता और अविवेक के कारण।

दोनों कुछ देर चुप रहे। ठाकुर साहब लड़के का क्रोध शांत करना चाहते थे लेकिन यह नहीं स्वीकार करना चाहते थे कि लालबिहारीने कोई अनुचित काम क्यिा है। इसी बीच में गाँव के और कई सज्जन हुक्का-चिलम के बहाने से वहाँ आ बैठे। कई स्त्रियोंने जब यह सुना कि श्रीकंठ पत्नी के पीछे पिता से लड़ने पर तैयार हैं तो उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। दोनों पक्षों की मधुर वाणियाँ सुनने के लिए उनकी आत्माएँ तलमलाने लगीं। गाँव में कुछ ऐसे कुटिल मनुष्य भी थे जो इस कुल की नीतिपूर्ण गति पर मन-ही-मन जलते थे। वे कहा करते थे, श्रीकंठ अपने बाप से दबता है इसीलिए वह दब्बू है। उसने इतनी विद्या पढ़ी इसलिए वह किताबों का कीड़ा है। बेनीमाधव सिंह उनकी सलाह के बिना कोई काम नहीं करते यह उनकी मूर्खता है। इन महानुभावों की शुभकामनाएँ आज पूरी होती दिखाई दीं। कोई हुक्का पीने के बहाने और कोई लगान की रसीद दिखाने के बहाने आ-आकर बैठ गए। बेनीमाधव सिंह पुराने आदमी थे, इन भावों को ताड़ गए। उन्होंने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी क्यों न हो, इन द्रोहियों को ताली बजाने का अवसर न दूँगा। तुरंत कोमल शब्दों में बोले-अब तो लड़के से अपराध हो गया।

इलाहाबाद का अनुभवरहित झल्लाया हुआ ग्रेजुएट बातों को न समझ सका। उसे डिबेटिंग क्लब में अपनी बात पर अड़ने की आदत थी, इन हथकंडों की उसे क्या खबर! बाप ने जिस मतलब से बात पलटी थी वह उसकी समझ में न आई, बोला–लालबिहारी के साथ अब इस घर में नहीं रह सकता।

बेनीमाधव–बेटा, बद्धिमान लोग मूर्खों की बात पर ध्यान नहीं देते। वह बेसमझ लड़का है। उससे जो भूल हुई है उसे तुम बड़े होकर क्षमा कर दो।

श्रीकंठ– उसकी इस दुष्टता को मैं कदापि नहीं सह सकता, या तो वही घर रहेगा या मैं घर रहूँगा। आपको यदि वह अधिक प्यारा है तो मुझे बिदा कीजिए , मैं अपना भार आप सँभाल लूँगा। बस, यही मेरा अंतिम निश्चय है।

लालबिहारी सिंह दरवाजे की चौखट पर चुपचाप खड़ा बड़े भाई की बातें सुन रहा था। वह उनका बहुत आदर करता था। उसे कभी इतना साहस नहीं हुआ था कि श्रीकंठ के सामने चारपाई पर बैठ जाए, हुक्का पी ले या पान खा ले। बाप का भी वह इतना मान न करता था। श्रीकंठ का भी उसपर हार्दिक स्नेह था। अपने होश में उन्होंने कभी उसे घुड़का तक नहीं था। जब इलाहाबाद से आते तो उसके लिए कोई–न–कोई वस्तु अवश्य लाते। मुग्दर की जोड़ी उन्होंने बनवा दी थी। पिछले साल जब उसने अपने से डयोढे जवान को नागपंचमी के दिन दंगल में पछाड़ दिया तो उन्होंने पुलकित होकर अखाड़े में जाकर उसे गले लगा लिया था। पाँच रुपये के पैसे लुटाए थे। ऐसे भाई के मुँह से आज ऐसी हृदयविदारक बात सुनकर लालबिहारी को बड़ी ग्लानि हुई, वह फूट–फूटकर रोने लगा। इसमें संदेह नहीं कि वह अपने किए पर पछता रहा था। भाई के आने से एक दिन पहले से ही उसकी छाती धड़कती थी कि देखूँ भैया क्या कहते हैं। मैं उनके सम्मुख कैसे जाऊँगा, उनसे कैसे बोलूँगा, मेरी आँखें उनके सामने कैसे उठेगीं। उसने समझा था कि भैया मुझे बुलाकर समझा देंगे। इस आशा के विपरीत आज उसने उन्हें निर्दयता की मूर्ति बने हुए पाया। वह मूर्ख था, परंतु उसका मन कहता था कि भैया मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। यदि श्रीकंठ उसे अकेले में बुलाकर दो–चार कड़ी बातें कह देते, इतना ही नहीं, दो–चार तमाचे भी लगा देते तो कदाचित उसे इतना दु:ख न होता। पर भाई का यह कहना कि अब मैं उसकी सूरत नहीं देखना चाहता, लालबिहारी से न सहा गया। वह रोता हुआ घर में आया। कोठरी में जाकर कपड़े पहने, आँखें पोंछी , जिससे कोई न समझ सके कि रोता था। तब आनंदी के द्वार पर आकर बोला– भाभी , भैया ने निश्चय किया है कि वे मेरे साथ इस घर में न रहेंगे। वे अब मेरा मुँह नहीं देखना चाहते। इसलिए मैं अब जाता हूँ , उन्हें फिर मुँह न दिखाऊँगा । मुझसे जो कुछ अपराध हुआ हो उसे क्षमा करना।

यह कहते–कहते लालबिहारी का गला भर आया।

जिस समय लालबिहारी सिंह सिर झुकाए आनंदी के द्वार पर खड़ा था उसी समय श्रीकंठ सिंह भी आँखें लाल किए बाहर से आये। भाऊ के वहाँ खड़ा देखा तो घृणा से आँखें फेर लीं और कतराकर निकल गए मानो, उसकी परछाईं से भी दूर भागना चाहते थे।

आनंदी ने लालबिहारी की शिकायत तो की थी लेकिन अब मन में पछता रही थी। वह स्वभाव से दयालु थी। उसे इसका तनिक भी अंदेशा न था कि बात इतनी बढ़ जाएगी। वह मन में अपने पति पर झुँझला रही थी कि वे इतने गरम क्यों हो जाते हैं। उस पर यह भय भी लगा रहा था कि कहीं मुझसे इलाहाबाद चलने को कहेंगे तो कैसे क्या करूँगी। इसी बीच जब उसने लालबिहारी को दरवाजे पर खड़े यह कहते सुना कि अब मैं जाता हूँ, मुझसे जो कुछ अपराध हुआ क्षमा करना, तो उसका रहा–सहा क्रोध भी पानी हो गया। वह रोने लगी। मन का मैल धोने के लिए नयनजल से उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है।

श्रीकंठ को देखकर आनंदी ने कहा ,"लाल बाहर खड़े बहुत रो रहे हैं।"

श्रीकंठ बोले, '' तो मैं क्या करूँ ?''

आनंदी बोली, ''भीतर बुला लो । मेरी जीभ में आग लगे। मैंने कहाँ से यह झगड़ा उठाया। ''

श्रीकंठ ने प्रतिवाद किया, ''मैं नहीं बुलाऊँगा।''

आनंदी बोली, ''पछताओगे। उन्हें बहुत ग्लानि हो रही है, ऐसा न हो, कहीं चल दें।''

श्रीकंठ न उठे। इतने में लालबिहारी ने फिर कहा, ''भाभी, भैया से मेरा प्रणाम कह दो। वह मेरा मुँह नहीं देखना चाहते इसलिए मैं भी अपना मुँह उन्हें नहीं दिखाऊँगा।''

लालबिहारी इतना कहकर लौट पड़ा और शीघ्रता से दरवाजे की ओर बढ़ा। अंत में आनंदी कमरे से बाहर निकली और उसका हाथ पकड़ लिया। लालबिहारी ने पीछे फिरकर देखा और आँखों में आंसूभरे बोला, ''मुझे जाने दो, भौजी ?''

आनंदी ने पूछा, ''कहाँ जा रहे हो ?''

लालबिहारी वोला, ''जहाँ कोई मेरा मुँह न देखे। ''

आनंदी बोली, ''मैं न जाने दूँगी।''

लालबिहारी बोला, , ''मैं तुम लोगों के साथ रहने योग्य नहीं हूँ।''

आनंदी बोली, ''तुम्हें मेरी सौगंध, अब एक पग भी आगे न बढ़ाना।''

लालबिहारी ने कहा, ''जब तक मुझे यह मालूम न हो जाए कि भैया का मन मेरी तरफ से साफ हो गया है तब तक मैं इस घर में कदापि न रहूँगा।''

आनंदी बोली, ''मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहती हूँ कि तुम्हारी ओर से मेरे मन में तनिक भी मैल नहीं है।''

अब श्रीकंठ का ह्दय पिघला। उन्होंने बाहर आकर लालबिहारी को गले लगा लिया। दोनों भाई खूब फूट-फूटकर रोए। लालबिहारी ने सिसकते हुए कहा, ''भैया ! अब कभी मत कहना कि मैं तुम्हारा मुँह न देखूँगा। इसके सिवाय आप जो भी दंड देंगे उसे मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा।''

श्रीकंठ ने भर्राये स्वर में कहा, ''लल्लू ! उन बातों को बिल्कुल भूल जाओ। ईश्वर चाहेगा तो ऐसा अवसर फिर न आयेगा।''

बेनीमाधव सिंह बाहर से अन्दर आ रहे थे। दोनों भाइयों को गले मिलते देख आनंद से पुलकित हो उठे और बोले, ''बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ घर सँवार लेती हैँ।''

गाँव में जिसने इस वृतांत को सुना, उसीने इन शब्दों में आनंदी की उदारता को सराहा, ''बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।''

शब्दार्थ--टिप्पण

कीर्तिस्तम्भ यश के प्रमाण **किफायत** बचत **अधिपति** स्वामी, मालिक **घुड़कना** धमकी के स्वर में डाँटना **तालुक्केदार** जमींदार **अंदेशा** आशंका **हार्दिक** दिल से **हजरत** महाशय **पाश्चात्य** पश्चिमी **गुमान** मिथ्याभिमान, घमंड **कुटिल** बुरे स्वभाव का **टीम-टाम** तड़क-भड़क **तिनकना** झल्लाना **बहली** सवारी के काम आनेवाली बैलगाड़ी **मुग्दर** व्यायाम करने का एक साधन **लगान** भूमिकर **वृतांत** घटना का प्रारभ्भ से अंत तक का वर्णन **कदापि** बिलकुल नहीं **हथकंडा** षडयंत्र **शऊर** ढंग,तमीज

मुहावरे

अपनी खिचडी अलग पकाना अलग रहना **आँखे खुलना** सही स्थिति का ज्ञान होना **करवटें बदलना** बेचैन रहना **तालीबजाना** खुश होना **तेवरियों पर बल पड़ना** क्रोधित होना **पानी-पानी होना** लज्जित होना **पिंड छुड़ाना** छुटकारा पाना **लोहू का घूँट पीना** गुस्सा सह लेना **हाथ समेटना** कम खर्च करना **हाथ साफ करना** पीटना

कहावत

हाथी मरा तो भी नौ लाख का-कीमती वस्तु के अनुपयोगी होने पर भी उसका मूल्य बना रहता है।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए:

(1) बेनीमाधव किस गाँव के जमींदार थे ?

(2) श्रीकंठने किस प्रकार शिक्षा-दीक्षा ग्रहण की ?

(3) आनंदी किस प्रकार के परिवार की बेटी थी ?

(4) गाँव के लोगों ने आनंदी को क्या कहकर सराहा ?

(5) लालबिहारी को अपनी भाभी आनंदी से किस बात को लेकर विवाद हो गया था ?

(6) श्रीकंठ ने अपने पिताजी के पास जाकर क्या कहा ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) बेनीमाधव के कितने बेटे थे ? कौन-कौन ?

(2) गाँव के लोग श्रीकंठ का सम्मान क्यों करते थे ?

(3) श्रीकंठने पिताजी से घर छोड़ने की बात क्यों कही ?

(4) श्रीकंठ और लालबिहारी किस प्रकार बिलकुल विपरीत थे ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) श्रीकंठ के निर्णय से लालबिहारी की क्या दशा हुई ?

(2) परिवार को टूटने से किसने बचाया ? कैसे ?

(3) 'बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।' स्पष्ट कीजिए?

(4) आनंदी ने अपने को नए घर के अनुकूल कैसे बनाया ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) ''जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है उसी तरह क्षुधा से बावला व्यक्ति जरा-सी बात पर तुनक जाता है।''

(2) ''स्त्री का बल और साहस , मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति के ही बल और पुरुषत्व पर गर्व होता है।''

5.सही विकल्प चुनकर एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) यह मेरे भाग्य का फेर है। यह कथन किसका है?

(A) श्रीकंठ (B) क्षुधा (C) लालबिहारी (D) भूपसिंह

(2) बुद्धिमान लोग मूर्खोंकी बात पर ध्यान नहीं देते । यह वाक्य किसने कहा ?

(A) श्रीकंठ (B) लालबिहारी (C) बेनीमाधवी (D) आनंदी

(3) ....से बावला मनुष्य जरा-सी बात पर तिनक जाता है।

(A) क्रोध (B) क्षुधा (C) कर्ज (D) चिंता

(4) मन का मैल धोने के लिए...............से उपयुक्त कोई वस्तु नहीं है?

(A) शुद्धजल (B) शीतल जल (C) नयन जल (D) गंगा जल

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

संतान, निर्बल, परिश्रम, सहज, प्रतिष्ठा, क्रूर, अवसर, घृणा, ललना, स्नेह

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

सम्मान, दुर्भाग्य, गृहस्थ, बाहर, यश, गाँव, उदार, स्वीकार, मूर्ख, नीति, हर्ष, शत्रु, आशा, आदर, क्षमा

8. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

हाथ समेटना, आँखे खुलना, मुँह लगना, करवटें बदलना

9. निम्नलिखित वाक्यों को शद्ध रूप में लिखिए :

(1) ठाकुर साहब का दो बेटे थे ।

(2) आपका आशीर्वाद से में ऐसा मूर्ख नहीं हूँ ।

(3) बड़े घर की बेटी पाठ का साहित्यिक विद्या कहानी है ।

विद्यार्थी -प्रवृत्ति

- 'जहाँ चाह, वहाँ राह' का दस पंक्तियों में विचार-विस्तार कीजिए ।

शिक्षक - प्रवृत्ति

- ऊषा प्रियंवदा द्वारा लिखित 'वापसी' कहानी बच्चों को सुनाएँ ।

•

3	नीति के दोहे

वृंद

(जन्मः सन् 1643 ई ., मृत्यु : सन्, 1723 ई. :)

कवि वृंद का पूरा नाम था–- वृंदावन- उनके पूर्वज बीकानेर से मेडते (दोनों राजस्थान में) में आकर बसे थे, वहीं पर इनका जन्म हुआ था । काशी में रहकर उन्होंने व्याकरण, साहित्य, वेदान्त दर्शन तथा गणित का अध्ययन किया । वे राजस्थान में जोधपुर किशनगढ बंगाल और उड़ीसा के शासकों के राज्याश्रय में रहे ।

इनकी रचनाओं में अलंकार का प्राचुर्य है, कल्पना की उड़ान कम है । नीति श्रृंगार और भक्तिवार्ता इनकी रचनाओं की मुख्य आधारभूमि है । सरलता और सरसता के साथ ही वाक्य विदग्धता इनकी रचनाओं की प्रमुख विशेषताएँ है। इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं–- भाव पंचाशिका, यमक सतसई, नयनपचीसी एवं श्रृंगार शिक्षा यहाँ संकलित दोहे लोक व्यवहार की दृष्टि से उपयोगी होने के साथ ही जीवन जगत के पथदर्शक हैं ।

कठिन कलाहू आइ है, करत करत अभ्यास ।
नट ज्यों चालत बरत पर, साधे बरस छः मास ॥ 1॥
अति परिचय तैं होत है, अरुचि अनादर भाय ।
मलयागिरि की भीलनी, चंदन देत जलाय ॥ 2॥
पीछै कारज कीजिए, पहिलै जतन बिचार ।
बड़े कहत हैं बांधिये, पानी पहिले पार ॥ 3 ॥
कहा बड़े छोटे कहा जहाँ हित तहाँ चित लागि ।
हरि भोजन किय बिदुर घर दुरजोधन को त्यागि ॥ 4 ॥
ज्यौं सुबरन तैं होत है, भूषन भाँत अनेक ।
त्यौं सु-बरन के अरथ बहु सबद होत है एक ॥ 5॥

शब्दार्थ-टिप्पण

बरत रस्सी **सु-बरन** स्वर्ण, अच्छे शब्द, सुंदर रंग **जतन** यत्न, प्रयत्न

मुहावरा

बाँधिये पानी पहिले पार -पानी आने से पहले पाल बाँधना संकट आने से पहले ही उसके निराकरण के उपाय करना ।

स्वाध्याय

1. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) कठिन काम कैसे सिद्ध होते हैं ?

(2) अति परिचय से क्या हानि होती है ?

(3) दुर्योधन- विदुर के दृष्टांत से वृंद क्या कहना चाहते हैं ?

2. सविस्तार उत्तर दीजिए :

(1) सुबरन के अनेकार्थ को उदाहरण देकर समझाइए ।

(2) कार्य और उपाय के बारे में कवि वृंद ने क्या कहा है ?

3. भाव समझाइए :

(1) मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जलाय ।

(2) बड़े कहत हैं बाँधिये पानी पहिले पार ।

4. दोहे में प्रयुक्त निम्नलिखित तद्‌भव शब्दों के तत्समरूप लिखिए :

जतन, अरथ, सबद, भूषन, दुरजोधन, परिचें

5. सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(1) ....महाभारत का पात्र नहीं है ।

(A) दुर्योधन (B) भीष्म (C) लक्ष्मण (D) युधिष्ठिर

(2) बरत का अर्थ है .... ।

(A) व्रत (B) बुनना (C) व्यवहार (D) रस्सी

(3) कठिन कलाहू आइ है करत-करत अभ्यास में कौन-सा अलंकार है ?

(A) अनुप्रास (B) उपमा (C) रुपक (D) श्लेष

(4) भीलनी का पुल्लिंग ....है ।

(A) भीम (B) भील (C) भीती (D) भीष्म

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रहीम के नीति पर के दोहे ढूँढ़कर पढ़िए ।
- नीति परक अन्य रचनाएँ संग्रहित कीजिए ।
- विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में ऐसे दोहों का गान कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- वर्ग में ऐसे दोहों का सस्वर गान करवाइए ।
- विद्यार्थियों को पुस्तकालय में ले जाकर अन्य कवियों की नीतिपरक रचनाएँ खोजने में सहायक हों ।

•

4 तर्क और विश्वास

बालकृष्ण भट्ट

(जन्म : सन 1844 ई निधन : सन 1914 ई)

पं. बालकृष्ण भट्ट का जन्म इलहाबाद- उत्तरप्रदेश में हुआ था । पिता बड़े व्यापारी थे, पर भट्टजी का मन पैतृक व्यवसाय में नहीं लगा, उन्होंने अपना पूरा जीवन साहित्य सेवा में अर्पित कर दिया। भारतेन्दु युग के साहित्यकारों में आप महत्वपूर्ण निबंधकार और पत्रकार रहे हैं । आत्मपरकता और व्यक्ति व्यंजकता उनके निबंधों की महत्वपूर्ण पहचान है। आलोचक उन्हें हिन्दी का एडिसन मानते हैं। आपने 'हिन्दी प्रदीप' नामक मासिक पत्रिका का संपादन कार्य लगातार बत्तीस वर्षों तक किया।

आपके निबंधों का संचयन 'भट्ट निबंधावली' के नाम से प्रकाशित है। 'नूतन ब्रह्मचारी', तथा सौ अनजान एक सुजान आपके मुख्य उपन्यास हैं। 'दमयंती स्वयंवर', 'चंद्रसेन', 'शिशुपाल वध', तथा 'रेल का विकट खेल', आपके महत्वपूर्ण नाटक हैं। आपने संस्कृत और बंगला भाषा से अनुवाद कार्य भी किया है। 'हिन्दी शब्द सागर' के सम्पादन में भी आपने अपना सहयोग दिया है।

प्रस्तुत निबंध में निबंधकार ने तर्क और विश्वास को संसार की दो अद्भूत शक्तियों के रूप में चित्रित किया है। पर मनुष्य उसका प्रयोग विवेक से करें तब। सबके तर्क एक समान नहीं होते यह भिन्नता ही विविध बाद या सम्प्रदाय की जन्मदात्री है। एक और प्रकार के लोग हैं जो सच्ची नीयत से विश्वास के पोषण में तत्पर और सत्य के अन्वेषण में उद्यत हैं ; पर सच तो यह है कि विश्वास और तर्क दोनों एक दूसरे के इतना विरुद्ध हैं कि तर्क विश्वास के लिए कुलाढ़ा है। विश्वास को जब तक चित्त में स्थान न देंगे , तर्क की शृंखला कभी दूर होगी ही नहीं।

तर्क और विश्वास दोनों संसार के चलाने की ऐसी अद्भुत शक्तियाँ हैं कि जिनके न रहने से मनुष्य के मनुष्यत्व में अन्तर पड़ जाता है। जब तक आदमी का होशहवास दुरुस्त है, तब तक तर्क और विश्वास दोनों भरपूर काम देते हैं। विक्षिप्त या पागल में ये दोनों रहते तो हैं ; परन्तु इनका प्रयोग यथावत पागल मनुष्य नहीं कर सकता।

अब इन दोनों के यथावत काम देने पर विचार होता है कि इन दोनों का आपस में क्या सम्बन्ध है। कर्म-इन्द्रियाँ अर्थात् हाथ-पाँव आदि के द्वारा इनके सम्बन्ध का ज्ञान किसी तरह हो ही नहीं सकता, क्योंकि इनके सम्बन्धका ज्ञान-स्थल इन्द्रियों से कोई सरोकार नहीं रखता। अब रही ज्ञान-इन्द्रियाँ, उनमें तर्क बुद्धि का धर्म है और तर्क अहंकार की विविध शक्तियों में एक शक्ति है। जब किसी स्थूल वा सूक्ष्म पदार्थ का ज्ञान, कर्म या ज्ञान-इन्द्रियों से मन के द्वारा अहंकार होता है, तब बुद्धि अपनी तर्क शक्ति से निश्चय करती है कि यह ज्ञान वास्तव में सत्य है या झूठ। सच-झूठ के निश्चय के उपरान्त अहंकार उस पर विश्वास लाता है। इससे प्रकट हुआ, तर्क और विश्वास में सेवक स्वामी का-सा सम्बन्ध है।

अब प्रश्न उठ सकता है कि जब दोनों में इस प्रकार का सम्बन्ध है, तो संसार के मनुष्यों के तर्क और विश्वास में क्यों इस तरह का अन्तराय है, उचित था कि सम्पूर्ण मनुष्यमात्र का एक-सा विश्वास होता। इसका सुगम उत्तर यह है जिसे हर एक मनुष्य थोड़े ही परिश्रम में जान सकते है ; पक्षपात छोड़ वादी के तर्क करने के तरीके को देखें और तब उससे अपना अनुमान निकालें। ऐसा करने से जल्द प्रकट हो जायगा कि संसार के सब मनुष्य क्यों एक विश्वास के नहीं होते।

कारण इसका यह है कि सब लोग एक ही तरह का तर्क नहीं करते बल्कि लोगों के तर्क करने का प्रकार भिन्न-भिन्न है। एक प्रकार के तर्क करनेवाले वे है, जो तर्क करने में ऐसे आलसी होते हैं कि अपनी बुद्धि को थोड़ा भी परिश्रम नहीं देना चाहते, अपने गुरु या बड़े लोगों के किये हुए तर्क पर जल्द विश्वास कर लेते है। ऐसे मनुष्यों की तर्क करनेकी शक्ति प्रतिदिन कुण्ठित होती जाती है। ऐसों का विश्वास नही रहेगा, जैसा उनके बाप-दादों के समय से चला आता है। बाप-दादों का विश्वास चाहे कैसा ही पोच हो ; पर वे लकीर के फकीर बने ही रहेंगे। ऐसे लोगों से यदि पूछा जाय कि तुम अपनी बुद्धि को क्यों नहीं काम में लाते, तो ये पट से यही जवाब देंगे कि क्या हमारे बाप-दादे मूर्ख और नासमझ थे, क्या हम उनसे अधिक बुद्धिमान हैं। हिन्दुस्तान में तो ऐसे लोगों की इतनी अधिकाई है कि 100 में 90 से कम न होंगे ; किन्तु थोडे या बहुत ऐसे मनुष्य तो हर एक जाति और देश में पाये जाते है। इसीलिये संसार में इतने तरह के अलग-अलग मत है और एक-एक मत में अलग-अलग बहुत से जुदे-जुदे सम्प्रदाय हैं, जिन्हें बड़े-बड़े लोगों ने अपना-अपना मतलब गाँठने को या अपने देश की भलाई या उन्नति के लिये जुदे-जुदे देशों में फेलाये और अब तक फैलाते जाते हैं। यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी के इस आजादगी के जमाने में अँगरेजी शिक्षा के प्रभाव से अब उन भिन्न-भिन्न मत, धर्म या सम्प्रदायों की कोई आवश्यकता नहीं है।

दूसरे प्रकार के पुरुष वे हैं, जो अपने रोजमर्रा के काम में ऐसी तीखी बुद्धि रखते हैं और तर्क को इतना काम में लाते हैं कि बहुत कम लोग चालाकी बुद्धिमान और न्यायपूर्वक विचार में उनकी बराबरी कर सकते हैं, परन्तु जब किसी ऐसे विश्वास को तर्क के द्वारा शुद्ध करने की आवश्यकता पड़ती है, तर्क के बदले क्रोध करने लगते हैं, यहाँ तक कि न अपनी बात कहते हैं, न दूसरों की सुनते हैं । क्रोध में इतना आग-बबूला हो जाते हैं कि मानों उठाकर निगल जायेंगे और यही समझते हैं कि यह हमारा गुस्सा ही तर्क का पूरा काम दे देगा और हमारे विश्वास की पुष्टता हो गई; पर ऐसे काम के लिये बड़ा चालाक आदमी चाहिये और इस तरह के चालाक बहुत कम पाये जाते हैं। ऐसे लोगों से समाज का काम तो भरपूर निकल सकता है **;** परन्तु सत्य का पोषण नहीं हो सकता, इसीलिए कि उनका विश्वास भी गुस्से की रंगत पकड़ लेता है।

एक प्रकार के पुरुष और भी हैं, जो सच्ची नीयत से विश्वास के पोषण में तत्पर हैं और सत्य के अन्वेषण में भी उद्यत है **;** किन्तु बुद्धि-वैभव में इतने पूर्ण नहीं है कि तर्क के द्वारा अपने विश्वास को सत्य के पास तक पहुँचा सकें। तर्क तो करते हैं, किन्तु उनका तर्क एकदेशीय है, इसलिये सत्य का होना पूरा निश्चय नहीं कर सकते और बिना पूरा निश्चय के जो विश्वास हो वह कच्चा विश्वास है, इत्यादि। कई प्रकार के तर्क करनेवाले यहाँ दिखलाये गये ; पर सच तो यह है कि विश्वास और तर्क दोनों एक दूसरे के इतना विरुद्ध है कि तर्क विश्वास के लिये कुलाढ़ा है। विश्वास को जब तक चित्त में स्थान न दोगे , तर्क की श्रृंखला कभी टूटे गी ही नहीं।

शब्दार्थ-टिप्पण

विक्षिप्त बैचेन **सरोकार** संबंध, मतलब, **अंतराय** दुराव, अंतर, **,कुण्ठित** कुंद , **आजादगी** आजादी, **जुदा** अलग , **सुगम** आसान, **दुरुस्त** ठीक, **वादी** पक्षवाला, **प्रतिवादी** विपक्षी, **कुलाढा** कुल्हाडी

मुहावरे

लकीर का फकीर होना बने बनाये ढर्रे पर बिना सोचे चलना **आग बबूला होना** गुस्सा होना **रंगत पकड़ना** उसके जैसा होना

स्वाध्याय

1. **एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए:**

(1) किन शक्तियों के अभाव से मनुष्य के मनुषत्व में अंतर पड़ सकता है ?
(2) तर्क किन इंद्रियो का धर्म है ?
(3) कैसा व्यक्ति तर्क और विश्वास का उपयोग नहीं कर सकता ?
(4) लकीर के फकीर लोग किनका विश्वास कर लेते हैं ?
(5) लेखक ने कच्चा विश्वास किसे कहा है ?
(6) तर्क की श्रृंखला कब तक नहीं टूटेगी ?

2. **दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) संसार में सम्प्रदायों की भिन्नता का क्या कारण है ?
(2)बुद्धि किसी ज्ञान के सही-गलत का निश्चय कैसे करती है ?
(3) लेखक ने तर्क को विश्वास का कुलाढ़ा क्यों कहा है ?
(4) तर्क और विश्वास के बीच किस प्रकार का संबंध है ?

3. **सविस्तार उत्तर कीजिए :**

(1) तर्क की दृष्टि से लेखक ने मनुष्यों के कौन-कौन से प्रकार बताए हैं ?
(2) सत्य होने का पूरा निश्चय कब होता है ?
(3) लकीर के फकीर लोग तर्क न करने के क्या-क्या कारण देते हैं ?
(4) संसार के मनुष्यों के तर्को में अंतर के क्या कारण हैं ?

4. **आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) तर्क अहंकार की विविध शक्तियों में एक शक्ति है।
(2) हमारा गुस्सा ही तर्क का पूरा काम दे देगा और विश्वास की पुष्टता हो गई।
(3) तर्क और विश्वास का संबंध-सेवक स्वामी का है।

5. **विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :**
सुगम, न्याय, बुद्धिमान, कर्मठ, पवित्र, वादी

6. समानार्थी शब्द दीजिए :
बुद्धिमान, अहंकार, सच, गुस्सा

7. वर्तनी शद्ध कीजिए :
श्रृंखला, पुरुष, प्रतिवादी, अन्वेशण

विद्यार्थी - प्रवृत्ति

- बालकृष्ण भट्ट का कोई एक निबंध पढ़कर उसका सार लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को निबंध की विशेषताएँ एवं प्रकार समझाइए।

•

5 भूतल को स्वर्ग बनाने आया

मैथिलीशरण गुप्त

(जन्मः सन् 1886 ई.; निधन- सन् 1964 ई.)

द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि और हिन्दी के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी का जन्म चिरगाँव, जिल्ला झाँसी, उत्तरप्रदेश में हुआ था। इनके पिता भी कवि थे। इसीलिए बचपन से ही इनकी रुचि काव्य-सर्जन में थी इस काव्यरुचि को रामभक्ति ने पल्लवित किया और आचार्य महावीरप्रसाद ने प्रोत्साहित किया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से आपने कविताएँ लिखना शुरु किया और खड़ीबोली के प्रसिद्ध कवि के रूप में ख्याति प्राप्त की। आधुनिक युग के सफल प्रबन्धकार एवं कविता में खड़ीबोली के प्रतिष्ठाता के रूप में गुप्तजी का योगदान अमूल्य है। इन्होंने भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों को आधार बनाकर राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत कविता का सृजन किया। भारतीय संस्कृति के प्रति अन्नय श्रद्धा और गांधीवादी मानवतावाद में अटूट आस्था इनके काव्य की विशेषता हैं।

अंग्रेजी शासन के खिलाफ भारतीय जनता को प्रेरित करने में इनका विशेष योगदान रहा-'भारत-भारती', इसका प्रमाण हे। नारी के प्रति सह्दयता ने गुप्तजी को हिन्दी साहित्य और समाज की उपेक्षित नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रणकर उन्हें लोकप्रिय बनाया- उर्मिला, यशोधरा, विष्णुप्रिया, कैकेयी आदि इसके प्रमाण हैं ।

मैथिलीशरण गुप्तजी की कुछ प्रमुख रचनाओं में 'रंग में भंग', 'भारत-भारती,' 'जयद्रथ-वध', 'प्लासी का युद्ध', 'सिद्धराज' , 'जयभारत' , द्वापर , कुणाल, यशोधरा, पंचवटी, काबा-कर्बला, विष्णुप्रिया, नहुष, और साकेत हैं। इसके अतिरिक्त आपने 'तिलोत्तमा'और 'चरणदास' नामक दो नाटक भी लिखे हैं।

भारतीय संस्कृति के अमरगायक होने के कारण इन्हें राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ। ये राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे और राष्ट्र कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। इन्हें पद्‌मभूषण की उपाधि से भी सम्मानित किया गया।

प्रस्तुत काव्यांश गुप्तजी के महाकाव्य 'साकेत' के आठवें सर्ग से लिया गया है। राम-सीता संवाद के माध्यम से श्रीराम इस पृथ्वी पर अपने आने का मूल कारण बताते हैं। वे बताते हैं कि मर्यादा की रक्षा करने हेतु, भक्तों की श्रद्धा की रक्षा हेतु तथा इस पृथ्वी को स्वर्ग-सा बनाने के लिए ही मैं आया हूँ। कविता की भाषा बड़ी ही सरल सीधी-सादी और सहज है।

"तुम इसी भाव से भरे यहाँ आए हो ?
यह घनश्याम-तनु धरे हरे, छाए हो ?
तो बरसो, सरसै, रहे न भूमि जली-सी,
मैं पापपुंज पर टूट पडूँ बिजली-सी।"

हाँ , इसी भाव से भरा यहाँ आया मैं,
कुछ देने ही के लिए प्रिये, लाया मैं।
निज रक्षा का अधिकार, रहे जन-जन को,
सबकी सुविधा का भार, किंतु शासन को।
मैं आर्यों का आदर्श, बताने आया,
जन सम्मुख धन को, तुच्छ जताने आया।

सुख-शांति हेतु मैं क्रांति मचाने आया,
विश्वासी का विश्वास बचाने आया।
मैं आया उनके हेतु , कि जो तापित हैं,
जो विवश, विकल, बलहीन, दीन, शापित हैं।
हो जाएँ अभय वे जिन्हें कि भय भासित हैं ,
जो कौणपकुल से मूक सदृश्य शासित हैं।
मैं आया, जिसमें बनी रहे मर्यादा,

बच जाए प्रलय से, मिटे न जीवन सादा।
सुख देने आया, दुख झेलने आया,
मैं मनुष्यत्व का नाट्य खेलने आया ।
मैं यहाँ एक अवलंब छोड़ने आया ,
गढ़ने आया हूँ , नहीं तोड़ने आया।

भव में नववैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

शब्दार्थ-टिप्पण

पापपुंज पाप का समूह **निज** अपना **सम्मुख** सामने **विकल** परेशान, व्याकुल **भूतल** धरती **कौणप** राक्षस **अवलंब** सहारा **मूक** जो बोल न सके, गूंगा **सदृश्य** समान

अभ्यास

*** एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए:**

(1) कवि के राम किसको स्वर्ग बनाने आए है ?
(2) जन-जीवन में सुख-शांति किस प्रकार प्राप्त होगी ?
(3) गुप्तजी का जन्म कहाँ पर हुआ था ?
(4) कवि के राम तोड़ने नहीं बल्कि क्या करने आए हैं ?
(5) गुप्तजी को कौन-कौन से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) जन-जन के पास क्या अधिकार रहना चाहिए ?
(2) साकेत के अलावा गुप्तजी की अन्य दो रचनाओं के नाम लिखिए।
(3)' मैं पापपुंज पर टूट पड़ूँ बिजली-सी ' कौन। किससे कहता है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) 'मैं मनुष्यत्व का नाट्य खेलने आया ' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।
(2) नर को ईश्वरता किस प्रकार प्राप्त होगी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि की दृष्टि में राम का आदर्श क्या है ?
(2) 'इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया 'का आशय स्पष्ट कीजिए ।
(3) कवि की कल्पना के रामराज्य की क्या विशेषता होगी ?

4. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(1) 'जन सम्मुख धन को, तुच्छ जताने आया।'
(2) 'गढ़ने आया हूँ , नहीं तोड़ने आया।'

5. निम्मिलिखित के विलोम शब्द लिखिए :

सुविधा, प्रत्यक्ष, भय, स्वर्ग, संयोग

6. प्रत्येक शब्द के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पुष्प, नीर, सदैव, विवश, अवलंब

7. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) मैं पापपुंज पर टूट पड़ूँ .... सी ।

(A) विद्युत (B) बिजली (C)चपला (D) दामिनी

(2) संपत्ति शब्द का समानार्थी शब्द चुनकर लिखें ।

(A) सुमति (B) संगतू (C) विपत्ति (D) धन

(3) मैं आया उनके हेतु, कि जो .... हैं ।

(A) दीन (B) तापित (C) मजबूर (D) दु:खी

(4) ....यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया ।

(A) संदेश (B) सूचना (C) खबर (D) समाचार

(5) जन सम्मुख ....को तुच्छ जताने आया ।

(A) धन (B) अर्थ (C) संपत्ति (D) भंडार

योग्यता -विस्तार

विद्यार्थी -प्रवृत्ति

- 'धरती को स्वर्ग कैसे बनाया जा सकता है ' इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए ।
- पाठयक्रम में आदि हुए महाकाव्यांश के आगे-पीछे का संदर्भ ज्ञात करें ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को ' राष्ट्रकवि' की संकल्पना समझाने का प्रयत्न करें ।
- ' साकेत 'महाकाव्य का संक्षेप में कथानक बताते हुए इसकी विशेषता का उल्लेख करें।

•

6 दिलबहादुर दाज्यू

फणीश्वरनाथ रेणु

(जन्म: सन् 1928 ई. ; निधन : सन् 1977 ई.)

प्रमुख आँचलिक कथाकार रेणुजी का जन्म बिहार के पूर्णिया जिले के औराही-हिंगना नामक गाँव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में और उच्च शिक्षा वाराणसी में हुई। इन्होंने-भारतीय स्वाधीनता और नेपाल के राजाशाही विरोधी स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लिया था। कुछ समय तक आकाशवाणी पटना में कार्य किया। लोकनायक जयप्रकाशजी के जन आंदोलन में भी वे सक्रिय रहे। भारत-सरकार ने उन्हें **'पद्मश्री'** से सम्मानित किया था। वे जनता के बड़े पक्षधर थे इसलिए सरकार की जनविरोधी गतिविधियों के कारण सरकार की ओर से प्राप्त **'पद्मश्री'**की उपाधि उन्होंने लौटा दी थी ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में रेणुजी खासतौर से आंचलिक उपन्यासकार और नई कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। रेणुजी ने भारतीय ग्राम जीवन को उसकी समग्रता में आलेखित करने का सन्निष्ठ प्रयास किया है। उनके कथा साहित्य में लोक-जीवन और लोक संस्कृति का लोकभाषा के जरिये बड़ा ही सटीक एवं अर्थपूर्ण चित्रण हुआ है। मैला आँचल तथा परती-परिकथा उनके प्रमुख उपन्यास हैं। ठुमरी, एक आदमी रात्रि की महक, अग्निखोर, तथा एक श्रावणी दोपहरी की धूप इनके कहानी संग्रह हैं। ऋणजल-धनजल, नेपाली क्रांति कथा तथा समय की शिला पर इनके रिपोर्ताज संग्रह हैं। इनकी प्रसिद्ध कहानी **'तीसरी कसम'**और **'मैला आँचल'** उपन्यास पर फिल्म और टी.वी. धारावाहिकों का निर्माण हो चुका है। प्रयोग, परम्परा और आधुनिकता का सार्थक समन्वय रेणु की सबसे बड़ी विशेषता है।

प्रस्तुत संस्मरणात्मक लेख में लेखक ने 1942 के जन आंदोलन के अनुभवों के आधार पर एक नेपाली युवक का परिचय दिया है। जो अपने एक परिचित से हिन्दुस्तान और पलटन की नौकरी की तारीफ सुनकर, रुपये कमाने अपने गाँव से निकला है। अपनी सरलता के चलते वह सिपाहियों के हत्थे चढ़कर जेल पहुँच जाता है। अन्याय या अत्याचार के खिलाफ वह आपे से बाहर हो जाता है। जेल में बंद स्वातंत्र्य सेनानियों को पुलिस बिना कारण पीटती है। तब दिलबहादुर पुलिस को ही पीट देता है और बाकी कैदियों को मार से बचा लेता है। वह लेखक से प्रश्न करता है कि ये सुराज क्या है ? संयोग से 1947 के नेपाल के मजदूर आंदोलन में पकड़े जाने और पूर्णिया जेल के उसी वोर्ड में आने पर उन्हें दिलबहादुर का पुन : स्मरण हो आता है।

''अभी उस दिन फिर दिलबहादुर की याद आ गयी। आँखों के आगे उसकी सूरत हँस गयी। और दिलबहादुर की 'नेपाली हँसी'।

जिस दिन उसको पहली बार देखा-जैसी मुस्कुराहट उसके ओंठों पर थी, वही सब दिन बनी रही।

1942 के जन-आंदोलन के समय की बात है। दिन भर में दर्जनों बार जेल का लौह कपाट झनझनाकर खुलता-गिरोह के गिरोह घायल लोग अंदर दाखिल होते। सुबह का आया हुआ आदम शाम तक पुराना हो जाता। हर गिरोह के साथ ताजा खबर-नये लोग । यह रोज की बात थी, फिर भी लोहे के फाटक के झनझनाते ही जेल के सभी प्राणियों की निगाह उधर मुड़ जाती। नारे लगते, 'हो-हुल्लड़' भी मच जाता कभी-कभी। आगन्तुक दल के घायलों की मरहम-पट्टी होती, उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया जाता। इसी तरह के एक झुण्ड में एक दिन दिलबहादुर को दर्शन हुआ। सबसे पहले उसी पर आँखें गयीं, मानो वह उस गिरोह का दसवाँ या पन्द्रहवाँ व्यक्ति नहीं, पहला व्यक्ति हो ! खाकी हाफ-पैंट,'कैला ' (गोरा नहीं, चरका रंग का) रंग, बगैर भौंहें और पपनियों वाली कौड़ी जैसी आँखें और ओठों पर 'नेपाली हँसी' ! रामलीला में ' मुखड़ा' के मुँह पर जैसी अर्थ-भाव-हीन मुस्कुराहट रहती है-वैसी ही हँसी !

भोटिया, पहाड़िया, मोरंगिया, नेपलिया, परबतिया, किरवा और न जाने किन-किन नामों से उसे लोग पुकारते-वह हमेशा की तरह मुस्कुराकर जवाब देता या टाल देता। एकदम लापरवाह ! लेकिन, 'भूत' कहने से वह चिढ़कर 'अगिया बैताल' हो जाता था। वह कब बिगड़ता है, गुस्सा होने पर उसकी मुद्रा और मुखाकृति कैसी होती है-यह समझना बड़ा कठिन काम है। प्लास्टर की तरह चेहरा चिपटा है-कुछ समझा भी जाये तो कैसे ? इसलिए कई बार लोगों के 'कपाल' पर उसकी थाली ने दूज के चाँद की तरह दाग जड़ दिये थे। वह अचानक टूट पड़ता था-जंगली बिल्लियों की तरह। उछल-उछलकर वह हमले पर हमले करता जाता और मुँह से ' फियूँ-फियूँ या छिउँ-छिउँ !' आवाज निकलता। खौफनाक आवाज ! उसके तेज नाखून जहरीले थे। मेरे एक मित्र को पाँच महीने तक मरहम-पट्टी करवानी पड़ी थी !

धीरे-धीरे ऐसा हुआ कि दिलबहादुर को लोगों ने 'बायकाट' जैसा कर दिया। 'तरकारी में कीड़ा है, इसलिए तरकारी बायकाट किया जाय' की तरह। जेल-कमेटी में कोई 'प्रस्ताव-उरस्ताव' तो पास नहीं हुआ था-लेकिन यह सभी चाहते थे कि दिलबहादुर से कोई बातें नहीं करे। दिलबहादुर पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। दोपहर को जब हम, सोये होते या तास खेलते रहते तो वह वार्ड से बाहर पेड़ के नीचे बैठकर आसमान की ओर एकटक निहारता। एक बार मैंने देखा कि पेड़ पर बैठकर चहकती हुई चिड़िया को वह मुँह चिढ़ा रहा है। चिड़िया बोलती-कूँई-कू-कू-कूँई! और दिलबहादुर अपनी भोंडी आवाज में जवाब देता-हू-हूं-हू-हू!'```` मुझे उसकी इस हरकत को गौर से देखते देखकर पास खड़े वार्डर साहब ने कहा था-''ससुर पगला गया है!''

''हूँ! पगला गया है!`` बात करना नहीं जानते ?'' -न जाने क्यों, मुझे ऐसा लगा कि वार्डर ने मुझे ही गालियाँ दीं।``` दूसरा कोई होता तो उस दिन फिर 'पगली घंटी' बजकर ही रहती!

और जिस दिन किसी वजह से पगली घंटी बजी !

हजारों-हजार बागियों को एक जगह रखने का मतलब ही है- महीने में एक-दो बार 'पगली घंटी'! जेल-अधिकारियों की तरह, हम भी इसके लिए पहले से ही तैयार रहते थे।

''टू-टू टू-टू !!'' पहले जेल के अन्दर से सीटी बजती है।

''ढन-ढन, ढनांग-ढनांग'' फिर बाहर की घण्टी घनघनाती है।

''खच्-खटाक्!''```जेल का लौह-कपाट झनझनाया!

'रे-ऐ-ठ-,बो-ओ-ठन्!'

'किक-मा-र्च !!'-कर्कश कंठ की आवाज!

-फट्-फट्, धड़-धड़ ````! एक हाथ में राइफल और दूसरे हाथ में बेंत लेकर सिपाही लोग दौड़े।

`` एक-एक कर सभी वार्ड के फाटकों को पहले ही बन्द कर दिया गया है। प्रत्येक वार्ड की खिड़की पर बन्दूक ताने एक सिपाही खड़ा है। ````खड़-खड़ाक ````बारी-बारी से वार्ड के फाटक खुलते हैं, सिपाही लोग घुसकर मारते हैं। चीख, कराह, आह और नारों के साथ ऑफिसरों की भद्दी-अश्लील गालियाँ दूसरे वार्डों तक पहुँचती। दिलबहादुर मेरे ही वार्ड में रहता था। हम सभी अपने कम्बलों पर गुरुकुल के विद्यार्थियों की तरह,' सन्ध्यावंदन' की मुद्रा में-पंक्तियों में बैठे थे। बहुतों के चेहरे बन रहे हैं-बिगड़ रहे हैं। मेरी बगल में एक वृद्ध सज्जन थे, उन्हें मैंने बेवजह पचासों बार अपनी नाक मलते देखा। और मैं दिलबहादुर पर नजर गड़ाये बैठा था-मानो उसका चेहरा ताकत का खजाना हो ! उसके चेहरे पर वही मुस्कुराहट थी। वह कभी-कभी उठकर इधर-उधर टहलना चाहता, लेकिन एक ही साथ सबों की हल्की डाँट सुनकर बैठ जाता-''ऐ ! बहादुर ! सिस ! दिलबहादुर का मुझसे हमेशा अच्छा ही रिश्ता रहा था। इसलिए मैंने उसे अपने पास बुला लिया। उसने 'फिक' से मुस्कुराकर पूछा- ''के हुन्छ ?' क्या होगा ?

मैंने इशारे से कहा : ''मारेगा!''

''मारेगा तो हम पनि (भी) मारेगा !!'' -दिलबहादुर ने बहुत सरल ढंग से जवाब दिया।

'' उसे समझाइये नहीं तो मुफ्त में जान``` !'' कहनेवाले की बात पूरी भी नहीं हो पायी थी कि हमारा फाटक झनझना उठा-कच्-खटाक् !!

मुझे याद है, मैंने फिर भी अंतिम चेष्टा की थी -''दिलबहादुर दाज्यू, एस्तो न गर!''(दिलबहादुर, भाई, ऐसा मत करो !)

``` लेकिन मारपीट शुरु हो चुकी थी। फिर बेतों की आवाज, आह, कराह, चीख-पुकार, नारे और ऑफिसरों की भद्दी-अश्लील गालियाँ ```!

'फोंय-फोंय, छिऊँ-छिऊँ !!' यह क्या ? ```दिलबहादुर लड़ रहा है ?

या तो मार-पीट के लय में कोई साज बेसुरा बज गया। अचानक गति रुक गइ!```सबों की निगाह दिलबहादुर पर थी। वह एक सिपाही को दबोचकर उसकी छाती पर बैठा मुँह से -'फोंय-फोंय, छियूँ-छियूँ ' आवाज निकाल रहा था। मैं कह सकता
```

हूँ कि वह उसकी **'अट्टहास'** की मुद्रा थी। महाभारत में दु:शासन की छाती पर बैठकर रक्त पीते हुए भीम की जैसी तस्वीर है-वैसा ही दृश्य !

``सारे वार्ड के कैदियों के हिस्से की मार अकेला ही खाकर, स्ट्रेचर पर लेटकर मुस्कुराता हुआ दिलबहादुर अस्पताल में दाखिल हुआ।

दिलबहादुर से मैं 'खास कुर' (खास भाषा नेपाली) में बातें करता, इसलिए उसे जब कुछ पूछना या कहना होता तो मेरे पास आ जाता। दोपहर को जब हम तास खेलते रहते तो वह बगल में बैठकर, कटी हुई पत्तियों को बिखेर देता और बीच-बीच में फिक् से हँसकर कहता-'थीरी सपेड नो बीड!'

दिलबहादुर अपने को 'तीन नम्बर पहाड़' का रहनेवाला बतलाया था।```गाँव के सभी नौजवान एक-एक कर 'तलड्ड् ```मधेश तिर' (नीचे हिन्दुस्तान की ओर) चले आये। उसके गाँव के भक्तबहादुर ने कहा था- साथ ले चलेंगे-लखलौं । दिलबहादुर की माँ बीमार पड़ गयी थी, इसलिए वह उसके साथ नहीं आ सका। माँ जब आराम हुई तो एक दिन दिलबहादुर-'तलड्ड् मधेश तिर' चला। जहाँ बगैर तेल की रोशनी जलती है, रेलगाड़ी, जहाज और हवाई जहाज जहाँ कोई काम नहीं करना पड़ता है, हाथ में बंदूक लेकर दिन भर खड़े रहो। रात में पहरा दो और ठीक महीना के पहली गते (तारीख) को इंडियन क्रेन (इंडियन क्वाइन) गिन लो-हाथ-पैर की उँगलियों को मिलाकर जितना होता है, उससे भी ज्यादे !`` पलटन में यदि नाम लिखा गया तो फिर क्या कहना मौज ही मौज है पलटन में रोज खस्सी और रक्सी (शराब)``` सूबेदार बाबू हर साल गाँव में आते हैं और गाँव के नौजवानों को पलटन की मौज की कहानियाँ सुनाते हैं- **"**सिर में थोड़ा भी दर्द हो, अस्पताल चले जाओ। वहाँ मेम``` खाँटी मेम के हाथ की मीठी दवा खाओ। कुछ काम नहीं **खाओ-पीओ और परेड करो।**`` पैसा? एक ही साल में बत्तीसों दाँतो में सोने न मढवा लो तो कहना गाँव तो सिर्फ बूढ़े-बुढ़ियों, जवान , औरतों और बच्चों को रहने की जगह है। जवान आदमी भी भला घर में रहेगा ?``` खुकरी भिडेर काँच्छा जानू पर्छ जर्मन को धावे मां (खुकरी से लैश होकर जर्मनी के मोर्चे पर जाना होगा) और, गाँव में रखा ही क्या है ? पाँच मन भारी सुंतुला का 'बोको' दिन भर ढोओ तो एक 'पचन्नी' मिलेगी। घर से निकलो और अंग्रेज सरकार का इन्दरजाल देखो```

धन-धन अंगरेजी सरकार,
पानी माँ जहाज चलाये को
आकाश माँ जहाज उड़ाये को!''

यानी पानी और आकाश में जहाज चलाने वाली अंग्रेजी सरकार- धन्न है, धन्न है।

```तीन दिन, तीन रात दिलबहादुर पहाड़ी रास्तों पर चलता रहा। पट्टियों पर रात काटता, पके हुए जंगली गलूर खाता और झरनों का पानी पीता हुआ वह एक दिन जोगबनी पहुँचत गया। शाम को जब जूट मिल का भोंपा बज उठा तो दिलबहादुर का कलेजा 'धक धक' करने लगा था और उसका बाथ खुकरी के बेंट पर स्वयं ही पहुँच गया था। और, जब हजारों-हजार बिजली के बल्ब के बल्ब एक ही साथ जल उठे तो उसकी आँखे मारे खुशी के बंद हो गई थीं। स्टेशन के प्लेट्रफ्रार्म पर लेटा हुआ वह बारम्बार आँखों को मूँदता और खोलता-'झिलिमिली, झिलिमिली झिल्को **!**' रात भर उसे नींद नहीं आयी थी।

``गाँव के बड़े-बूढ़ों ने कहा था-पहले ही पड़ाव पर की खूबसूरती पर भूल मत जाना। जितना आगे बढ़ोगे, उतना ही अच्छा। दिलबहादुर जब कटिहार आया तो उसे एक 'भकचकी' लग गई। सैंकड़ों इंजन-पूरब-पच्छिम, उत्तर-दक्खिन-चारों ओर जाती है। वह किधर जाये? बाद में मालूम हुआ-लखलौ, कलकत्ता सब जगह जानेवाली गाड़ी खराब हो गई है। रात में, कटिहार धर्मशाला के मैनेजर ने उसे धर्मशाला में ही रहने के लिए कहा। उसने पूछा- ''दरबानी करेगा?''

''ऊँ -हूँ, नहीं करेगा, पलटन मां जायेगा-लखलौ।''

''अच्छा-अच्छा। जाना लखलौ। अभी रात में इसी ओसारे पर सो रहो ।''

सुबह को उसकी आँखे खुलीं तो चारों ओर पलटन-ही-पलटन !! धर्मशाला के सभी यात्रियों को पकड़कर रस्सी से बाँधा जा रहा है।

दिलबहादुर से **'**दोरंग**'** (दारोगा को वह दोरंग ही कहता)ने पूछा-**"**रेल लैन काटा?''

दिलबहादुर ने जवाब दिया-हूँ ! जोगबनी में परि (भी) काटा, यहाँ पनि काटेगा।**"**
```

गप के बीच में ही मैंने टोक दिया था- ''क्यों ऐसा कहा ?''

दिलबहादुर की आँखें मानो गुड़क उठीं-''किन ? जोगबनी मां एक कम्पनी (एक रुपया) तीरेर लैन कटायें।'' (क्यों ? जोगबनी में एक रुपया देकर जो रेल-लैन कटाया, सो ?)

रेल टिकट की बात वह कह रहा था ॥

उसे अपनी गिरफ्तारी का जरा भी दुख नहीं था । उसे आदमी के स्वभाव पर अचरज होता-("खुकुरी भी ले लिया, पैसा भी सब ले लिया और जेल में भी डाल दिया ।... कैसा मुजी है दोरंग ? '')

एक दिन, दोपहर को लेटकर बातें करते समय उसने पूछा-''होय न यो सुराज भन्ने क्या हो साथी ?''

मैंने उसे सुराज का अर्थ समझाने के सिलसिले में कहा था -''हमारे देश के सुराज की लड़ाई में तुमने साथ दिया है । तुम्हारे देश में जब सुराज की लड़ाई होगी तो हम भी साथ देंगे । क्यों ? त्यसो न भये, फेरि कस्नो साथी । ''

''हुन्छ ।'' दिलबहादुर ने गर्दन हिलाकर सम्मति दी थी-हुन्छ । - अर्थात् पक्की बात । .. बस "हुन्छ'' कह देने के बाद और कोई सवाल नहीं पैदा होता । हुन्छ तो हुन्छ !!

और इसे क्या कहियेगा... कि १९४७ में जब विराटनगर (नेपाल) मजदूर आन्दोलन के समय नेपाली मिलेटरी के संगीनों से घायल होकर और भारत सरकार द्वारा गिरफ्तार होकर जब पूर्णिया जेल पहुँचा तो हमें वही वार्ड मिला, जिसमें हम 1942 में थे ।'''' दिलबहादुर की याद आयी थी और मैंने मन-ही-मन उसे 'संदेशा' भेजा था- ''दिलबहादुर दाज्यु मैंने कहा था न, तुम्हारे देश की लड़ाई में मैं भी साथ दूँगा ।''

पता नहीं, दिलबहादुर कहाँ है । किन्तु, किसी भी पहाड़ी को देखते ही उसकी याद आ जाती है । वही मुस्कुराहट ॥

पिछले महीने की बात है : काठमांडू के एक होटल में बैठकर चाय पी रहा था । अकेला मैं और बड़ा सा टेबिल ! होटल के सभी टेबिल भरे हुए थे, किन्तु कोई मेरे टेबिल के चारों ओर खाली कुर्सियों पर नहीं बैठा । मुझे देखते ही दूसरे टेबिल की ओर बढ़ जाते । उनमें से एक नौजवान के मुँह से निकल ही गया - ''यो मुजी हिन्दुस्तानी हरु..'' (इन कम्बख्त हिन्दुस्तानियों ने...)

उस नौजवान को मेरी सूरत से चिढ़ पैदा हुई, मेरा क्या कसूर ? झगड़े से मैं हमेशा दूर भागने की कोशिश करता हूँ । कहने को तो बहुत सी बातें कह सकता था लेकिन मुझे अचानक दिलबहादुर की याद आ गई । उसके दिल में मेरे प्रति कोई बदगुमानी नहीं आई होगी-यह मैं शपथ खाकर कह सकता हूँ । होटलों में बैठकर बहस करनेवाले नेपाली नौजवानों में और तीन नम्बर पहाड़ी के दिलबहादुर में बहुत अन्तर है न !

दिलबहादुर होता तो हँसकर कहता-''भने की कुरा असल हो साथी !''
(साथी ! तुमने जो बात कही-सही है, सही है ।)

शब्दार्थ-टिप्पण

बायकाट सामाजिक या व्यावसायिक बहिष्कार, नाता तोडना **बागी** विद्रोही या बगावत करनेवाला **भोंडी** भट्टापन, भद्दी **खौफनाक** भयानक **अश्लील** लज्जाजनक, फूहड़ **अट्टहास** जोर की हँसी **धन्न** धन्य **सुराज** स्वराज **टेबिल** टेबल

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) किसी भी पहाड़ी को देखते ही -रेणुजी- को किसकी याद आ जाती है ?
(2) जेल के सभी प्राणियों की निगाह किधर मुड़ जाती थी ?
(3) दिलबहादुर किस नाम से बुलाने पर चिढ़ जाता था ?
(4) लेखक उससे किस भाषा में बात करते थे ?
(5) दिलबहादुर पेड़ पर बैठकर किसे चिढ़ाता था ?

2. दो-तीन वाक्यो में उत्तर लिखिए :

(1) दिल बहादुर किन-किन नामों से पुकारा जाता था ?
(2) दिलबहादुर का लोगों ने क्यों बायकाट कर दिया ?
(3) वह मुस्काराता हुआ अस्पताल में क्यों दाखलि हुआ ?
(4) गहने न पहनने के लिए नारी पुरष को क्या तर्क देती है ।

3. विस्तारपूर्वक उत्तर लिखिए :

(1) लेखक को दिलबहादुर का चेहरा ताकत का खजाना क्यों लगता था ?

(2) सिपाही लोग कैदियों के साथ क्या जुल्म करते थे ?

(3) हर रविवार को मुलाकातियों की भीड़ क्यों रहती थी ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) महाभारत में दु:शासन की छाती पर बैठकर रक्त पीते हुए भीम की जैसी तस्वीर है, वैसा ही दृश्य ।

(2) ''कुछ काम नहीं, खाओ-पीओ और परेड करो । ....पैसा ?''

5. विकल्प पूरा कीजिए :

(1) सूबेदार बाबू गाँव के____________ को कहानियाँ सुनाते हैं ?

(A) नौजवानों (B) बच्चों (C) सैनिकों (D) ग्रामीणो

(2) कुछ काम नहीं, खाओ-पीओ और ____________

(A) परेड करो (B) आराम करो (C) सो जाओं (D) भजन करो

(3) दिलबहादुर होता तो हँसकर क्या कहता ?

(A) आपने जो बात कही गलत है।.

(B) तुमने जो बात कही सही है।

(C) मेरा कोई कसूर नहीं है।

(D) जिओ और जीने दो।

(4) भक्तबहादुर उसके साथ गाँव क्यों न जा सका ?

(A) उसकी माँ बीमार थी ?

(B) उसके पास पैसे न थे।

(C) उसके पास टिकट न था ।

(D) उसका पैर टूट गया था ।

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

निगाह, दर्द, साल, गिरोह, चाँदनी, बहादुर

7. विलोम शब्द लिखिए :

एक, कर्कश, सज्जन, वृद्ध , ताजा, गुरू

8. भाववाचक संज्ञा बताइए :

मुस्कराना, सज्जन, सरल, धन्य, गुनगुनाना, तन्मय, मित्र, अश्लील

9. सामासिक शब्दों का विग्रह करके समास के नाम लिखिए :

जन-आंदोलन, मरहम-पट्टी, रामलीला, सन्ध्यावंदन, इधर-उधर, मार-पीट, हाथ-पैर

10. समानार्थी शब्द लिखिए :

लापरवाह, दर्द, निगाह, बहादुर, गिरोह, चाँदनी

11. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :

दूज का चाँद होना, जी धक धक करना, रास्ता पकड़ना

विद्यार्थी प्रवृति

- 'मेरे जीवन का यादगार दिन' - विषय पर विचार-विस्तार लिखिए ।

शिक्षक प्रवृति

- फणीश्वरनाथ रेणु का जीवन-परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए ।

7 प्रथम रश्मि

सुमित्रानन्दन पंत

(जन्म : सन् 1900 ई०, निधन : सन् 1977 ई०)

प्रकृति के इस सुकुमार कवि का जन्म उत्तरांचल में प्रकृति की मनोहारी और शोभामयी भूमि अल्मोड़ा जिले के कौसानी गाँव में हुआ था । इनके जन्म के केवल छ : घण्टे बाद ही इनकी माताजी की मृत्यु हो गई । अत:वे मातृ सुख से सदैव वंचित रहे । इनकी प्रारंम्भिक शिक्षा कौसानी में हुई । मैट्रिक उत्तीर्ण करके आगे की पढ़ाई के लिए पहले वाराणसी फिर प्रयाग गए । १९२१ में महात्मा गाँधी के साथ असहयोग आन्दोलन में जुड़ गए और पढ़ाई छोड़ दी । बाद में इन्होंने संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी का स्वत: अध्ययन किया । वे हिन्दी परामर्शदाता के रूप में आकाशवाणी में कार्य करते रहे । इन्होंने 'रुपाभ'नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया । प्रकृति के चतुर चितेरे इस कवि के काव्य में प्रकृति के विविध रंगी चित्र अंकित हुए हैं । काव्य के प्रति उनकी अभिरुचि विद्यार्थी काल से ही थी। उनकी प्रारम्भिक रचनाएँ प्रकृति-प्रेम से संबधित हैं । पंतजी की कविता समय-समय पर नये मोड़ लेती हुई नई-नई दिशाओं का अन्वेषण करती रही है । आरम्भ में कवि का झुकाव छायावाद की ओर था, बाद में प्रगतिवाद की ओर मुड़े और जीवन के संध्याकाल में अरविंद-दर्शन की ओर आकृष्ट हुए । छायावाद की बृहस्पति में पंतजी की गणना प्रसाद और निराला के साथ की जाती है ।

पंतजी ने विपुल काव्य-सृजन किया है । 'ग्रंथि', 'पल्लव', 'ग्राम्या', 'युगान्त', 'युगवाणी', 'स्वर्ण किरण', 'स्वर्णघूलि' इत्यादि इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं । 'कला और बूढ़ा चाँद' पर इन्हें साहित्य अकादमी सम्मान प्राप्त हुआ है । 'लोकायतन' पर 'सोवियत लैण्ड नेहरु सम्मान' तथा 'चिदम्बरा' पर आपको भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है । सन 1961 में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किया है ।

'प्रथम रश्मि' कविता में कवि ने सुबह की प्रथम किरण के साथ ही साथ प्रकृति में होने वाले स्वाभाविक बदलाव का बड़ा ही सटीक और मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया है । प्रथम रश्मि के आने से पहले जैसे पूरा विश्व स्तब्ध था, मूर्च्छित था, जड़ चेतन सब एकाकार थे, एक जैसे थे, पूरे विश्व में जैसे शून्यावकाश था इसमें सिर्फ सांसों का आना जाना था लेकिन अब चेतना जाग गई है । कवि इस परिवर्तन को कुतूहल से देखता है। उसे आश्चर्य होता है कि चिड़ियों को सुर्य के आने का पता कैसे चल जाता है। कवि जिज्ञासु बनकर उनसे प्रश्न पूछ रहा है।

प्रथम रश्मि का आना रंगिनि
तूने कैसे पहचाना ?
कहाँ, कहाँ हे बाल-विहंगिनि !
पाया,तूने यह गाना ?

सोई थी तू स्वप्न नीड़ में
पंखों के सुख में छिपकर,
झूम रहे थे, घूम द्वार पर,
प्रहरी-से जुगुनू नाना !
शशि किरणों से उत्तर-उतरकर
भू पर कामरूप नभचर
चूम नवल कलियों का मृदु मुख
सिखा रहे थे मुसकाना !
स्नेहहीन तारों के दीपक,
श्वास-शून्य में तरु के पात,
विचर रहे थे स्वप्न अवनि में,
तम ने था मंडप ताना !

कूक उठी सहसा तरुवासिनि,
गा तू स्वागत का गाना
किसने तुमको अंतर्यामिनि,
बतलाया उसका आना ?

निकल सृष्टि के अंध गर्भ से
छाया तन बहु छायाहीन
चक्र रच रहे थे खल निशिचर
चला कुहुक, टोना माना

छिपा रही थी मुख शशि बाला
निशि के श्रम से हो श्रीहीन,
कमल क्रोड में बंदी था अलि,
कोक शोक से दीवाना !
मूर्च्छित थीं इन्द्रियाँ, स्तब्ध जग
जड़ चेतन सब एकाकार
शून्य विश्व के उर में केवल
साँसों का आना-जाना !

तूने ही पहले बहु दर्शिनि,
गाया जागृति का गाना,
श्री सुख सौरभ का नभ चारिणि,
गूँथ दिया ताना-बाना !

निराकार तम मानो सहसा
ज्योति-पुंज में हो साकार,
बदल गया द्रुत जगत्-जाल में
धर कर नाम रूप नाना !
सिहर उठे पुलकित हो द्रुम दल,
सुप्त समीरण हुआ अधीर,
झलका हास कुसुम अधरों पर
हिल मोती का-सा दाना !
खुले पलक, फैली सुवर्ण छवि,
जगी सुरभि, डोले मधु बाल,
स्पंदन कंपन औ 'नव जीवन'
सीखा जग ने अपनाना :

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि,
तूने कैसे पहचाना ?

कहाँ-कहाँ हे बाल-विहंगिनि
पाया यह स्वर्गिक गाना ?

शब्दार्थ-टिप्पण

रंगिनि रंगवाली, विनोदिनी **रश्मि** किरण **प्रहरी** पहरेदार **नभचर** आकाश में विचरण करने वाला पक्षी **तरू** पेड़ **पात** पत्ते **अवनि** पृथ्वी **तम** अंधकार **तरुवासिनि** पेड़ पर रहने वाली **खल** दृष्ट, नीच **निशिचर** रात मे घूमने वाला **टोना करना** जादूकरना **अलि** भौंरा, सखी **क्रोड** गोद **सौरभ** सुगंध **ज्योतिपुंज** प्रकाश का समूह **द्रुत** तेज **सिहरना** काँपना **द्रुमदल** पेड़ों का समुह **स्पंदन** धड़कन **कोक** चकवा

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कवि प्रथम रश्मि के आनेकी बात किससे पूछते हैं ?

(2) जुगुनू क्या क्या कर रहे थे ?

(3) स्वागत का गान किसने गाया था ?

(4) शून्य विश्व के उर में किसका आवागमन जारी है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कामरुप नभचर क्या कर रहे थे ?

(2) कवि ने बालविहंगिनि को किन-किन नामों से संबोधित किये हैं ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) 'प्रथम' रश्मि काव्य का भाव सविस्तार अपने शब्दों में लिखिए।

(2) रात्रि की स्तब्धता का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

(3) प्रस्तुत काव्य के आधार पर प्रात:कालीन प्रकृति सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

4. काव्य पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(1) ''शशि किरणों से उतर-उतरकर
भू पर कामरूप नभचर
चूम नवल कलियों का मृद मुख
सिखा रहे थे मुसकाना''

* * *

(1) मूर्च्छित थीं इन्द्रियाँ, स्कन्ध जग
जड़ चेतन सब एकाकार
शून्य विश्व के उर में केवल
साँसों का आना-जाना

5. मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) श्वास शून्य हो जाना

(1) पुलकित होना

6. (1) समानार्थी शब्द लिखिए :

शशि, भू, तरु, तम, निशि, नवल

(2) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

जड़, ज्योति, निशि, तम

7. सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(1) ------में बंदी था ।

(A) नीड़ (B) पिंजड़े (C) कमलक्रोड (D) पत्तों

(2) शून्य विश्व के--------में केवल साँसों का आना जाना ।

(A) मुख (B) उर (C) तन (D) आँखों

(3) रंगिणि के द्वार पर प्रहरी की तरह ------घूम रहे थे ?

(A) भौंरे (B) कीट-पतंगे (C) जुगुनू (D) खल

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- छात्र काव्य को कंठस्थ करें तथा सस्वर कक्षा में सुनाएँ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत जी के प्रकृति सौन्दर्य की अन्य कविताओं का संकलन करवायें।
- प्राकृत्तिक सौंदर्य पर निबंध लिखें ।

•

8 गरीबी नंबर दो

मधु काँकरिया
(जन्म : सन् 1947)

मधु काँकरिया का लेखन उनके सामाजिक सरोकार की उपज है। पर्यावरण और आदिवासी जीवन के साथ उनका जुड़ाव सर्व विदित है। जीवन के क्षेत्र में संघर्षरत लोग उनकी रचनाओं में स्थान पाते हैं ; फिर वे बदनाम बस्तियों के लोग हो, नक्सलवादी, नशेबाज, या रिक्शेवाले। 'बीते हुए, भरी दोपहरी के अंधेरे, और 'अंत में ईशु आपके महत्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं । जिसमें संघर्षरत आम आदमी की जड़ो जहद है। 'खुले गगन के लाल सितारे,' 'सलाम आखिरी,' 'पत्ताखोर,' और 'सेज पर संस्कृत' आपके चर्चित उपन्यास हैं। मार्क्सवादी झुकाव और नक्सल सहानुभूति असल में आदिवासियों के प्रति लेखकीय प्रतिबद्धता का परिणाम है।

प्रस्तुत कहानी में गरीबी के दो रुपों का आलेखन किया गया है। एक गरीबी वह होती है जो जीवन के उन मूलभूत अभावों के कारण, देखने को मिलती है जहाँ रोटी भी नसीब नहीं होती। भारत के कई आदिवासी क्षेत्र इससे बुरी तरह पीड़ित हैं। लेखिका ने ऐसी ही एक गरीब आदिवासी युवती के सारू साग के पत्ते तोड़ते समय पैर फिसलने पर उसकी मृत्यु होने की बात की है। पर यह उसकी मजबूरी है । उनके पास कोई विकल्प नहीं है ।

गरीबी का दूसरा रूप है– जो हमारी मानसिक दिवालियापन की कोख से उपजा है। यहाँ लेखिकाने एक परिचित एक परिवार का वर्णन किया है जिसने मेहनत से एक फर्म तैयार की है अच्छा खाता–पीता परिवार है। जो बेटे को पढ़ाई के लिए विदेश भेजता है। वहाँकी चकाचौंध और जीवन शैली से आकर्षित युवक वहीं का बनकर रह जाता है और यहाँ अधेड़ उम्र के दम्पति अकेलापन का दर्द सहने के लिए मजबूर हैं। यह उनकी नियति बनकर रह जाता है। जीवन की अमूल्य चीज, जिंदगी की उष्मा उनके हाथों से सरक जाती है। यह आधुनिक युग में गरीबी का एक नया चेहरा गरीबी नं. दो।

एक होती है अभावों से उपजी जैविक गरीबी। जीवन की मूलभूत अपर्याप्तताओं की कोख से उपजी वह जानलेवा दरिद्रता, जिसकी तह में रोटियों का गणित, खाली पेट का हाहाकार, ललाट से बहता पसीना और थके पैरों की दास्तान होती है। झारखंड के आदिवासी जिले गुमला में एक आदिवासी युवती के मुंह से एक लोकगीत सुना था। गीत के बोल इस प्रकार थे:

'विपद नहीं बिसरे, वन वने लोराएं सारू साग
भैय, विपद मारो नहीं बिसरे
एक वन में ढूंढे, दुई वन ढूंढे, विपद मोरे नहीं बिसरे
वन वने लोराएं सारू साग, विपद नहीं बिसरे।'

तब गरीबी के तापमान का नयी तरह से अहसास हुआ कि लोकगीत में भी प्रेम नहीं, प्रकति नहीं, स्वप्नों के राजकुमार की आहट नहीं... हैं सिर्फ सारू साग के पत्तों की खोज में वन–वन भटकती युवा आदिवासी औरत के थके पैरों की दास्तान। और यह भी एक संयोग है कि जिस दिन सिरका गांव (गुमला जिला, विशुनपुर प्रखंड) पहुंचना हुआ, ठीक उसी के सप्ताह भर पूर्व घरघरी प्रपात की फिसलन भरी चिकनी चट्टान के ऊपर झूलती पेड़ की लता पर लगे साग के पत्तों को तोड़ने की चेष्टा में एक आदिवासी युवती फिसल कर गिरी ओर मर गई थी। बहरहाल, ये गरीबी के वे दर्दनाक झटके हैं, जिन्हें ऐन अपने सीने पर झेलने के लिए वे हर रोज मजबूर हैं, क्योंकि उनके पास कोई विकल्प नहीं है। बंगाल के कवि सुक्रांत भट्टाचार्य की एक पंक्ति है : कविता तोमाके दिलाम छुट्टी / पुर्णिमार चांद जेमन झुलसानो रुटि यानी कवि को पूर्णिमा के चांद में रोटी की झलक दिखाई देती है।

पिछले दिनों गरीबी का एक दूसरा रूप भी देखा, पर वह एक अलग किस्म की रोमानी–सी गरीबी थी, जो अभावों की कोख से न निकल कर मानसिक दरिद्रता की कोख से उपजी थी या यों कहिए, वह हाथ उठाकर मांगी हुई गरीबी थी। वाकया यों था। सालों बाद अपनी किसी परिचिता के यहां जाना हुआ। यद्यपि उम्र उसकी विशेष नहीं थी। पैंतालीस के लगभग, पर वह अपनी उम्र से काफी अधिक नजर आ रही ती. विशाल चकमक फ्लेंट में उसकी उपस्थिति किसी अभिशप्त रानी सी लग रही थी।

सामान से भरा घर इन्सानों से वीरान था। आधे से ज्यादा कमरे बंद थे। स्वप्नविहीन उस घर में इन्सानों से ज्यादा सेवक थे। उसकी परिचिता ने बताया कि वर्ष भर में यह फ्लैट सिर्फसात दिनों के लिए तब गुलजार होता है, जब उसके पुत्र एवं पुत्रवधू अपने ढाई वर्षीय पोते के साथ कैलिफोर्निया से स्वदेश आते हैं।

'तो बेटा कैलिफोर्निया में है, किसी विशेष ज्ञान की खोज में या अज्ञात की खोज में या...**'** मुझे जिज्ञासा हुई ।

'नहीं नौकरी के लिए गया है।'
'सिर्फ नौकरी के लिए ?'

और उसका संयम से साधा हुआ बांध ढह कर टूट पड़ा, हां सिर्फ नौकरी के लिए, जबकि उसे नौकरी की भी जरूरत नहीं थी। उसके पिता की बहुत बड़ी चार्टर्ड फर्म थी। विदेश तो सिर्फ इसलिए भेजा था कि वहां से मैनेजमेंट की डिग्री उसके प्रोफेशन में चार चांद लगा कर उसे औरों से अलग बना देगी। स्वप्न भी यही देखा था कि वह घर की फर्म को ही नंबर एक फर्म बनाएगा।

नहीं, स्कॉलरशिप भी कहां मिली थी, घर से बीस लाख रुपये लगाकर उसे अपने खर्च पर ही भेजा, पर वहां जाकर न सिर्फ उसे डिग्री मिली, बल्कि हाथों-हाथ नौकरी भी मिल गई। उसने पहली बार तो पूछा भी कि दो साल और रह जाऊं ? फिर वही दो साल खिंचते-खिंचते आज आठ साल हो गए अब और अब तो उसने वहीं की नागरिकता भी ले ली है। अब वह कभी नहीं लौटेगा, उसका बेटा बेबी केअर में पल रहा है, जिसका बाप कभी गोदी से नहीं उतरा। और वह फिर हिचकियों में खो गई।

थोड़ी देर बाद ही गृहस्वामी भी आ गए थ। आते ही उन्होंने आदतन स्टीरियो चलाया और फिर कंप्यूटर पर गेम खेलने लगे। परिचिता ने बताया कि सांय-सांय करते घर के सन्नाटे को सह नहीं पाने के कारण वे आते ही स्टीरियो ऑन कर देते हैं, जिससे स्टीरियों की गुरुवाणी पूरे फ्लैट को गुंजा दे। बात ही बात में गृहस्वामी ने भी उदासी बिखेरते हुए कहा जी, गलती हमारी ही थी। जीवन से ज्यादा जीविका को प्यार किया। तब तत्काल की चकाचौंध में इस मर्म को नहीं समझ पाया, पर अब समझा हूं पुरखे यों ही नहीं कह गए थे, जिस गांव जाना नहीं उसका रास्ता ही क्यों पूछना। विदेश का रास्ता तो मैंने ही दिखाया था।

लौटते वक्त भी दोनों पति-पत्नी की वीरान आंखें जाने कब तक पीछा करती रहीं। जीवन की जाने कितनी अच्छी चीजें उनके पास थी, पर इन्हीं अच्छी चीजों को बटोरने की चाह में शायद जीवन की सबसे अमूल्य चीज, जिंदगी की गरमाहट उनके हाथों से खिसक गई थी।

शब्दार्थ-टिप्पण

जैविक जीव से संबंधित **दास्तान** कहानी, कथा **अपर्याप्त** सभी प्रखंड ब्लोक **प्रपात** तेज बहनेवाला झरना **रोमानी** भावुक्तापूर्ण, काल्पनिक **अभिशप्त** शापित, शाप झेलरहा **गुलजार** रौनक **बेबी केयर**-शिशुओं की देखभाल करनेवाली संस्थाएँ **जीविक** जीने का साधन, नौकरी या व्यवसाय

मुहावरे

चार चांद लगाना-सम्मान बढ़ाना **हाथों से खिसकना**-खो जाना, दूर हो जाना, सरकना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) जैविक गरीबी किसे कहा गया है ?
(2) आदिवासी युवती के गीत में किसकी दास्तान थी ?
(3) लेखिका ने गरीबी नं.2 किसे कहा है ?
(4) कवि सुकांत की काव्य पंक्ति का अर्थ लिखिए ।
(5) परिचिता का बेटा कैलिफोर्निया क्यों गया था ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) गरीब आदिवासी युवती अपना गुजारा कैसे करती थी ?

(2) युवती की मृत्यु कैसे हुई ?

(3) गृहस्वामी की स्वीकारोक्ति अपने शब्दों में लिखिए ।

3. निम्नलिकित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) उक्त कहानी का शीर्षक गरीबी नंबर दो क्यों दिया गया है ?

(2) लेखिका की परिचिते के घर में उदासी क्यों छाई थी ?

4. पंक्ति का भावार्थ समझाइए :

(1) 'गलती हमारी ही थी। जीवन से ज्यादा जीविका को प्यार किया।'

(2) 'सामान से भरा घर इन्सानों से वीरान था।'

5. जोडे मिलाइए :

(1) आदिवासी युवती	पौंतालीस साल की उम्रवाली स्त्री।
(2) गृहस्वामी	आदिवासी जिले गुमला में रहनेवाली युवती।
(3) लेखिका की परिचिता	कवि को पूर्णिमा के चाँद में रोटी की झलक दिखाना।
(4) सुकांत भट्टाचार्य	इनकी बहुत बड़ी चार्टर्ड फर्म थी।

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

गरीब, युवती, मजबूर, वीरान

7. विरोधी शब्द लिखिए :

गाँव, परिचित, अमीर, सेवक

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- प्रस्तुत कहानी का नाट्य रूपांतर कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- धन के पीछे अंधी दौड़ में बिना सोचे समझे भागने से होनेवाले दुष्परिणामों की चर्चा कीजिए।

•

9	# लीक पर वे चलें

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(जन्म : सन् 1927 ई.,निधन: सन् 1983 ई .)

बहुमुखी व्यक्तित्व वाले रचनाकर सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में हुआ था। प्रयाग विश्वविद्यालय से एम. ए. करके आपने अध्यापक के पद पर कार्य किया परन्तु कुछ दिन बाद आकाशवाणी दिल्ली के समाचार विभाग में कार्य करने लगे। इन्होंने बहुत समय तक 'दिनमान ' साप्ताहिक के सम्पादकीय विभाग में भी कार्य किया उनके काव्य में चिंतन, विचार , और भावना की एक सूत्रता पाई जाती है।

कवि के रूप में उनकी रचनायात्रा का एक सिरा नई कविता के आंदोलन से जुड़ा रहा, तो दूसरा सिरा प्रगतिशील-जनपक्षधर काव्यांदोलन से। सर्वेश्वरजी नई कविता के प्रमुख कवि हैं। ये मुख्यरूप से कवि एवं नाट्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनकी कविताओं में आधुनिक जीवन की विडंबना, विषम स्थिति में भी व्यक्ति की जिजीविषा आदि का मार्मिक चित्रण मिलता है। इन्होंने लोकजीवन के सत-असत पक्षों का उद्‌घाटन बड़ी निर्ममता से किया है। 'जंगल का दर्द ' 'कुआनो नदी''गर्म हवाएँ ''खूंटियों पर टंगे लोग''क्या कह कर पुकारूँ''कोई मेरे साथ चले'आदि इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। इनकी रचनाएँ 'तीसरा सप्तक'में भी संकलित हैं। 'बतूता का जूता ' इनकी बाल कविताओं का अनूठा संग्रह है। इनकी रचनाओं का चेक, पोलिश, रूसी तथा जर्मन भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है। इन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया हे।

प्रस्तुत कविता में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने लीक से हटकर मतलब की परम्परा से हटकर कुछ करने की बात कही है। किसी के पीछे-पीछे वे चलें जो कमजोर हों, दुर्बल हों या फिर वो जो हारे हुए हों। किसी का अनुकरण न करते हुए नई राह, नये मार्ग निर्मित करने की बात की गई है। जोश और विश्वास से भरे हुए कवि कुछ नया करने को प्रोत्साहित करते हैं।

लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।
साक्षी हों राह रोके खड़े
पीले बाँस के झुरमुट,
कि उनमें गा रही है जो हवा
उसीसे लिपटे हुए सपने हमारे हैं।
शेष जो भी हैं-
वक्ष खोले डोलती अमराइयाँ ;
गर्व से आकाश थामे खड़े
ताड़ के ये पेड़
हिलती क्षितिज की झालरें ;
फलों से मारती
खिलखिलाती शोख अल्हड़ हवा ;
गायक-मंडली-से थिरक्ते आते गगन के मेघ,
वाद्य-यंत्रों-से पड़े टीले,
नदी बनने की प्रतीक्षा में, कहीं नीचे
शुष्क नाले में नाचता एक अँजुरी जल;
सभी, बन रहा है कहीं जो विश्वास
जो संकल्प हममें
बस उसी सहारे हैं

लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।

शब्दार्थ-टिप्पण

लीक पुरानी परम्परा **दुर्बल** कमजोर **झुरमुट** पास पास उगे पेड़ जिनकी डालियाँ मिलकर कुंज-सा-बना-रही हो, समूह **अमराई** आम की बगिया **क्षितिज** वह स्थान जहाँ आकाश और धरती मिले हुए दिखाई देते हों **अल्हड़** बालोचित सरलता के साथ मस्त और लापरवाह, **मेघ** बादल

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) लीक पर किस प्रकार के लोग चलते हैं ?
(2) हमें कैसे रास्ते पर चलना चाहिए ?
(3) पीले बाँस किसके लिए कहा गया है ?
(4) गर्व से आकाश थामे का क्या तात्पर्य है ?
(5) गगन के मेघ किस तरह थिरकते हैं ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि के स्वप्न किससे लिपटे हुए है ?
(2) नदी बनने की प्रतीक्षा में कौन और कैसी दशा में है ?
(3) हवा से हिलते ताड़ के वृक्ष कैसे लगते हैं ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) प्रस्तुत काव्य का भाव अपने शब्दों में लिखिए ।
(2) सुबह के दृश्य के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण अपने शब्दों में लिखिए ।

4. काव्य-पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) साक्षी हों राह रोके खड़े
पीले बाँस के झुरमुट
कि उनमें गा रही है जो हवा
उसीसे लिपटे हुए सपने हमारे हैं।
(2) हमें तो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं ।
(3) सभी बन रहा है कहीं जो विश्वास
जो संकल्प हम में
बस उसी के सहारे हैं ।

5. मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

(1) लीक पर चलना
(2) वक्ष खोलकर चलना

6. सामानार्थी शब्द लिखिए :

राह, दुर्बल, शुष्क

7. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

विश्वास, गगन, सहारे, अनिर्मित

8. वर्तनी सुधारिए :

झूरमूट, क्षीतीज, मंडलि, थीरकते

9. सही विकल्प चुनकर वाक्यांश पूरा कीजिए :

(1) वक्ष खोले डोलती.............................

(A) अमराइयाँ (B) अंगड़ाइयाँ (C) तनहाइयाँ (D) रुबाइयाँ

(2) खिलखिलाती शोख अल्हड़.....................

(A) हवा (B) वेल (C) वृक्ष (D) लड़कियाँ

(3) शुष्क नाले में नाचता एक.......................

(A) अंजुरी जल (B) भालू (C) पक्षी (D) मोर

विद्यार्थी प्रवृति

- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का काव्य संकलन पुस्तकालय से खोजकर पढ़ें ।
- प्राकृतिक सौंदर्य के अन्य काव्यों का संकलन तैयार करें ।

शिक्षक प्रवृति

- परिश्रम ही सफलता की कुंजी है । विचार विस्तार करवाएँ ।

•

10 श्रम देवता की उपासना

विनोबाभावे

(जन्म : 1894, निधन: 1982)

विनोबा भावे ने भारत में सर्वोदय तथा भूदान आंदोलन के द्वारा अहिंसक क्रांति का मार्ग दिखाया है। बहुभाषाविद् विनोबाजी ने हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा माना और उसके प्रचार प्रसार का कार्य किया।

उनकी-प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं: गीता-प्रवचन, उपनिषदों का अध्ययन, शांतियात्रा, जीवन और शिक्षण, भूदान-गंगा,गीता आदि-

प्रस्तुत निबंध में मानव श्रम के महत्व का निरुपण किया गया है।

हमारे यहाँ प्राचीन काल से श्रम का विशेष महत्व रहा है। लेकिन यह श्रम और ज्ञान के बीच सामंजस्य नहीं बैठा पाये जिसके परिणाम स्वरूप की हम श्रम को हेय मानने लगे। हम श्रमिकों-कारीगरों से अपेक्षा करते हैं कि वे अपने पैतृक व्यवसाय को अपनाएँ। लेकिन क्या हम उनके द्वारा उत्पादित चीजों का उपयोग करना पसंद करते हैं कि जो आदमी कम-से-कम परिश्रम करता है वह बुद्धिमान एवं चतुर माना जाता है।

विनोबाजी के विचार से हमें पुन: श्रम की प्रतिष्ठा करनी होगी, तभी हमारी पाचेन्द्रिय ठीक होंगी, हमारा बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य सुधरेगा। गांधीजीने भी श्रम की महत्ता समझी और अपने रोजमर्रा के कार्यक्रम में श्रम को प्रमुख स्थान दिया गया। आज हमें गाँधीजी एवं विनोबाजी के विचारों को कार्यान्वित कर जीवन को सार्थक बनाना होगा।

प्राचीन काल में हमारे यहाँ कला कम नहीं थी। लेकिन पूर्वजों से मिलने वाली कला एक बात है और उसमें दिन-प्रति-दिन प्रगति करना दूसरी बात। आज भी काफी प्राचीन कारीगरी मौजूद है। उसको देखकर हमें आश्चर्य होता है। आश्चर्य करने का प्रसंग हमारे सामने क्यों आने चाहिए ? उन्हीं पूर्वजों की तो हम संतान हैं न ? तब तो उनसे बढ़कर हमारी कला होनी चाहिए। लेकिन आज आश्चर्य करने के सिवा हमारे हाथ में और कुछ नहीं रहा। यह कैसे हुआ ? कारीगरों में ज्ञान का अभाव और हममें परिश्रम-प्रतिष्ठा का अभाव ही इसका कारण है।

प्राचीन काल में ब्राह्मण और शूद्र की समान प्रतिष्ठा थी। जो ब्राह्मण था वह विचार-प्रवर्तक, तत्वज्ञानी और तपश्चर्या करनेवाला था। जो किसान था वह ईमानदारी से अपनी मजदूरी करता था। प्रात:काल उठकर भगवान का स्मरण करके सूर्यनारायण के उदय के साथ खेत में काम करने लग जाता था, और सायंकाल सूर्य भगवान जब अपनी किरणों को समेट लेते तब उनको नमस्कार करके घर वापस आता था। ब्राह्मण में और इस किसान में कुछ भी सामाजिक, आर्थिक या नैतिक भेद नहीं माना जाता था।

हम जानते हैं कि पुराने ब्राह्मण 'उदर-पात्र' होते थे, यानी उतना ही संचय करते थे जितना कि पेट में अंटता था। यहाँ तक उनका अपरिग्रही आचरण था। आज की भाषा में कहना हो तो ज्यादा-से ज्यादा काम देते थे और बदले में कम-से-कम वेतन लेते थे। यह बात प्राचीन इतिहास से हम जान सकते हैं। लेकिन बाद में ऊँच-नीच का भेद पैदा हो गया। कम-से-कम मजदूरी करनेवाला ऊँची श्रेणी का और हर तरह की मजदूरी करनेवाला नीची श्रेणी के माना गया। उसकी योग्यता कम, उसे खाने के लिए कम, और उसकी प्रगति, ज्ञान प्राप्त करने की व्यवस्था भी कम।

प्राचीन काल में न्यायशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, वेदांतशास्त्र इत्यादि शास्त्रों के अध्ययन का जिक्र हम सुनते हैं। गणितशास्त्र, वैद्यशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, इत्यादि शास्त्रों की पाठशालाओं का भी जिक्र आ जाता है। लेकिन उद्योगशाला का उल्लेख कहीं नहीं आया है। इसका कारण यह है कि हम वर्णाश्रम धर्म माननेवाले थे, इसलिए हरेक जाति का धंधा उस जाति के लोगों के घर-घर में चलता था और इस तरह हरेक घर उद्योगशाला था। कुम्हार हो या बढ़ई, उसके घर में बच्चों को बचपन ही से उस धंधे की शिक्षा अपने पिता से मिल जाती थी। उसके लिए अलग प्रबंध करने की आवश्यकता न थी। लेकिन आगे क्या हुआ कि एक ओर हमने यह मान लिया कि पिता का ही धंधा पुत्र को करना चाहिए, और दूसरी ओर बाहर से आया हुआ माल सस्ता मिलने लगा, इसलिए उसी को खरीदने लगे। मुझे कभी-कभी सनातनी भाइयों से बातचीत करने का मौका मिल जाता है। मैं उनसे कहता हूँ कि वर्णाश्रम-धर्म लुप्त हो रहा है। इसका अगर आपको दु:ख है तो कम-से-कम स्वदेशी धर्म का तो पालन कीजिए। बुनकर से तो मैं कहूँगा कि अपने बाप का धंधा करना तुम्हारा धर्म है, लेकिन उसका बनाया हुआ कपड़ा मैं नहीं लूंगा तो वर्णाश्रम-धर्म कैसे जिंदा रह सकता है ? हमारी इस वृत्ति से उद्योग गया और उद्योग के साथ उद्योगशाला भी गई। इसका कारण यह है कि हमने शरीर-श्रम को नीच मान लिया। जो आदमी कम-से-कम परिश्रम करता है वही आज सबसे अधिक बुद्धिमान और नीतिमान माना जाता है।

आज ही सुबह बातें हो रही थी। किसी ने कहा, ''अब विनोबाजी किसान-जैसे दीखते हैं '', तो दूसरे ने कहा, ''लेकिन जबतक उनकी धोती सफेद है तबतक वे पूरे किसान नहीं हैं।'' इस कथन में एक दंश था। खेती और स्वच्छ धोती की अदावत है, इस धारण में दंश है। जो अपने को ऊपर की श्रेणीवाले समझते हैं उनको यह अभिमान होता है कि हम बड़े साफ रहते हैं, हमारे कपड़े बिलकुल सफेद बगले पर जैसे होते है। लेकिन उनका यह सफाई का अभिमान मिथ्या और कृत्रिम है। उनके शरीर की डाक्टरी जाँच--में मानसिक जाँच की तो बात ही छोड़ देता हूँ-- की जाय और हमारे परिश्रम करनेवाले मजदूरों के शरीर की भी जाँच की जाय और दोनों परीक्षा-ओं की रिपोर्ट डॉक्टर पेस करे और कह दे कि कौन ज्यादा साफ है! हम लोटा मांजते हैं तो बाहर से । उसमें अपना मुँह देख लीजिए। लेकिन अंदर से हमें मलने की जरुरत ही नहीं जान पड़ती। हमारे लिए अंदर की कीमत ही नहीं होती। हमारी स्वच्छता केवल बाहरी और दिखावटी होती है। हमें शंका होती है कि खेत की मिट्टी में काम करनेवाला किसान कैसे साफ रह सकता है। लेकिन मिट्टी में या खेत में काम करनेवाले किसान के कपड़े पर जो मिट्टी का रंग लगता है वह मैल नहीं है। सफेद कमीज के बदले किसीने लाल कमीज पहन लिया तो उसे रंगीन कपड़ा समझते हैं। वैसे ही मिट्टी का भी एक प्रकार का रंग होता है। रंग और मैल में काफी फर्क है। मैल में जन्तु होते हैं, पसीना होता है, उसकी बदबू आती है। मृत्तिका तो 'पुण्यगंध' होती है। गीता में लिखा है, पुण्योगंध: पृथिव्यांच'। मिट्टी का शरीर है, मिट्टी में ही मिलनेवाला है, उसी मिट्टी का रंग किसान के कपड़े पर है। तब हम मैला कैसे हैं? लेकिन हमको तो बिलकुल सफेद, कपास जितना सफेद होता है उससे भी बढ़कर सफेद कपड़े पहिनने की आदत पड़ गई है। मानो 'व्हाइट वाश' ही किया है। उसे हम साफ कहते हैं। हमारी भाषा ही विकृत हो गई है।

हममें से कोई गीता-पाठ, भजन और जप करता है या कोई उपनिषद् कंठ कर लेता है तो वह बडा भारी महात्मा बन जाता है। जप, संध्या, पूजा-पाठ ही धर्म माना जाता है। लेकिन दया, सत्य, परिश्रम में हमारी श्रद्धा नहीं होती। जो धर्म बेकार, निकम्मा, अनुत्पादक हो उसी को हम सच्चा धर्म मानते हैं। जिससे पैदावार होती है, वह भला धर्म कैसे हो सकता है? भक्ति और उत्पत्ति का भी कहीं मेल हो सकता है?

हिन्दुस्तान की संस्कृति इस हद तक गिर गई, इसी कारण से बाहर के लोगोंने इन ऊपरी लोगों को हटाकर हिन्दुस्तान को जीत लिया। बाहर के लोगों ने आक्रमण क्यों किया? परिश्रम से छुटकारा पाने के लिए। इसलिए उन्होंने बड़े-बड़े यंत्रों की खोज की। शरीर-श्रम कम-से-कम करके बचे हुए समय में मौज और आनन्द करने की उनकी दृष्टि है। इसका नतीजा आज यह हुआ है कि हरेक राष्ट्र अब यंत्रों का उपयोग करने लगा है। पहली मशीन जिसने निकाली उसकी हकूमत तभी तक चली जब तक दूसरों के पास मशीन नहीं ती। मशीन से सम्पत्ति और सुख तभी तक मिला जबतक दूसरों ने मशीन का उपयोग नहीं किया था। हरेक के पास मशीन आ जाने पर स्पर्धा शुरू हो हई।

आज यूरोप एक बड़ा 'चिड़याखाना' ही बन गया है। जानवरों की तरह हरेक अपने अलग-अलग पिंजड़े में पड़ा है। और पड़ा-पड़ा सोच रहा है कि एक-दूसरे को कैसे खा जाऊँ ; क्योंकि वह अपने हाथों से कोई काम करना नहीं चाहता। हमारे सुधारक लोग कहते हैं-- ''हाथों से काम करना बड़ा भारीकष्ट है, उससे किसी-न-किसी तरकीब के छूट सकें ता बडा अच्छा हो। अगर दो घंटे काम करके पेट भर सकें तो तीन घंटे क्यों करें? अगर आठ घंटे काम करेंगे तो कब साहित्य पढ़ेंगे और कब संगीत होगा? कला के लिए वक्त ही नहीं बचता।''

भर्तृहरि ने लिखा है- साहित्यसंगीतकलाविहीन: साक्षात्पशु: पुच्छविषाणहीन: -जो साहित्य-संगीत-कला से विहीन है वह बिना पुच्छविषाण (पूंछ और सींग)का पशु है। मैं कहता हूँ--''ठीक है, साहित्य-संगीत-कला-विहीन अगर पुच्छविषाणहीन पशु है, तो साहित्य-संगीत-कलावाला पुच्छविषाणवाला पशु है।'' भर्तृहरि के लिखने का मतलब क्या था यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन उस पर से मुझे यह अर्थ सूझ गया। दूसरे एक पंडित ने लिखा है- ''काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम'' --- बुद्धिमान लोगों का समय काव्य-शास्त्र-विनोद में कटता है। मानो उनका समय कटता ही नहीं, माने वह उन्हें खाने के लिए उनके दरवाज पर खड़ा है। काल तो जाने ही वाला है। उसके जाने की चिन्ता क्यों करते हो? वह सार्थक कैसे होगा यह देखो। शरीर-श्रम को दु:ख क्यों मान लिया है, यही मेरी समझ में नहीं आता। आनन्द और सुख का जो साधन है उसी को कष्ट माना जाता है।

एक अमेरिकन श्रीमान से किसी ने पूछा, ''दुनिया में सबसे अधिक धनवान कौन है ?'' उसने जवाब दिया--''जिसकी पाचनेन्द्रिय अच्छी है, वह।'' उसका कहना ठीक है। सम्पत्ति खूब पड़ी है। लेकिन दूध भी हजम करने की ताकत जिसमें नहीं है उसको उस सम्पत्ति से क्या लाभ? और पाचनेन्द्रिय कैसे मजबूत होती हैं? काव्यशास्त्र से तो ''कालो-गच्छति''। उससे पाचनेन्द्रिय थोड़े ही मजबूत होनेवाली है। पाचनेन्द्रिय तो व्यायाम से, परिश्रम से मजबूत होती है। लेकिन आजकल व्यायाम भी पन्द्रह मिनिट का निकला हैं। थोड़े ही समय में एकदम व्यायाम करने की जो पद्धति है उससे स्नायु (मसल्स)बनते है, नसें नही

बनतीं। और अमरबेल जिस प्रकार पेड़ को खा जाती है, वैसे ही स्नायु आरोग्य को खा जाते हैं। नसें आरोग्य को बढ़ाती है। धीरे-धीरे और सतत जो व्यायाम मिलता है उससे नसें बनती हैं और पाचनेन्द्रिय मजबूत होती है। चौबीस घंटे हम लगाँतार हवा लेते है ; लेकिन अगर हम यह सोचने लगें कि दिनभर हवा लेने की यह तकलीफ क्यों उठाएँ , दो घंटे में ही दिनभर की पूरी हवा मिल जाय तो अच्छा हो, तो यही कहना पड़ेगा कि हमारी संस्कृति आखिर दर्जे तक पहुँच गई है। हमारा दिमाग इसी तरह से चलता है। पढ़ते-पढ़ते आँखे बिगड़ जाती हैं तो हम ऐनक लगा लेते हैं। लेकिन आँखें न बिगड़े इसका कोई तरीका नहीं निकालते।

हमारा स्वास्थ्य बिगड़ गया है, भेदभाव बढ़ गया है और हम पर बाहर के लोगों का आक्रमण हुआ है--इस सबका कारण यही है कि हमने परिश्रम छोड़ दिया है।

यह तो हुआ जीवन की दृष्टि से। अब शिक्षण की दृष्टि से परिश्रम का विचार करना है।

और बाहर से तपश्चर्या की धूप मिले तो हम भी पेडों के जैसे हरे-भरे हो जायें। हम ज्ञान की दृष्टि से परिश्रम को नहीं देखते, इसलिए उसमें तकलीफ मालूम होती है। ऐसे लोगों के लिए भगवान का यह शाप है कि उनको आरोग्य और ज्ञान कभी मिलने ही वाला नहीं।

रोटी बनाने का काम माता करती है। माता का हम गौरव करते हैं। लेकिन माता का असली मातापन उस रसोई में ही है। अच्छी-से अच्छी रसोई बनाना, बच्चों को प्रेम से खिलाना--इसमें कितना ज्ञान और प्रेम-भावना भरी है ? रसोई का काम यदि माता के हाथों से ले लिया जाय तो उसका प्रेम-साधन ही चला जायगा। प्रेम-भाव प्रकट करने का यह मौका कोई माता छोड़ने के लिए तैयार न होगी। उसीके सहारे तो वह जिन्दा रहती है। मेरे कहने का मतलब कोई यह न समझे कि किसी-न-किसी बहाने मैं स्त्रियों-पर रोटी पकाने का बोझ लादना चाहता हूँ। मैं तो उनका बोझ हलका करना चाहता हूँ। इसीलिए हमने आश्रम में रसोई का काम मुख्यत: पुरुषों से ही कराया है। मेरा मतलब इतना ही था कि जैसे रसोई का काम माता छोड़ देगी तो उसका ज्ञान-साधन और प्रेम-साधन न चला जायगा , वैसे ही यदि हम परिश्रम से घृणा करेंगे तो ज्ञान-साधन ही खो बैठेंगे। इसलिए मुख्य दृष्टि यह है कि शरीर-श्रम की महिमा को हम समझें। हमारा ज्ञान किताबी होता है। हम उसे व्यवहार में नहीं लाते। जबतक हम प्रत्यक्ष उद्योग नहीं करते तबतक उसमें प्रगति और वृद्धि नहीं होती।

शरीर के साथ मन का निकट सम्बन्ध है। आजकल मनोविज्ञान (मानस-शास्त्र)का अध्ययन करनेवाले हमें बहुत दिखाई देते हैं। पर बेचारों को खुद अपना काम-क्रोध जीतने का तरीका मालूम नहीं होता।

शरीर-वृद्धि के साथ मनोवृद्धि होती है। लड़कों की मनोवृद्धि करनी है, उनको शिक्षा देनी है, तो शारीरिक श्रम कराके उनकी भूख जाग्रत करनी चाहिए। परिश्रम से भूख बढ़ेगी। जिसको दिनभर में तीन बार अच्छी भूख लगती है उसे अधिक धार्मिक समझना चाहिए। भूख जिंदा मनुष्य का धर्म है। जिसे दिनभर में एक ही दफा भूख लगती है, संभवत: उसका जीवन अनीतिमय होगा। भूख तो भगवान का संदेश है। भूख न होती तो दुनिया बिलकुल अनीतिमान और अधार्मिक बन जाती। फिर नैतिक प्रेरणा ही हमारे अंदर न होती। किसी को भी भूख-प्यास अगर न लगती तो हमें अतिथि-सत्कार का मौका कैसे मिलता? सामने यह खम्भा खड़ा है। इसका हम क्या सत्कार करेंगे? इसको न भूख है, न प्यास । हमें भूख लगती है, इसलिए हमारे पास धर्म है।

एक आदमीने मुझसे कहा, गांधीजीने पीसना, कातना, जूते बनाना वगैरह काम खुद करके परिश्रम की प्रतिष्ठा बढ़ा दी। मैंनें कहा, मैं ऐसा नहीं मानता। परिश्रम की प्रतिष्ठा किसी महात्मा ने नहीं बढ़ाई। परिश्रम की निज की ही प्रतिष्ठा इतनी है कि उसने महात्मा को प्रतिष्ठा दी। आज हिन्दुस्तान में गोपाल-कृष्ण की जो इतनी प्रतिष्ठा है वह उनके गो-पालन ने उन्हें दी है। उद्योग हमारा गुरुदेव है।

दुनिया की हरेक चीज हमको शिक्षा देती है ।एक दिन मैं धूप में घूम रहा था। चारों तरफ बड़े-बड़े हरे वृक्ष दिखाई देते थे। मैं सोचने लगा कि ऊपर से इतनी कड़ी धूप पड़ रही है, फिर भी ये वृक्ष हरे कैसे हैं ? वे वृक्ष मेरे गुरु बन गयें। मेरी समझ में आ गया कि जो वृक्ष ऊपर से इतने हरे-भरे दीखते हैं उनकी जड़ें जमीन में गहरी पहुँची हैं और वहाँ से उन्हें पानी मिल रहा है। इस तरह अन्दर से पानी और ऊपर से धूप , दोनों की कृपा से यह सुन्दर हरा रंग मिला है।

शब्दार्थ-टिप्पण

प्रतिष्ठा सम्मान **अपरिग्रही** संचय न करने वाला **वृत्ति** स्वभाव **अदावत** दुश्मनी **मृत्तिका** मिट्टी **निकम्मा** बिना काम का, **आरोग्य** स्वास्थ्य **मौका** अवसर **अभाव** कमी **प्राचीन** पुराना **अभिमान** घमण्ड **हुकूमत** शासन **अमरबेल** परोपजीवी वनस्पति

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

(1) किसान अपना कार्य किस प्रकार करता था ?

(2) पुराने ब्राह्मण उदारपात्र क्यों थे ?

(3) मृत्तिका में किस प्रकार की गंध होती है ?

(4) हमारी श्रद्धा किन-किन गुणों में नहीं होती है ?

(5) आज के समय में धर्म किसे माना जाता है ?

(6) परिश्रम से बचने के लिए किसकी खोज हुई ?

(7) बुद्धिमान लोगो का समय किस प्रकार करता हैं ?

(8) अमरबेल की क्या विशेषता है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) किसान की दिनचर्या संक्षेप में लिखिए .

(2) वर्णाश्रम धर्म किस प्रकार लुप्त हो रहा है ?

(3) ऊँची श्रेणी वाले लोगों को क्या अभिमान था ?

(4) आज यूरोप एक चिड़ियाखाना कैसे बन गया है ?

(5) दुनियाँ में सबसे धनवान किसे माना गया है ? क्यों ?

(6) धार्मिक किसे समझा जा सकता है ? क्यों ?

(7) गाँधीजी ने परिश्रम की प्रतिष्ठा किस प्रकार बढ़ा दी ?

3. विस्तार पूर्वक उत्तर दीजिए :

(1) प्राचीनकाल में उद्योगशाला का उल्लेख क्यों नहीं मिलता था ?

(2) रंग और मैल में क्या फर्क है ?

(3) माता का गौरव कब स्पष्ट होता है ?

(4) परिश्रम की स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(5) भूख का महत्व समझाइए ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) आज यूरोप एक बड़ा चिड़ियाखाना ही बन गया है।

(2) **"**काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम**"**।

(3) भूख जिन्दा मनुष्य का धर्म है ।

5. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) किसान--------था ?

(A) ईमानदार, (B) बेईमान (C) चतुर (D) चालाक

(2) --------तो व्यायाम से परिश्रम मजबूत बनती है।

(A) आँख (B) पाचनेन्द्रिय (C) रक्त (D) धर्म

(3) रोटी बनाने का काम-------------करती है।

(A) बहन (B) भाभी (C) बहू (D) माता

(4) -----------जिंदा मनुष्य का धर्म है।

(A) भूख (B) इच्छा (C) पब्यास (D) भ्रमण

(5) भूख ---------का संदेश है।

(A) भगवान (B) मनुष्य (C) देवता (D) राक्षस

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- **'**शरीर श्रम का महत्त्व**'** विषय पर 20 वाक्य लिखिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक विद्यार्थियों को आचार्य विनोबाभावे के विषय में अधिक जानकारी दें।
- शिक्षक विद्यार्थियों को उचित आहार-विहार का महत्त्व समझाएँ।

•

11 पानी में घिरे हुए लोग

केदारनाथ सिंह
(जन्म : सन् 1934 ई.)

केदारनाथ सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के चकिया नामक गाँव में हुआ था। व्यवसाय से वे अध्यापक रहे, लेकिन कविता और समीक्षा उनके प्रिय विषय रहे हैं। सन् 1960 में प्रकाशित तीसरा सप्तक में इनकी रचनाओं को पहलीबार प्रकाशन का अवसर मिला। हिन्दी कविता के समकालीन परिदृश्य में इनकी कविता की अपनी अलग पहचान है। इनके अनुभव का क्षेत्र व्यापक है। इनकी कविता में गाँव और हर, लोक संस्कृति और शिष्ट संस्कृति दोनों ही निरुपति हैं। देश और धरती के रंग इनकी कविताओं में बिखरे पड़े है। अपनी धरती और अपने लोगों की गहरी पहचान से निर्मित इनकी कविताएँ बेहद आत्मीय नजर आती है।

केदारनाथ सिंह की कविता में जनजीवन के यथार्थ का कलात्मक चित्रण के साथ ही साथ मानवता की संवेदनात्मक गहरी तलाश भी दृष्टिगोचर होती है । प्रगतिवादी चिंतन के प्रति इनका गहरा लगाव है । कविता के साथ-साथ संगीत तथा अकेलापन इन्हें बेहद प्रिय है । अभी बिलकुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस आदि इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ है । अकाल में सारस के लिए केदारनाथ को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आप भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सन्मानित हुए है।

प्रतिनिधि कविताएँ से उद्धत यह कविता कवि की श्रेष्ठ कविताओं में से है । इस कविता में उन लोगों की मूक व्यथा को स्वर मिला है जो प्रत्येक वर्ष बाढ़ की चपेट में आकर अपना सब कुछ गवाँ बैठते हैं । इतना सब कुछ सहने के बाद भी वे अपना गाँव, अपनी जमीन, अपना खेत, अपनी जगह छोड़कर सदा के लिए चले नहीं जाते हैं । इस कविता के माध्यम से कवि ने उनकी उत्कट जिजीविषा और आत्मविश्वास की कभी न बुझनेवाली आग का बड़ा ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है ।

पानी में घिरे हुए लोग
प्रार्थना नहीं करते
वे पूरे विश्वास से देखते हैं पानी को
और एक दिन
बिना किसी सूचना के
खच्चर बैल या भैंस की पीठ पर
घर-असबाब लादकर
चल देते हैं कहीं और

यह कितना अद्‌भुत है
कि बाढ़ चाहे जितनी भयानक हो
उन्हें पानी में
थोड़ी-सी जगह जरुर मिल जाती है
थोड़ी-सी धूप
थोड़ा-सा आसमान

फिर वे गाड़ देते हैं खम्भे
तान देते हैं बोरे
उलझा देते है मूँज की रस्सियाँ और टाट
पानी में घिरे हुए लोग
अपने साथ ले आते हैं पुआल की गन्ध
वे ले आते हैं आम की गुठलियाँ
खाली टिन

भुने हुए चने
वे ले आते हैं चिलम और आग
फिर बह जाते हैं उनके मवेशी
उनकी पूजा की घंटी बह जाती है
बह जाती है महावीर जी की आदमकद मूर्ति
घरों की कच्ची दीवारें
दीवारों पर बने हुए हाथी-घोड़े
फूल-पत्ते
पाट-पटोरे
सब बह जाते हैं

मगर पानी में घिरे हुए लोग
शिकायत नहीं करते
वे हर कीमत पर अपनी चिलम के छेद में
कहीं न कहीं बचा रखते हैं
थोड़ी-सी आग

फिर डूब जाता है सूरज
कहीं से आती हैं
पानी पर तैरती हुई
लोगों के बोलने की तेज आवाजें
कहीं से उठता है धुँआ
पेड़ों पर मँडराता हुआ
और पानी में घिरे हुए लोग
हो जाते हैं बेचैन
वे जला देते हैं
एक टुटही लालटेन
टांग देते हैं किसी ऊँचे बाँस पर
ताकि उनके होने की खबर
पानी के पार तक पहुँचती रहे

फिर उस मद्धिम रोशनी में
पानी की आँखों में
आँखें डाले हुए
वे रात-भर खड़े रहते हैं
पानी के सामने
पानी की तरफ
पानी के खिलाफ

सिर्फ उनके अन्दर
अरार की तरह
हर बार कुछ टूटता है
हर बार पानी में कुछ गिरता है
छपाक्.....छपाक्......

शब्दार्थ-टिप्पण

खच्चर गधे और घोड़े की मिश्रजाति **अद्‌भूत** अनोखा, विचित्र, विस्मयजनक **टाट** बिछाने के काम आनेवाला मोटा कपड़ा **पुआल** पयाल धान की सूखी डंठल जिनसे दाने अलग करलिए गये हो **मध्यम** धीमा **अरार** कगार

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) बाढ़ आने पर लोग अपना सामान किस पर लादकर ले जाते हैं ?

(2) वे अपने साथ किस की गंध ले आते हैं ?

(3) वे आग को बचाकर कहाँ रखते हैं ?

(4) वें उँचे बाँस पर क्या लटका देते हैं ?

(5) वे रातभर कैसे खड़े रहते हैं ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) भयानक बाढ़ में भी उन्हें क्या-क्या मिल जाता है ?

(2) पानी में घिरे हुए लोग अपना निवासु कैसे बनाते हैं ?

(3) वे अपने साथ कौन-कौन सी वस्तुएँ ले आते हैं ?

(4) बाढ़ में उनका क्या-क्या बह जाता है ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) बाढ़ की विनाशलीला का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

(2) बाढ़ से बचने के लिए लोग क्या-क्या करते हैं।

(3) बाढ़ पीड़ित लोग अपने जीवित होने की खबर दूसरे लोगों को कैसे पहुँचाते है ?

(4) बाढ़ पीडित की विवशता, प्रतीक्षा और वेदना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(5) पानी में घिरे हुए लोग काव्य का सारांश लिखिए।

4. काव्य पंक्तियों का भाव लिखिए :

(1) ''अपने साथ ले आते हैं पुआल की गंध
वे ले आते हैं आम की गुठलियाँ
खाली टिन
भुने हुए चने
वे ले आते हैं चिलम और आग।''

(2) ''फिर बह जाते हैं इनके मवेशी
उनकी पूजा की घंटी बह जाती है
बह जाती है महावीर जी की आदमकद मूर्ति।''

(3) ''वे जला देते हैं
एक टूटही लालटेन
टांग देते हैं किसी ऊँचे बांस पर
पानी के पार तक पहुँचती रहे।''

5. सही विकल्प चुनकर खाली जगह पूरी कीजिए :

(1) अपने साख ले आते हैं-----------की गंध।

(A) इत्र (B) चंदन (C) पुआल (D) नीम।

(2) बह जाती है----------की आदमकद मूर्ति।

(A) गणेशजी (B) महावीरजी (C) श्रीकृष्णजी (D) श्रीरामजी।

(3) पानी में घिरे हुए लोग------------नहीं करते।

(A) झगडा (B) प्रेम (C) शिकायत (D) ईर्ष्या

(4) कहीं न कही बचा रखते हैं थोड़ी सी-----------।

(A) आग (B) लकड़ी (C) मिठाई (D) चटाई

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

आँख, दिवस, मवेशी, जल

7. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

धूप, महिमा, सूरज, बाढ़, विश्वास

8. भाववाचक शब्द बनाइए :

बेचैन, चढ़ना, मीठा, भयंकर

9. विशेषण बनाइए :

दिन, आसमान, पूजा, घर

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- बाढ़ की विनाशलीला पर निबंध लिखिए।
- बाढ़ पीड़ितों की सहायता करना धर्म है। विचार विस्तार कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- बाढ़ के दृश्यों का संकलन करायें।
- श्री केदारनाथ सिंह का साहित्यिक परिचय करवायें।

•

12 नदियों में फिर प्राण प्रतिष्ठा करें

अमृतलाल वेगड़

(जन्म : सन् 1928 ई.)

अमृतलाल बेगड का जन्म जबलपुर में हुआ था। मूलत: चित्रकार वेगडजीने अपनी कला-शिक्षा शांति-निकेतन में प्राप्त की और वहीं लगभग 35 वर्ष तक कला का अध्यापन किया। इनके लिए प्रकृति सबसे प्रिय एवं आत्मीय है। नर्मदा के अनन्य सौंदर्य को आत्मसात् कर उसे अपनी तूलिका एवं लेखनी से साकार कर दिया है। नर्मदा के दोनों किनारों की ढाई हजार किलोमीटर की विकट पदयात्रा द्वारा यह सब संभव हो सका है।

नर्मदा के भव्य सौंदर्य को मूर्त करने वाली अनेक चित्र-प्रदर्शनियाँ देश के बड़े-बड़े शहरों में आयोजित हुई और कला-मर्मज्ञों द्वारा सराही गईं। अपने चित्रों के लिये उन्हें 1994-95 में मध्यप्रदेश शासनके 'शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया। हिन्दी में इतनी तीन और गुजराती में चार पुस्तकें प्रकाशित हैं। बापू, सूरज के दोस्त, भारत मेरा देश, सौंदर्य की देवी नर्मदा, अमृतस्य नर्मदा जैसी कृतियाँ अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत हैं।

प्रस्तुत निबंध में नदियों के प्रदूषण संबंधी समस्याओं पर विचार किया गया है। वस्तुत: पानी के साथ मनुष्य का प्राकृत्तिक सम्बन्ध है। वह हमें बार-बार अपनी ओर खींचता है। जल ही जीवन है, इसलिए दुनियाभर की संस्कृतियों का विकास नदियों के किनारों पर ही हुआ है। आज इन जीवनदायिनी नदियों का हमने विषाक्त कर दिया है। विभिन्न कारणों से नदियाँ का पानी दूषित हो रहा है और उसके कारण मनुष्य जीवन विविध रोगों का शिकार हो रहा है। लेखक का यह कथन हमें सचेत करता है कि कभी लोग नदियों के साथ सामंजस्य रखता था। जब मनुष्य असभ्य था, तब नदियाँ स्वस्थ और स्वच्छ थीं आज मनुष्य सभ्य हो गया है तो नदियाँ मलिन और विषाक्त हो गई हैं। लेखक की यह चिंता हम सबकी चिंता होनी चाहिए।

अजीब है यह पानी। इसका अपना कोई रंग नहीं , पर इन्द्रधनुष के समस्त रंगों को धारण कर सकता है। इसका अपना कोई आकार नहीं, पर असंख्य आकार ग्रहण कर सकता है। इसकी कोई आवाज नहीं, पर वाचाल हो उठता है तो इसका भयंकर वज्र निनाद दूर-दूर तक गूँज उठता है। गतिहीन है, पर गति-मान होने पर तीव्र वेग धारण करता है और उन्मत शक्ति और अपार ऊर्जा का स्त्रोत बन जाता है। उसके शांत रुप को देखकर हम ध्यानावस्थित हो जाते हैं, तो उग्र रूप को देखकर भयाक्रांत। जीवनदायिनी वर्षा के रूप में वरदान बनकर आता है, तो विनाशकारी बाढ़ का रूप धारण कर जल-तांडव भी रचता है। अजीब है यह पानी।

गाँवों और शहरों में रहते हुए मनुष्य अपने ग्रह के मूल स्वरूप को प्राय: भुला बैठा है, इसका सही अंदाज तभी लग सकता है जब वह किसी लम्बी समुद्री-यात्रा पर निकल जाए। चारों ओर पानी ही पानी, का अनंत विस्तार। पहली बार उसके सामने यह तथ्य उजागर होता है कि उसकी दुनिया पानी की दुनिया है। वह एक ऐसे ग्रह पर निवास करता है जिस पर पानी का आधिपत्य है। जमीन पर रहते यह बात कभी उसकी समझ में न आती। जबकि समुद्र में और हममें कितनी समानता है-

हमारा ह्दय धड़कता है, समुद्र गरजता है।

कहीं समुद्र का गर्जन धरती के ह्दय की धड़कन तो नहीं।

समुद्र का पानी खारा है कहीं हमारे रक्त में वही खारापन तो नहीं।

संभवत: इसीलिए समुद्र हमें जितना उद्वेलित और सम्मोहित करता है, उतना और कोई नहीं। पुरी का समुद्र देखकर चैतन्य महाप्रभु इतने भाव-विभार हो गए कि उसी में समा गए।

समुद्र में ब्रह्मा भी है, विष्णु भी। वह हमारा सर्जक भी है और हमारा पालक भी।

समुद्र ही अपने पानी को साफ करके, उसका खारापन दूर करके हमें भेजता है। अगर वह पानी भेजना बन्द कर दे तो जीवन समाप्त हो जाएगा। वह आज भी हमारा पालन-षोषण कर रहा है। ऐसा नहीं कि समुद्र (मंथन)से एक ही बार अमृत निकला था। अमृत हर बार निकलता है और वर्षा के रूप में पूरी धरती पर बरसता है।

सूर्य की गरमी से तपकर समुद्र का पानी भाप बनता है। निराकार भाप ऊपर जाकर साकार बादल में ढल जाती है। इन बादलों को सैंकड़ों या हजारों किलोमीटर दूर की जगहों तक हवाएँ ले जाती हैं, मानसून की हवाएँ।

जब ऊँचे पहाड़ों या घने जंगलों तक मानसून पहुँचाता है तो वहाँ की ठंडक पाकर ठहर जाता है। पहाड़ और वन मानो कहते हैं–धरती, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे और मनुष्य कब से तुम्हारी बाट जोह रहे हैं। ऊँची अटारी पर से नीचे उतरो, वायु में से पुनः द्रव बनो, पानी बनकर तप्त धरा को तृप्त करो, धन–धान्य से पूर्ण करो, लोगों में नवजीवन का संचार करो।

मेघ मानो इसी घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हो। अपने जीवन को सार्थक करने का समय आ पहुँचा है। लोक–कल्याण के लिए अपने–आपको, उत्सर्ग करने की घड़ी आ गई है। यह कोई यात्रा के लिए यात्रा नहीं थी, आकाश में मंडराते रहना ही उनका उद्देश्य नहीं। बंजर जमीन को उपजाऊ बनाना, समुद्र ने जो धन उसे सौंपा है उसे धरती को सौंप देना–यही तो है वह मिशन जिसके लिए समुद्र ने उसे भेजा था। अगर वह बरसता नहीं तो उसका फेरा बेकार हो जाएगा।

पहले छोटी–छोटी बुंदनियाँ, फिर मुसलधार वृष्टि। मेघ झकोर–झकोर कर बरस रहे हैं। बिजली भी कड़कती है। पौधे झुक–झूम रहे हैं, वृक्ष डोल रहे हैं। आकाश से इतना सारा पानी कैसे बरस सकता है। बादलों ने इतना सारा बोझ कैसे उठा रखा होगा ? फटते बादलों के बीच सूरज की लुकाछिपी का दृश्य कितना मोहक लगता है। रही–सही कमी इन्द्रधनुष पूरी कर देता है। हवा कितनी स्वच्छ और मादक लग रही है।

मेरे लिए वर्षा–ऋतु का आकाश यानी आर्ट–गैलेरी । बादल मानों आकाश में टँगी कलाकृतियाँ ! जीवन से धड़कती, ऊपर से कूदती, नदी–नालों को छलकाती धरा को शीतलता प्रदान करती, मैदानों को हरा–भरा करती और अपने आपको निछावर करती सजीव कलाकृतियाँ !

वर्षा यानी विराट नाटय–प्रस्तुति। पहला अंक खेला जाता है समुद्र में, दूसरा आकाश के मंच पर और तीसरा धरती पर। वर्षा का फलक कितना विशाल है–पहले असीम सागर फिर अतल आकाश और अंत में विस्तृत धरती। लाखों वर्ग किलोमीटर तक फैला मंच ! कितने घनिष्ठ हैं आकाश और पृथ्वी के बीच के बंधन।

प्राचीन काल में कृषि पूरीतरह से वर्षा पर आधारित थी। एक वर्षा से दूसरी वर्षा तक के समय को लोग वर्ष मानते थे। वर्ष शब्द वर्षा से बना है। इजिप्त में वर्षा नहीं होती। वहाँ की कृषि नील नदी की बाढ़ पर आधारित थी। वे एक बाढ़ से दूसरी बाढ़ तक के समय को वर्ष मानते थे। वर्षा और बाढ़ ने पंचांग को जन्म दिया।

पानी का चंचल रूप है नदी। यह वह जीवन–रेखा है जो अपने कछार में बसे लोगों को जीवनदायी जल प्रदान करती है। जिस भूमि पर केवल वर्षा के जल से खेती होती है उसे देव मातृक और जो जमीन केवल वर्षा के भरोसे न रहकर नदी के पानी से सिंचित होती है उसे नदी मातृक कहा गया है। उन दिनों नदी का पानी मछलियों से लबालब रहता था। नदी–तट पर बसने का यह बहुत बड़ा आकर्षण था। वह एकमात्र आहार था जो बारहों महीने मिलता था। पीने के पानी, खाने के लिए मछली और खेती के लिए उपजाऊ मिट्टी (जो नदी बाढ़ के समय बहाकर लाती है)पहले के लोगों के लिए इससे बड़ा वरदान भला और क्या हो सकता था। नदी के कारण कृषि संभव हुई। जो शिकारी था, वह किसान बन गया। उसे शिकार की भागदौड़ से मुक्ति मिली। वह एक जगह घर बसा कर कला, धर्म, अध्यात्म, विज्ञान और साहित्य की ओर अग्रसर हो सका। मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ आया।

हजारों वर्षो से मनुष्य नदी की ओर खिंचता चला आया है। केवल इसिलए नहीं कि वह हमारी और हमारे खेतों की प्यास बुझाती है, बल्कि इसलिए भी कि वह हमारी आत्मा को भी तृप्त करती है। संस्कृति का जन्म होता है। संसार की सभी प्रमुख संस्कृतियों का जन्म नदियों की कोख से हुआ है। भारतीय संस्कृति गंगा की देन है।

अंत में नदी समुद्र से जा मिलती है। पानी जहाँ से चला था, वापस वहीं पहुँच गया। नदी कभी समाप्त न होने वाली एक निरंतर रचना है, एक ऐसी शक्ति जो नित्य पुनर्जीवित होती रहती है।

समुद्र से बादल, बादल से वर्षा, वर्षा से नदी, नदी पुनः समुद्र में !

किन्तु ,नदी एक अस्थिर मित्र है।

हजारों वर्षो से वर्षा–ऋतु में नदी–तट के निवासियों को बाढ़ का प्रकोप भी झेलना पड़ता था। नदी का पानी उफन पड़ता और तट–बंधों को तोड़ता हुआ गाँव के गाँव बहा ले जाता।

आदमी और नदी के बीच यह लड़ाई चलती रहती। कभी एक पक्ष की जीत होती तो कभी दूसरे की. लोग अपने घरौंदे बनाते और नदी उन्हें नष्ट कर देती। लोंग इस लड़ाई से उकता गए। आखिर उन्होंने नदी पर बाँध बनाना सीख लिया।

हमारे पास आज उतना ही पानी है, जितना हजार साल पहले था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से उसकी माँग बेतहासा बढ़ गई है। आजादी के समय हमारी आबादी 25 करोड़ से थोड़ी ज्यादा थी । आज 100 करोड का आँकडा पार कर चुकी है।

बाँध हमारी मजबूरी है। आबादी को पुनः 25 करोड़ पर ला दीजिए, फिर नए बाँध बनाना तो दूर, पुराने बाँधों को भी तोड़ दीजिए।

हजारों वर्षो से मनुष्य पानी का संग्रह करता आया है -कुँओं,तालाबों और बावड़ियों के रूप में। बाँध उसी शृंखला में नई कड़ी है।

आर्द्रता, कुहरा, बिजली, ओस सभी पानी के विभिन्न रूप हैं।

प्राय: सभी देश अपनी नदियों के पानी का भरपूर उपयोग करना चाहते हैं । जब कोई नदी कई देशों में से होकर बहती है, तो वह विवाद का कारण बनती है। हरेक देश को लगता है कि दूसरा देश ज्यादा पानी ले लेता है। मध्य-पूर्व कई छोटे-छोटे देशों में बँटा है। नदी-विवाद वहीं सबसे ज्यादा है। टर्की और ईराक के बीच यूक्रेटिस के पानी को लेकर, ईराक और सीरिया के बीच भी इसी नदी को लेकर, इजरायल और पेलेस्टाइन के बीच भूगर्भ जल को लेकर और इजरायल और जार्डन के बीच बाँध की जगह को लेकर झगड़े चलते रहते हैं। कहते हैं कि मध्य-पूर्व में अगर युद्ध होता, तो तेल को लेकर नहीं, पानी को लेकर होगा। इस झगड़ों के कारण पानी का समुचित उपयोग नहीं हो पाता और व्यर्थ समुद्र में चला जाता है।

हमारे देश में तो प्रान्तों के बीच ऐसे ही झगड़े चल रहे हैं। नर्मदा को लेकर मध्यप्रदेश और गुजरात के बीच का विवाद प्राय: सुलझ गया है, किन्तु कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच गोदावरी को लेकर विवाद चल रहा है।

संभवत: पूरे विश्व में पानी का सर्वाधिक सूझ-बूझ के साथ उपयोग करनेवाला देश है इजरायल। इस देश का 60 प्रतिशत भाग रेगिस्तानी है। लेकिन यहाँ के इंजीनियरों ने रेगिस्तानी क्षेत्र पर हरियाली के कालीन बिछा दिये हैं। इजरायल जमीन से पानी की आखिर बूँद तक निचोड़ लेता है। कभी यह नवोदित राष्ट्र पानी की दृष्टि से कंगाल था। लेकिन वहाँ के जल इंजीनियरों ने पता लगाया कि यहाँ की भूमि में चट्टानी परतों के नीचे 30 अरब घनमीटर पानी के विशाल भंडार पड़ा हैं। इनमें से एक भूमध्य सागरीय तट के नीचे था। उन्होंने न केवल इन भंडारों से पानी निकाला बल्कि नहरों और पाइपों की जल संवाहक प्रणाली भी स्थापित की। इसके लिए उन्हें पाइप औप पंप उद्योग स्थापित करने पड़े।

वहाँ के इंजीनियर पानी को मन चाही दिशा में ही नहीं, जमीन के ऊपर या नीचे कहीं भी भेज सकते हैं। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की है कि जमीन बरसाती पानी को पूरी तरह से सोख लेती है, जो अन्यथा समुद्र में चला जाता। बरसात के पानी को रोककर वे भूमिगत भंडारों को फिर से जलपूरित करने में भी समर्थ हुए हैं।

पानी की किफायतशारी के क्षेत्र में इजरायल की सबसे बड़ी देन है ड्रिप इरिगेशन या टपकन सिंचाई विधि, जिस में प्लास्टिक के पाइप में बने छिद्रों द्वारा पानी सीधे पौधे की जड़ों पर टपकाया जाता है। पौधों को उतना ही पानी दिया जाता है जितना की जरूरी होता है। इस पद्धति से सिंचाई करके किसानों ने उतने ही पानी में अपनी पैदावार दोगुनी या इससे भी ज्यादा कर ली है।

अब तो हमारे देश में भी इसका पर्याप्त प्रचार हो गया है।

आज संसार में जटिल और खतरनाक से खतरनाक रासायनिक पदार्थ पैदा हो रहे है। इन्हें इधर-उधर फेंक देने या नदियों में बहा देने के घातक परिणाम होंगे। कल-कारखानों के अलावा बड़े शहर भी अपना मल-मूत्र नदियों के हवाले करते हैं। हम नदियों में लगातार जहर घोल रहे हैं। खेतों में किसान जिन कीट-नाशकों का छिंड़काव करते हैं, देर-सबेर वे भी नदियों में पहुँचते हैं। इनमें से कुछ जहरीले रसायन बरसों बाद भी प्रभावहीन नहीं होते। अमरीका में डीडीटी पाउडर पर प्रतिबेध लगने के बीस बरस बाद भी वह मिसीसिपी के पानी में पाया गया। मिसीसिपी में पकड़ी गई टनों मछलियाँ इसलिए नष्ट कर देनी पड़ी क्योंकि उनके शरीर में पीसीबी नामक जहरीला रसायन पाया गया. जो पक्षी इन मछलियों को खाते थे, जैसे पेलिकन, वे मर गये। ये भोजन के साथ मनुष्यों के शरीर में और माँ के दूध के जरिए शिशु के शरीर में पहुँचते हैं। नदी में घुले रसायन कॉलेरा, टायफाइड और दस्त जैसी बीमारियाँ फैलाते है। दूषित पेय-जल देश में, विशेष रूप से गाँवों में, फैलने वाले रोगों का सबसे बड़ा कारण है। जहरीले रसायनों के कारण पानी का एक बहुत बड़ा भाग ऑक्सीजन- रहित हो जाता है। ऐसी स्थिति में लाखों मछलियाँ ऑक्सीजन न मिलने के कारण दम घुटने से मर जाती हैं।

रसायनों, उर्वरकों, कीटनाशकों, कारखानों के अशोधित अवशिष्टों और शहरों के हजारों टन अशोधित मल-मूत्र के कारण नदियाँ विषाक्त हो रही हैं। कारखानों से निकलने वाला टनों मलबा भी नदियों में झोंका जाता है। यह आत्मघाती कदम है।

कभी लोग नदियों के साथ सामंजस्य से रहा करते थे। जब मनुष्य असभ्य था, तब नदियाँ स्वस्थ और स्वच्छ थीं। आज जब मनुष्य सभ्य हो गया है तो नदियाँ मलिन और विषाक्त हो गई हैं। उन दिनों नदियों में स्वयं अपनी सफाई करने की क्षमता थी। परन्तु बढ़ते हुए, प्रदूषण के कारण नदी अपनी यह क्षमता खोती जा रही है। जल-प्रदूषण के विरूद्ध रण-भेरी बजाने का समय आ गया है।

एक ओर हम अपनी धरती को विकृत कर रहे हैं, पर्यावरण को क्षति पहुँचा रहे हैं और नदियों को विषाक्त कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर अन्य देशों के लोग धरती का चेहरा बदल रहे है। वे जंगल उगा रहे हैं, नदियों को साफ कर रहे हैं, और रेगिस्तानों में पानी ला रहे हैं। क्या हम यह नहीं कर सकते ? आखिर इस धरती पर हम मेहमान ही तो हैं। हमारे आगमन समय यह जैसी थी, अगर जाते समय कुछ और अच्छी न बना सके, तो कम-से-कम खराब करके तो न जाएँ।

शब्दार्थ-टिप्पण

प्रतीक्षा इंतजार **आबादी** बस्ती, जनसंख्या **आहार** भोजन, सामग्री **कछार** नदी के किनारे की उपजाऊ जमीन **जटिल** उलझा हुआ **बंजर** परती **आधिपत्य** कब्जा, अधिकार **उद्वेलि** छलकाना **सर्जक** रचयता, बनानेवाला **प्लावित** डुबाना **उत्सर्ग** बलिदान **फलक** केनवास, पहलू **मातृक** माता-संबंधी **जलपूरित** जल से भरना **मलिन** गंदा, दूषित **क्षति** हानि, नुकशान

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) चैतन्य महाप्रभु कहाँ समा गए ?

(2) समुद्र का पानी भाप कैसे बनता है ?

(3) समुद्र मंथन के अंत में क्या मिला ?

(4) मानसून की प्रतीक्षा कौन-कौन करते है ?

(5) बादलों का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

(6) पंचांग को जन्म किसने दिया ?

(7) हमारी आत्मा को कौन तृप्त करता है ?

(8) लोग वर्ष किसे मानते थे ?

(9) पानी के विभिन्न स्वरूप क्या-क्या है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) आज भी हमारा पालन पोषण कौन कर रहा है ? कैसे ?

(2) इजिप्त में खेती किस नदी पर आधारित है क्यों ?

(3) आदमी और नदी के बीच क्या लड़ाई चलती रहती है ?

(4) समुद्र की मछलियां किस कारण से मर जाती हैं ?

(5) नदियाँ विषाक्त क्यों हो गई हैं ?

(6) बादल कैसे बनते हैं ?

3. विस्तार से उत्तर दीजिए :

(1) मानसून बनने की प्रक्रिया समझाइए।

(2) 'नदी लोगों की जीवन रेखा है' समझाइए।

(3) नदी विवाद का रूप कब धारण करती है ?

(4) इजरायल की सिंचाई पद्धति के बारे में समझाइए।

(5) 'इजरायल ने पानी का सूझबूझ के साथ उपयोग किया है' सविस्तार समझाइए।

4. सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए।

(1) मनुष्य -------की ओर खिंचता चला आता है।

(A) घन (B) नदी (C) संस्कृति (D) घर

(2)----जीवन रेखा है।

(A) सम्पति (B) नदी (C) माता (D) पिता

(3) नदी-------से मिलती है।

(A) समुद्र (B) नाला (C) नहर (D) तालाब

(4) कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच -----नदी का विवाद है।

(A) नर्मदा (B) गंगा (C) कावेरी (D) सिंधु

(5) भारतीय संस्कृति--------की देन है।

(A) गंगा (B) यमुना (C) नर्मदा (D) कावेरी

5. नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :

दिल धड़कना, न्योच्छावर करना, दम घुटना

6. विपरीतार्थक शब्द लिखिए :

जटिल, प्राचीन, आर्द्रता, चंचल

7. पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) पानी का चंचल रूप है नदी। यह वह जीवन रेखा है, जो अपने कदार में बसे लोगों को जीवनदायी जल प्रदान करती है।

(2) समुद्र में ब्रह्मा भी है, विष्णु भी। वह हमारा सर्जक भी है और पालक भी।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी **'**नदियों का महत्व**'** 10 वाक्यों में लिखें ।
- **'**नर्मदा बोलती है**'**...... विषय पर 20 वाक्यों में निबंध लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक विद्यार्थियों को **'**पर्यावरण का महत्त्व**'** समझाइए ।
- शिक्षक नदियों को शुद्ध करने के उपाय सूचित करें।
- **'**एक बाढ़ पीड़ित की आत्मकथा**'** विषय पर वर्ग में चर्चा करें।

•

13 महाराजा का इलाज

यशपाल

(जन्म : सन् 1903 ई . ;निधन: सन् 1976 ई.)

प्रेमचंदोत्तर युगीन कथाकार यशपाल का जन्म पंजाब की फिरोजपुर छावनी में हुआ था। लाहौर से उच्च शिक्षा प्राप्त कर वे, स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गए। वीर भगतसिंह और चन्द्रशेखर के साथ रहकर क्रांतिकारी दल के सदस्य बन गए। अंग्रेज सरकार ने उन्हें बंदी बनाकर राजद्रोह की मुकदमा भी चलाया था। जेल में भी वे सृजन कार्य करते रहे। उन्होंने **'विप्लव'** नामक पत्रिका का संपादन भी किया।

मार्क्सवादी चिंतन से प्रभावित यशपाल अपनी एक स्वतंत्र पहचान बनाने में सफल रहे। पूंजीवादी समाज-व्यवस्था का विरोध करते हुए वे शोषण मुक्त समाज का पूरजोर समर्थन करते हैं। रूढ़ियों और अंध विश्वासों की कटु आलोचना वे बराबर करते रहे। दादा कॉमरेड, देशद्रोही, दिव्या, अमिता और झूठा सच उनके प्रमुख उपन्यास हैं। अभिशप्त, भष्मावृत चिनगारी, फूलों का कुर्ता उनके कहानी संग्रह हैं। 'सिंहावलोकन' क्रांतिकारी जीवन-गाथा से संबंधित वृहद् ग्रंथ हैं। उन्हें 'देव पुरस्कार' 'सोवियेत लेण्ड नेहरू पुरस्कार ' तथा 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया था।

प्रस्तुत कहानी में एक महाराजा के राजरोग के इलाज की घटना का मार्मिक चित्रण है। मोहाना रियासत के महाराजा के रोज के निदान के लिए देश-विदेश से डॉक्टर आते हैं, उनके शरीर का परीक्षण करते और एक कक्ष में मिलकर अपना अभिप्राय प्रकट करते। ये क्रम नौ वर्ष से चल रहा था, पर न महाराज की पीड़ा में अंतर आता और न उनके जकड़े हुए घुटनों में किसी प्रकार की गति आ पाती। उपचार हेतु पहुँचे डॉक्टर संघटिया ने जब भरी सभा में कहा कि बंबई में मेड्कल कॉलेज के एक मेहतर को ठीक इसी प्रकार घुटने जकड़ जाने और मानसिक पीड़ा का जुस्साध्य रोग --तब अभिजात्य पर प्रहार होने से क्रोधवश महाराजा खड़े हो गए और क्रोध से थुथलाते हुए चीख पड़े। महाराजा की जो बीमारी बड़े-बड़े डॉक्टर ठीक न कर सके वह मेहतर का नाम मात्र सुनने से उत्पन्न क्रोध में से दूर हो गई। असाध्य रोग का यह साइकोसेमटिक इलाज हास्य और व्यंग दोनों की सहज अनुभूति कराता है।

उत्तर प्रदेश की जागीरों और रियासतों में मोहाना की रियासत का बहुत नाम था। रियासत की प्रतिष्ठा के अनुरुप ही महाराज साहब मोहाना की बीमारी की भी प्रसिद्धि हो गई थी।

जिला कोर्ट की बार में, जिला मेजिस्ट्रेट के यहाँ और लखनऊ के गवर्नमेंट हाउस तक में महाराजा की बीमारी की चर्चा थी। युद्धकाल में महाराजा को गवर्नर के यहाँ से युद्धकोष में चंदा देने के लिए पत्र आया था। महाराजा के सेक्रेटरी ने पच्चीस हजार रुपये के चेक के साथ पत्र में महाराजा की असाध्य बीमारी की चर्चा लेकर खेद प्रकट किया था कि इस रोग के कारण महाराजा सरकार की उचित सेवा के अवसर से वंचित रह गये हैं।

गवर्नर के सेक्रेटरी ने महाराजा की भेंट के लिए धन्यवाद देकर गवर्नर की ओर से महाराज की बीमारी के प्रति चिंता और सहानुभूति भी प्रकट की थी। वह पत्र काँच लगे चौखट में मढ़वाकर महाराज के ड्राइंग रूम में रख दिया गया था। ऐसा ही एक पोस्टकार्ड महात्मा गांधी के हस्ताक्षरों में और एक पत्र महामना मदनमोहन मालवीय का भी महाराजा की बीमारी के प्रति चिंता और सहानुभूति का विशेष अतिथियों को दिखाया जाता है।

महाराज को साधारण लोग-बाग की तरह कोई साधारण बीमारी नहीं थी। देश और विदेश से आये हुए बड़े-से-बड़े डॉक्टर भी उनकी बीमारी का निदान और उपचार करने में मुँह की खा गये थे। लोगों का विचार था कि चिकित्साशास्त्र के इतिहास में एसा रोग अब तक देखा-सुना नहीं गया। ऐसे राज-रोग को कोई साधारण आदमी झेल भी कैसे सकता था।

महाराजा गर्मियों में प्रतिवर्ष मंसूरी में जाकर रियासत की कोठी में रहते थे। कोठी की अपनी रिक्शायें थी। रिक्शा खींचने वाले कुलियों नीली वर्दियों पर मोहाना स्टेट के बिल्ले, चमचमाते पीत्तल के लगे रहते थे। महाराजा जब कभी कोठी में से रिक्शे पर बहार निकलते तो रिक्शा खींचनेवाले चार कुलियों के साथ, बदली के लिए अन्य चार कुली भी साथ-साथ दौड़ते चलते। सावधानी के लिए महाराजा के निजी डॉक्टर घोड़े पर सवार रिक्शे के पीछे रहते थे।

सितम्बर के महीने में, महाराज के पहाड़ से अपनी रियासत या लखनऊ की कोठी पर लौटने से पहले मंसूरी में डॉक्टरों के मेले की धूम मच जाती थी। मंसूरी के सब बड़े-बड़े होटलों में कुछ दिन पेश्तर ही कमरों के कई सूट या कमरे तीन दिन के लिए सुरक्षित करवा लिये जाते थे। तीन-चार बड़े-बड़े बंगले भी किराये पर लिये जाते । इसी तरह डॉक्टरों के लिए रिक्शायें और बढ़िया घोड़े भी सुरक्षित कर लिये जाते। लोग-बाग न होटलों में स्थान पा सकते न उन्हें सवारियाँ मिल पाती। बात फैल जाती

कि महाराज मोहाना को देखने के लिए देश भर से बड़े-बड़े डॉक्टर आ रहे हैं।

यह सब डॉक्टर महाराज के शरीर की परीक्षा और उनकी बीमारी का निदान करने के लिए बुलाये जाते थे। सब डॉक्टर बारी-बारी से महाराज की परीक्षा कर चुकते तो महाराज की बीमारी के निदान का निश्चय करने के लिए डॉक्टरों का एक सम्मेलन होता और फिर डॉक्टरों की सम्मिलित राय से महाराज की बीमारी पर एक बुलेटिन प्रकाशित किया जाता था। सब डॉक्टर अपनी फीस, आने-जाने का किराया और आतिथ्य पाकर लौट जाते परंतु महाराजा के स्वास्थ्य में कोई सुधार न होता। न महाराज के ह्दय और सिर की पीडा में अंतर आता और न उनके जुड़ गये घुटनों में किसी प्रकार की गति आ पाती। यह क्रम नौ वर्ष से इसी प्रकार चल रहा था।

उस वर्ष बम्बई-मेडिकल कालेज के प्रसिध्ध डॉक्टर कोराल को भी महाराजा मोहाना के रोग के लिए मैसूर में आयोजित डॉक्टर-सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण भेजा गया था। डॉक्टर कोराल तीन वर्ष पूर्व भी एक बार इस सम्मेलन में सम्मिलित होकर अपनी फीस और आतिथ्य स्वीकार कर आये थे। इस वर्ष भी इस प्रसंग में मंसूरी की सैर कर आने में उन्हें आपत्ति न होती, परंतु भारत सरकार ने डॉक्टर कोराल को अमरीका जानेवाले डॉक्टरों के शिष्टमंडल में नियुक्त कर दिया था। शिष्टमंडल महाराज मोहाना केनिमंत्रण कि तिथि से पूर्व ही बम्बई से जा रहा था। प्राय: एक वर्ष, पूर्व ही डॉक्टर संघटिया बियाना में काफी समय अनुसंधान का कार्य कर बम्बई मेडिकल कालेज में लौटे थे। डॉक्टर संघटिया अनेक रोगों का इलाज **'**साइकोसोमेटिक**'**(मानसिक उपचार)प्रणाली के माध्यम से कर रहे थे।

डॉक्टर कोरेल ने महाराज मोहाना के निमंत्रण के उत्तर में सुझाव दिया था कि डॉक्टर संघटिया के नये अनुसंघान का प्रयोग महाराज के उपचार के लिए करके परिणाम देखा जाना चाहिए।

महाराज के यहाँ भी बियाना से न ये डॉक्टर के आने की बात से उत्साह अनुभव किया गया और डॉक्टर संघटिया के नाम निमंत्रण भेज दिया गया।

डॉक्टर संघटिया निश्चत समय पर बम्बई से मंसूरी पहुँचे। उन्हें एक बहुत बड़े होटल में पूर्व सुरक्षित स्थान पर टिका दिया गया। दूसरे दिन महाराज की कोठी से एक घुड़सवार जाकर उन्हें रियासत के रिक्शे पर कोठी लिवा ले गया। जिस समय डॉक्टर संघटिया आये, कोठी के ड्राईंग रुम में एक अमेरिकन और एक भारतीय डॉक्टर भी मौजूद थे।

महाराज मोहाना के सेक्रेटरी ने विनय से डॉक्टर संघटिया को सुचना दी कि उनसे पहले आये डॉक्टर महाराज की परीक्षा कर लें तो वे भी महाराज की परीक्षा करने की कृपा करेगें। तब तक वे कुछ ड्रिंक स्वीकार करें।

डॉक्टर संघटिया ने बहुत ध्यान से दो घंटे से अधिक समय तक रोगी की परीक्षा की। पिछले वर्षीं में महाराज के रोग के निदान के संबंध में प्रकाशित डॉक्टरों के बुलेटिन देखे।

दो दिन और तीसरे दिन मध्याह से पूर्व तक निमंत्रित डॉक्टर बारी-बारी से महाराज की परीक्षा करते रहे। सभी डॉक्टरों को महाराज के अंग-प्रत्यंग के एक्सरे फोटो के एलबम भेंट किये गये थे।

तीसरे दिन दोपहर बाद बत्तीसों डॉक्टरों की एक सभा का आयोजन किया गया था।

कोठी के बडे हॉल में कुर्सियो के बत्तीस जोड़े अंडाकार लगाये गये थे, जैसे विशेषज्ञों की कॉनफेरेन्सो की प्रणाली है। प्रत्येक मेज पर एक डॉक्टर का नाम लिखा था। और मेज पर उस डॉक्टर का नाम और उपाधि सहित छपे हुए कागज मौजूद थे। सभी मेजों पर बहुत कींमती फाउन्टेन पेन और पेंसिल के सेट केसों में सजे हुए थे। कलमों, पेंसिलों और केसों पर भी खुदा हुआ था-**'**महाराज मोहाना की ओर से भेंट**'**। डॉक्टरों के बैठने का क्रम अंग्रेजी वर्णमाला में डॉक्टरों के नाम के पहले अक्षर के क्रम के अनुसार था।

डॉक्टरों से अनुरोध किया गया था कि वे अपनी परीक्षा और निदान के संबंध में परस्पर विचार कर अपना मंतव्य लिख लें। इसके पश्चात् महाराज सभा में उपस्थित होकर डॉक्टरों की राय सुनेंगे।

डॉक्टरों के सत्कार के लिए चाय-कॉफी, व्हिसकी--जिन, फलों के रस और हलके-फुलके आहार का भी प्रबंध था। डॉक्टर लोग प्राय: एक धंटे तक चाय, काफी, व्हिसकी, जिन की चुस्कियाँ लेते, आपस में बात-चीत करते अपने मंतव्य लिखते रहे।

साढ़े चार बजे महाराज साहब को एक पहिए वाली आराम कुर्सी पर हाल में लाया गया। महाराज के चेहरे पर रोगी की उदासी और दयनीय चिंता नहीं, असाधारण दुर्बोध रोग के बोझ को उठाने का गर्व और गंभीरता छायी हुई थी।

महाराज के दार्यी ओर से डॉक्टरों ने क्रमश: परीक्षा और निदान के संबंध में अपनी-अपनी राय दी और उसके अनुकूल उपचार के सुझाव देने आरंभ किये।

दो डॉक्टरों ने महाराज को उपचार के लिए न्यूयार्क जाकर विद्युत चिकित्सा करवाने की राय दी। एक डॉक्टर का विचार था कि महाराज को एक वर्ष तक चेकोस्लोवाकिया में **'**कालोंविवारी**'** के चश्में में स्नान करना चाहिए। सोवियेत का भ्रमण करके आये एक डॉक्टर का सुझाव था कि महाराज को काले समुद्र के किनारे **'**सोची**'** में **'**मातस्यस्ता**'स्त्रोत** के जल से अपना इलाज करवाना चाहिए।

महाराज गंभीर मौन से डॉक्टरों की राय सुन रहे थे।

सत्ताईशवें नंबर पर डॉक्टर संघटिया से अपना विचार प्रकट करने का अनुरोध किया गया।

डॉक्टर संघटिया उठे-**'**महाराज के शरीर की परीक्षा और रोग के इतिहास के आधार पर मेरा विचार है कि महाराज का यह रोग साधारण शारीरिक उपचार द्वारा दूर होना दुस्साध्य होगा----**'**

महाराजने नये युवा डॉक्टर की विज्ञता को समर्थन में एक गहरा श्वास लिया, उनकी गर्दन जरा और ऊँची हो गई। महाराज ध्यान से ये नये डॉक्टर की बात सुनने लगे।

डॉक्टर संघटिया बोले-**'**मुझे इस प्रकार के एक रोगी का अनुभव है। कई वर्ष से बंबई में मेडिकल कालेज के एक मेहतर को ठीक इसी प्रकार घुटने जुड़ जाने और ह्दय तथा सिर की पीड़ा का दुस्साध्य-रोग**'**

'चुप बत्तमीज।**'**

सब डॉक्टरों ने सुना और वे विस्मय से देख रहे थे कि महाराज पहिए लगी आराम कुर्सी से उठकर खडे हो गये थे।

महाराज के वर्षों से जुडे घुटने काँप रहे थे और उनके होंठ क्रोध में फड़फड़ा रहे थे, आँखें सुर्ख थीं।

'निकाल दो बाहर बदजात को**;** हमको मेहतर से मिलाता है ? निकाल दो बदजात को, डॉक्टर बना है।**'** महाराज क्रोध से झुंझलाते हुए चीख पड़े।

महाराज सेवकों द्वारा हॉल से कुर्सी पर ले जाये जाने की प्रतीक्षा न कर काँपते हुए पाँवों से हाल के बाहर चले गये।

दूसरे डॉक्टर पहले विस्मित रह गये, फिर उन्हें अपने सम्मानित व्यवसाय के अपमान पर क्रोध आया और साथ ही उनके होठों पर मुस्कान भी फिर गई।

डॉक्टर संघटिया ने सबसे अधिक मुस्कराकर कहा, **'**खैर, जो हो, बीमारी का इलाज तो हो गया।**'**

शब्दार्थ-टिप्पण

वर्दी गणवेश, पहनावा **पेश्तर** पहले से **निदान** परीक्षण, जाँच **बदजात** नीची जाति का **विज्ञता** ज्ञान **अनुसंधान** खोज **मध्याह्न** दोपहर **अंग-प्रत्यंग** प्रत्येक अंग **सोची** एक स्थान का नाम **मातस्यस्ता** झरने का नाम **दुस्साध्य** मुश्किल से ठीक होने वाले **मेहतर** हलालखोर, एक प्रकार का मुस्लिम भंगी

मुहावरा

मुँह की खाना--हार जाना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) महाराज ने युद्धकोष में कितनी रकम दी ?

(2) गवर्नर ने महाराज की बीमारी के प्रति अपनी संवेदना कैसे प्रकट की ?

(3) महाराज की बीमारी को लेकर लोगों की क्या धारणा थी ?

(4) महाराज गर्मियों में कहाँ रहते थे ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) महाराज मोहाना की बीमारी केनिदान हेतु क्या निश्चय किया गया ?

(2) महाराज की बीमारी पर बुलेटिन कब प्रकाशित किया जाता था ?

(3) बड़े-बड़े लोगों ने महाराज के प्रति अपनी सहानुभूति किस प्रकार प्रकट की ?

(4) डॉक्टरों के जाने के बाद महाराज की बीमारी में कोई अन्तर क्यों नहीं आया ?

3. सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) मंसूरी में डॉक्टर संघटिया के आतिथ्य किस प्रकार किया गया ?

(2) डॉक्टरों की सभा का आयोजन किस प्रकार किया गया था ?

(3) डॉक्टर संघटिया ने महाराज के सम्मुख क्या विचार प्रक्ट किया ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) खैर, जो हो, बीमारी का इलाज तो हो गया।

(2) रियासत की प्रतिष्ठा के अनुरूप ही महाराज साहब मोहाना की बीमारी की भी प्रसिद्धि हो गई थी।

5. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

मुँह की खाना, इठलाना

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

प्रतिष्ठा, अवसर, वंचित, आपत्ति, निश्चय, गर्व, विस्मित, खेद

7. विलोम शब्द लिखिए :

साध्य, ऊँची, बाहर, सम्मान, उचित, बढ़िया, रोगी

8. सही विकल्प चुनकर एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1)मोहाना रियासत किस प्रदेश में थी ?

(A) मध्यप्रदेश (B) राजस्थान (C) उत्तर प्रदेश (D) बिहार

(2) महाराज पहाड़ से अपनी रियासत या लखनऊ की कोठी पर किस महीने में लौटते थे ?

(A) सितंम्बर (B) अक्तूबर (C) नवम्बर (D) डिसम्बर

(3) डॉक्टर संघटिया रोगों का इलाज किस प्रणाली के माध्यम से कर रहे थे ?

(A) यूनानी (B) एलोपैथिक (C) होमियोपैथिक (D) सायकोसोमेटिक

(4) डॉ. संघटिया ने महाराज के रोग की तुलना किसके रोग के साथ की ?

(A) व्यापारी (B) मेहतर (C) अफ्सर (D) नौकर

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- महाराज के रोग के संदर्भ में हुई मंसूरी मेडिकल कॉन्फेरेन्स के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- झूठा सच उपन्यास पढ़कर उसका सार बच्चों को सुनाएँ।

•

14 दो गज़लें

सुल्तान अहमद
(जन्म : सन् 1948 इ.)

नई पीढ़ी के इस समर्थ एवं सशक्त कवि-गजलकार की कर्मभूमि और जन्मभूमि अहमदाबाद है। आर्थिक समस्याओं से संघर्ष करते हुए इन्होंने गुजरात विश्व विद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्रथम श्रेणी में तथा पीएचडी की उपाधिप्राप्त की। हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में इनकी कविताएँ, गजलें तथा समीक्षात्मक लेख नियमित प्रकाशित होते रहते हैं। सामाजिक प्रतिबद्धता, आम आदमी के प्रति संवेदनशीलता, सहानुभूति, समकालीन विसंगतियों-अंतर्विरोधों की सही पहचान तथा साकगोई इनकी रचनाओं की विशेष पहचान है। भाषा और शिल्प के प्रति सजगता इनकी विशिटता है।

इनके अब तक दो गजल-संग्रह **'खामोशियों में बन्द ज्वालामुखी'** और **' नदी की चीख'** प्रकाशित है। **'कलंकित होने से पूर्व',** **'उठी हुई बांहों का समुद्र'** इनके काव्य संग्रह, **'दीवार के इधर-उधर'** इनकी लम्बी कविता, **'लंका की परछाइयाँ '** (खण्ड काव्य)तथा **'हिन्दी गजल में मीन मेख'**(समीक्षा ग्रन्थ) इनकी बहुचर्चित रचनाएँ हैं। 1996 में इन्हें परिवेश सम्मान से सम्मानित किया गया है।

प्रस्तुत दोनों गजले **' नदी की चीख'** से उद्धृत की गई है। प्रथम गजल में शहर की भीड़ से घिरे मनुष्य की तनहाई, उसके अकेलेपन और खुद में ही सिमट कर रह जाने की मानसिकता पर कटाक्ष किया है। भले ही तब अपने अपने मार्ग पर चलें, लेकिन आदमी-आदमी के बीच की दीवार का ढहाना जरूरी है। दूसरी गजल में शाायर ने कर्जा को लेकर चल रही बहस निरर्थक कटार देते हुए, उसके यथार्थ में आने की अपेक्षा कर रहा है। संकीर्णता का त्याग, उदारता ही हमें भय से मुक्ति का मार्ग दिखा सकती है।

1

शहर में होने की तन्हा आदमी लाचार है,
इक तो ज्यादा भीड़ उस पर गर्म ये बाज़ार है।

पूछते हो हाल क्या तुम? जाके खुद ही देख लो,
चल रहा है तेज़ पर सारा नगर बीमार है।

हम हज़ारों बार अपनी बात समझाए मगर,
क्या करें उनका हक़ीक़त से जिन्हें इनकार है।

अब जरूरी हो गया है हौसले से तोड़ना,
आदमी और आदमी के बीच जो दीवार है।

हम नहीं कहते जिधर से हम चले, वो भी चलें,
जग उठें किरनें हमें तो बस यही दरकार है।

2

दरख्त़ बोले, ख़िज़ाँ है कबसे ? कभी चमन में फ़जा भी आए,
अगर चली है हवा फ़जा की, कोई तो पत्ता हरा भी आए ।

उजाड़ चेहरे, उदास गलियाँ, ये सहमी सड़कें, खिचीं हवाएँ,
लरज उठे हैं तमाम बस्ती कोई जो मद्धिम सदा भी आए ।

बहस लुटेरों की हरकतों पर छिड़ी हुई है न जाने कबसे
लुटे घरों को ये फिक्र है अब बहस का कुछ फैसला भी आए ।

सभी से ऊँचा, सभी से बढकर मकाँ बनाना तो देख लेना,
कहीं बचा है वो कोना जिसमें कोई तुम्हारे सिवा भी आए ।

उमस, अंधेरा, घुटन, उदासी ये बंद कमरों की खूबियाँ हैं,
खुली रखे गर ये खिड़कियाँ तो कहीं से ताजा हवा भी आए ।

शब्दार्थ टिप्पण

शह्य नगर **तन्हा** तनहा **एकाकी** अकेला **हकीकत यथार्थ** असलियत, वास्तविकता **दरकार** आवश्यक, अपेक्षित **खिजा** पतझर, **दरख्त** पेड **फ़ज़ा** खुला हरा मैदान, बहार **लरजना** थरथराना, काँपना **मद्दिम** धीमी, मंद **फिक्र** चिंता **सदा** प्रतिध्वनि, आवाज **मकाँ** मकान **गर** यदि

स्वाध्याय

1. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) शहर में आदमी की क्या लाचारी है ?
(2) शायर आदमी-आदमी के बीच की दीवार किस तरह तोडने को कह रहा है ?
(3) शायर की लोगो से क्या अपेक्षा है ?
(4) लुटें घरों को किस बात की चिंता है ?
(5) पूरी बस्ती कब थरथरा उठती है ?

2. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) शहरी व्यक्तियों के अकेलेपन के कौन-से कारण हैं ?
(2) पूरा शहर क्यों बीमार है ?
(3) दरख़्तों की क्या ख्वाहिशें हैं ?
(4) मकान बनाते समय शायर किस बात की हिदायत दे रहा है ?
(5) बंद कमरों के दुष्प्रभाव को कैसे कम किया जा सकता है ?

3. सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) हम नहीं कहते जिधर से हम चलें, वो भी चलें
(2) अगर चली है हवा फजा की, कोई तो पत्ता हरा भी आए ।
(3) उमस, अँधेरा, घुटन, उदासी ये बंद कमरों की खूबियाँ है ।

4. दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए :

दरख्त, खिजाँ, फजा, बस्ती, मकाँ, तन्हा, हकीकत, दरकार

5. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

खिजाँ, हकीकत, तेज, इनकार, जरुरी

विद्यार्थी-प्रवृति

- सुल्तान अहमद की अन्य गजलें पुस्तकालय से ढूंढ़कर पढ़िए ।
- चित्रा, जगजीत सिंह या गुलाम अली (छोटे) की गजलें (गाई हुई) सुनिए ।

शिक्षक-प्रवृति

- गजल के शिल्प-मतला, शेर, बहर, मक्ता आदि की प्राथमिक जानकारी दीजिए ।
- रदीफ काफिया पहचानना सिखलाइए ।

•

द्वितीय सत्र

15 भारतीय संस्कृति

आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
(जन्म : सन् 1907 ई . निधन : सन् 1979 ई.)

हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म बलिया (उ.प्र.) जिले के 'दुबे का छपरा' नामक गाँव में हुआ था । आरंभिक शिक्षा संस्कृत में हुई। उन्होंने काशी हिन्दू विश्व विद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की । उनकी साहित्यिक प्रतिभा के विकास में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ के शांतिनिकेतन का अमूल्य योगदान रहा । जहाँ वे 1940 से 1950 तक हिन्दी विभाग में अध्यक्ष एवं प्रोफेसर रहे, बाद में इसी पद पर पंजाब विश्व विद्यालय, चंड़ीगढ़ गए । निबंध उपन्यास एवं समीक्षा के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान है ।

द्विवेदीजी के निबंध विद्धता और सरसता, गंभीरता तथा विनोदमयता, प्राचीनता ओर अर्वाचीनता, व्यक्ति एवं लोक का अद्‌भुत समन्वय है । 'अशोक के फूल','कल्पलता', 'आलोक पव ', और 'कुंटज',प्रमुख निबंध संग्रहों के अतिरिक्त 'चारुचंद्रलेख', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', तथा 'अनामदास का पोथा' उनकी यशस्वी औपन्यासिक कृतियाँ हैं । भारत सरकार ने उन्हें 'पद्‌मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया ।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने भारतीय संस्कृति की उस समन्वयशील प्रवृति का परिचय दिया है, जो सारग्राही है । संस्कृति का अर्थ है 'सर्वोत्तम-चिन्तन-मनन' वह जो मनुष्य को पशु-सुलभ धरातल से ऊपर उठाकर दृढतापूर्वक मानवता के सिंहासन पर स्थापित करती है । इस्लाम के आगमन पर उसे नयी चुनौती का सामना करना पड़ा पर कबीर, नानक जैसे संत कवियों ने कुछ कुछ उन दूरियों को दूर किया था । परंतु फिरसे एकबार अंग्रेजों के आगमन से पुन: वैमनस्य बढ़ने लगा, पाश्यात्य संस्कृति जिसे भौतिकवादी संस्कृति के रुप में है ।

भारतीय संस्कृति के बारे में मेरा विचार कुछ इस प्रकार है । भारतवर्ष का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है । इसका जितना हिस्सा जाना जा सका है, उससे कहीं अधिक भाग अभी भी ठीक-ठीक जाना नहीं जा सका है । वह पण्डितों के अनुमान का ही विषय है परन्तु इतना निश्चित है कि यह संस्कृति विकासशील रही है । आर्य, द्रविड़, किरात, हूण, शक आदि अनेक जातियाँ के विश्वास और रीति-नीतिं इसमें मिलते रहे हैं । बहुत-सी नयी कल्पनाएँ जुड़ती रही हैं । इस प्रकार जिस संस्कृति में कभी इन्द्र, वरुण आदि देवताओं का प्राधान्य था, यज्ञ-याग का बाहुल्य था उसमें दूसरे समय शिव, विष्णु आदि देवताओं का प्राधान्य हो गया और पूजा-पाठ तीर्थ-व्रत आदि का प्राधान्य हो गया । यह एक उदाहरण मात्र है परंतु बहुत से प्राचीन विश्वास जीते रहे है और नयी मान्यताओं को इस प्रकार आत्मसात कर गयी है मानो वे अनादिकाल से चले आ रहे हों । कुछ लोग ऐसा समझते हैं कि भारतवर्ष के इतिहास में जो कुछ जब कभी हुआ है, वह सब भारतीय संस्कृति है, कुछ दूसरे लोग ऐसा सोचते हैं कि वे जितना कुछ तात्कालिक परिस्थिति में उचित और ग्राह्य समझते हैं, वही भारतीय संस्कृति है परन्तु दोनों ही दृष्टियाँ मुझे ठीक नहीं लगतीं। संस्कृति मेरे मन से सर्वोच्च चिन्तन-मनन के मूर्त रूप का नाम है । मूर्त में जिस प्रकार मन्दिर मूर्ति, चित्रकला आदि बातें आती हैं, उसी प्रकार कविता, नाटक, संगीत, धर्म, शिष्टाचार भी आते हैं । जहाँ कहीं फार्म या रूप हैं वही मेरे विचार से मूर्त हैं। परन्तु सभी मूर्त रुप या आधार संस्कृति नहीं हैं। किसी देश या काल के सर्वोतम चिन्तन-मनन को ही मैं उस देश या काल संस्कृति कहता हूँ। भारतवर्ष ने अपने विशाल इतिहास के दौरान बहुत कुछ सोचा है, अच्छा भी, कम अच्छा भी और कभी-कभी गलत भी। सबकी मूर्त रुप की गणना मैं ' ' संस्कृति' में नहीं करता। मैं उनको ही भारतीय संस्कृति में गिनता हूँ जो सर्वोत्तम हैं। अर्थात मनुष्य को पशु-सुलभ धरातल से अधिक-से-अधिक ऊपर उठाने में और मानवता के सिंहासन पर अधिक से अधिक दृढतापूर्वक बैठाने में समर्थ हैं। जो बातें मनुष्य को जड़ता की ओर और पशु-सुलभ स्वार्थ, लोभ-मोह और जुगुप्क्षित आचरण की ओर ले जानेवाली हैं, उन्हें मैं संस्कृति का प्रतिपन्थी मानता हूँ। इस श्रेष्ठ मानवीय प्राप्ति को भारतीय संस्कृति इसलिए कहता हूँ कि वे भारतीय सन्दर्भ में भारतीय मनीषियों द्‌वारा पुरस्कृत हैं। इसलिए नहीं की किसी अन्य देश की इसी श्रेणी से वे भिन्न या विरुद्ध हैं।

इस भारतीय संस्कृति के दीर्घकालीन इतिहास ने कुछ आधारभूत मान्यता का अनुसन्धान किया है। हर व्यक्ति को, देवता हो चाहे दानव, पुरुष हो या स्त्री, अपने किये का फल भोगना पड़ता है। इसे कर्मफल का सिद्धांत कहते हैं। फिर इस कर्मफल को भोगने के लिए मनुष्य अनेक जन्म ग्रहण करता है, जब तक वह सम्पूर्ण फल भोग नहीं लेता तब तक उसका निस्तार नहीं होता। यह पुनर्जन्म का सिद्धांत है। मनुष्य की दृष्टि जब तक तप, भक्ति, सेवा, समाधि, व्रत, अध्ययन आदि द्वारा संक्षेप में योग द्वारा शुद्ध नहीं होती तब तक वह प्राणी आवागमन के जाल से मुक्त नहीं होता। यह आवागमन ही भव या संसार है। ये कुछ ऐसे सामान्य स्वीकृत तथ्य हैं जो भारतवर्ष के हर मत और हर सम्प्रदाय में स्वीकृत हैं। विदेशी विद्वानों ने तो पुनर्जन्म के सिद्धांतों को भारतीय संस्कृति का लक्षण माना है। संसार में कहीं भी यह बात नहीं पायी जाती। बद्धमूल होने की तो बात ही कहाँ उठती है। बौद्ध और जैन धर्मो के आन्दोलन में भी इन बातों को ज्यों का त्यों मान लिया है। यही कारण है कि धीरे-धीरे ये मत विशाल संस्कृतिधारा के अभिन्न अंग बन गये हैं। बुद्ध और वृषभ भी विष्णु के अवतार बन गये हैं। बाहर से आनेवाली जातियों से कई बार संघर्ष हुआ पर अन्ततोगत्वा मूल सामान्य मान्यताएँ सबने मान लीं और भारतीय संस्कृति की टूट धारावाहिक नहीं हुई। रवीन्द्रनाथ भी कह सकते हैं कि बीच-बीच में वीणा के तार टूट अवश्य गये थे, थोड़ी देर के लिए संगीत में बाधा भी पड़ी थी, पर इस बात को लेकर हाय-हाय करने की क्या जरुरत है।

इस्लाम के आने पर भारतीय संस्कृति को एक नयी चुनौती का सामना करना पड़ा। यह धर्म नये ढंग का था। मैंने अन्यत्र दूसरी चर्चा की। संक्षेप में चुनौती का स्वरूप सामाजिक अधिक था, धार्मिक और दार्शनिक कम।

भारतवर्ष में कई कारणों से सोन्मुखता शुरु हो गयी थी। भारतीय संस्कृति की पाचन शक्ति शिथिल हो गयी थी। फिर नयी संस्कृति प्राणों के पार वेग को लेकर चली थी। पुराना उच्छल प्राणावेग हुए देश में अत्यन्त क्षीण हो आया था। फिर भी पहले धक्के को संभालने के बाद कुछ-न-कुछ नयी जीवनी लक्ष्य का उन्मेष हुआ होगा।

भारतवर्ष ने इस चुनौती का सामना भक्ति आनन्दोत्सव के द्वारा किया था। कबीर और नानक आदि के प्रयत्न बड़े शक्तिशाली थे। पर इतिहास की गति दूसरी ओर मुड़ गयी। अँग्रेजों के आने के बाद इस समन्वय के मार्ग में बाधा पड़ी और उनकी कूटनीतियों के कारण समन्वय की धारा तो रुक ही गयी, नये दरार पड़ने लगे। मेरा विश्वास है कि नयी संस्कृति न आ गयी होती तो इस्लाम का भी कुछ न कुछ समन्वय हो गया होता। होना शुरु हो चुका था। मैं उन लोगों से सहमत नहीं हूँ कि ये दोनों संस्कृतियाँ एक हो ही नहीं सकती थीं। हो रही थीं। बहुत कुछ हो आयी थीं।

आप जिसे पाश्चात्य संस्कृति कहते हैं वह कभी इस नाम से पुकारी अवश्य जाती थी, परन्तु थी वह आधुनिक संस्कृति। मैं समझता हूँ कि आप भी मानेंगे कि विज्ञान और प्रविधिशास्त्रीय उत्थान ने मनुष्य को पुराने हजारों वर्षों के इतिहास से अलग कर दिया है। अब संस्कृति भौगोलिक सीमाओं द्वारा परिचित नहीं होगी। भूगोल की सीमाएँ लड़खड़ा गयी हैं, टूट भी रही है। एक नयी मानवीय संस्कृति पैदा हो रही है। पाश्चात्य देशों में इसका प्रथम आविर्भाव होने के कारण इसे पाश्यात्य संस्कृति कहा जाता है पर वह आधुनिक वैज्ञानिक अभ्युत्थान की देन। भारतीय संस्कृति इसे समृद्ध करेगी। जिन छोटी-मोटी भौगोलिक या सामाजिक इकाइयों का अभी तक आत्मसात् करते या होते होंगे, सुना गया है उनसे यह एकदम भिन्न प्रकृति की है, यह मनुष्य के नये युग में प्रवेश करने के कारण स्पष्ट हुई है। पुराने अनुभव इसे समृद्ध और सशक्त बनाएँगे। इतिहास ही बतायेगा कि भारतीय संस्कृति का कितना अंश यह स्वीकार करेगी। मै इस समय केवल अनुमति कर सकता हूँ। इस अनुमति में मेरी रुचि और मेरे संस्कार भी काम करते हैं और मेरी इतिहास की थोड़ी-बहुत जानकारी भी। मै समझता हूँ कि भारतीय मनीषा के बहुमुखी अनुभव से यह नयी संस्कृति बहुत अधिक समृद्ध होगी।

शब्दार्थ-टिप्पण

अनुमान अंदाज **विस्मृति** भूली हुई **बाहुल्य** अधिकता **संगति** मेल **धरातल** पृथ्वी की सतह **सिंहासन** राजा का आसन **जुगुप्क्षित** घृणित **अंततोगत्वा** खिर में **चुनौती** ललकार **ह्यासोन्मुखता** पतनशीलता **दरार** एकताभंग

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) भारतवर्ष की संस्कृति कितनी पुरानी है ?

(2) भारत में कौन-कौन सी प्राचीन जातियों के रीत-रिवाज मिलते हैं ?

(3) लेखक ने संस्कृति किस कहा है ?

(4) लेखक संस्कृति का प्रतिपंथी किसे मानता है ?

(5) कर्मफल का सिद्धांत किसे कहते हैं ?

(6) प्राणी आवागमन के जाल से कब तक मुक्त नहीं होता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों मे लिखिए :

(1) भारतीय संस्कृति ने नई मान्यताओं को किस तरह से आत्मसात् किया है ?

(2) भौगोलिक सीमाएँ कैसे टूट रही हैं ?

(3) भारतीय संस्कृति कैसे समृद्ध होगी ?

(4) विज्ञान और प्रौद्योगिकी का मानव पर क्या असर पड़ा है ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) भारतीय संस्कृति विकासशील रही है। समझाइए ।

(2) भारतीय संस्कृति सर्वोत्तम क्यों मानी जाती है ?

(3) भारतीय संस्कृति की आधारभूत मान्यता विस्तारपूर्वक समझाइए।

(4) आधुनिक संस्कृति को पाश्यात्य संस्कृति क्यों कहा गया है ?

(5) इस्लाम की चुनौती का स्वरूप सामाजिक अधिक था, धार्मिक और आर्थिक कम - समझाइए ।

(6) वे कौन-कौन सी मान्यताएँ हैं, जिन्हें भारत में हर मत और संप्रदाय के लोग स्वीकार करते हैं ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) हर व्यक्ति को, देवता हो चाहे दानव, पुरुष हो या स्त्री अपने किये का फल भोगना पड़ता है ।

(2) संस्कृति मेरे मन से सर्वोच्च चिन्तन-मनन के मूर्तिरूप का नाम है।

5. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

चुनौती देना, आत्मसात् करना, शिथिल होना

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

धरातल, मूर्ति, दृष्टि, विस्मृत, चुनौती, पुराना

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

प्राचीन, नया, बहुत, मूर्त, अविश्वास, सामाजिक, परिचित, स्वीकार

8. निम्नलिखित शब्दों का संधि विग्रह कीजिए :

प्राणावेग, आनंदोत्सव, अनादि, सर्वोत्तम

9. विग्रह करके समास भेद बताइए :

ठीक-ठीक, चिन्तन-मनन, कर्मफल, आवागमन, पशु-सुलभ

10. प्रत्यय अलग करके लिखिए :

शास्त्रीय, वैदिक, उन्मुखता, दृढ़तापूर्वक, भारतीय, धारावाहिक

11. सही विकल्प चुनकर एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) भारतवर्ष का इतिहास कितने वर्ष पुराना है ?

(A) तीन (B) दस (C) पचास (D) हजारों

(2) इनमें से विष्णु का अवतार कौन नही है ?

(A) शंकर (B) बुद्ध और वृषभ (C) कृष्ण (D) राम

(3) इनमें से कोन-सी भारतीय संस्कृति की आधारभूत मान्यताओं में है ?

(A) मूर्तिपूजा (B) कर्मफल (C) अस्तित्ववाद (D) नास्तिकता

(4) भारतीय संस्कृति ने इस्लामी संस्कृति की चुनोती का सामना कैसे किया ?

(A) तलवार से (B) सत्याग्रह से (C) भक्ति आंदोलन से (D) चुपचाप

विद्यार्थी-प्रवृति

- देखे गए किसी ऐतिहासिक स्थल का वर्णन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृति

- ऐतिहासिक स्थल के प्रवास का आयोजन कीजिए ।
- आनंदी और लालबहादुर के बीच की घटना को संवाद के रूप में लिखिए ।

•

16 बिहारी के दोहे

बिहारी
(जन्म : सन् 1546 ई. निधन: सन् 1664 ई.)

रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारी का जन्म ग्वालियर के निकट बसुआ-गोबिंदपुर नामक गाँव में हुआ था। कहा जाता है कि बिहारी का परिचय बादशाह शाहजहाँ से था। ये जयपुर के महाराज जयसिंह के राज्याश्रित कवि थे। विषय-वासना में लिप्त महाराजा को जब कोई समझाने का साहस नहीं कर सका तब बिहारी ने एक दोहा **'नहि पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल'** लिखकर भेजा तो वह बहुत प्रभावित हुआ था। इस रचना से प्रसन्न होकर महाराजा ने इन्हें प्रत्येक दोहे पर एक अशर्फी देना स्वीकार किया था।

इनकी एक मात्र रचना है, 'बिहारी सतसई'। सतसई का अर्थ है सात सौ दोहों (मुक्तकों) का संग्रह। बिहारी के दोहों को पढ़कर यह कहना स्वाभाविक प्रतीत होता है कि दोहे जैसे छोटे-से छंद में सीमित रहकर भी बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है। बिहारी मुख्यत: शृंगारी कवि हैं परंतु इन्होंने अपने दोहों में भक्ति, नीति, दर्शन, गणित आदि अनेक विषयों का निरूपण कर अपनी बहुज्ञता का परिचय दिया है इनके दोहे कल्पना शक्ति एवं गहन अनुभूति के भंडार हैं जिनमें लोक एवं शास्त्र का अथाह ज्ञान भरा हुआ है।

यहाँ बिहारी के दस मुक्तक संकलित हैं। प्रथम मुक्तक में लोभ रूपी चश्में से देखने का परिणाम बताया है तो दूसरे दोहे में अन्य के हाथों में पड़कर काम करने में किसी प्रकार के जीवन की सार्थकता न होने की बात कही गई है। तीसरे दोहे में मनुष्य की और जल के पानी की तुलना की गई है और चौथे दोहे में 'कनक-कनक' के माध्यम से स्वर्ण एवं धतूरे की प्रकृति का उल्लेख है। पाँचवे दोहे में स्पष्ट किया है कि बुरे लोग सत्संग के संसर्ग में आकर भी अपना बुरा स्वभाव नहीं छोड़ते। छठे दोहे में भक्त ह्रदय की अनोखी दशा एवं सातवें - आठवें दोहों में नीति-विषयक भाव व्यक्त हुए हैं। अंतिम दो दोहों में बसंत-ऋतु में आम्र बौरों तथा माधवी लता पर गुंजार करते भ्रमर-समूह का वर्णन एवं भ्रमर और गुलाब की अन्योक्ति द्वारा सीख दी गई है।

रनित भृंग-घटावली, झरित दान मधु-नीर ।
मंद-मंद आवत चल्यौ, कुंजरु-कुंज-समीर ॥1॥

तन्त्री नाद कबित-रस, सरस राग, रति रंग ।
अनबूडे़ बूडे़, तरे, जे बूडे़ सब अंग ॥2॥

घरु घरु डोलत दीन व्हवै, मुनि जनु जाचतु जाइ ।
दियैं लोभ-चसमा चखनु, लघु पुनि बड़ौ लखाइ ॥3॥

कनक कनक तैं सौगुनी मादकता अधिकाय ।
अहिं खायें बौराइ जग, इहिं पाये बौराइ ॥4॥

स्वारथु , सुकृतु न, श्रम बृथा, देखि बिहंग बिचारि ।
बाज, पराए पान परि, तू पंछि जिनु न मारि ॥5॥

प्रलय करन बरषन लगे, जुरि जलंधर इकसाथ ।
सुरपति गरबु हरयौ हरषिं गिरिधर गिरि धर हाथ ॥6॥

नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ ।
जेतौ नीचौ हवै चलै, तेतौ ऊँचो होइ ॥7॥

छकि रसाल-सौरभ सने, मधुर माधवी-गन्ध ।
ठौर-ठौर झूमत झपत भौंर झौंर मधु-अन्द ॥8॥

इहीं आस अटक्यौ रहतु, अलि गुलाब कैं भूल ।
हवै हैं फेरि बसन्त ऋतु , इन डारनु वे फूल ॥9॥

दिन दस आदरु पाइ कै करि, लै आपु बखानु ।
जौ लगि काग! सराद पखु, तो लगि तौ सनमानु ॥10॥

अरे हंस, या नगर मैं, जैयौ आपु बिचारि ।
कागनि सौं जिन प्रीति करि, कोकिल दई बिडारी ॥11॥

संगति, सुमति न पावहीं, परे कुमित के धंध ।
राखो मेलि कपूर में, हींग न होति सुगंध ॥12॥

शब्दार्थ-टिप्पण

दीनह्वै गरीब होकर **जन-जन** प्रत्येक व्यक्ति को **जाँचत** याचना **लोभ-चसमा** लोभ रूपी चश्मा **स्वारथ** अपना हित **सुकृत** पुण्य कार्य **विहंग** पक्षी **पान** पाणि, हाथ **गति** चाल, स्वभाव **जोय** देखकर **कनक**-सोना, धातू **मादकता** उन्माद, नशा **बौराय** पागल हो जाना **कुमित** खोटी बुद्धि **धंध** चक्कर **मेलि** मिलाकर, रखो **तंत्रीनाद** वीणा का स्वर **कवित्त-रस** कविता का रस **रतिरंग** स्त्री के साथ प्रेम प्रसंग **अनबूड़े** जो डूबे नहीं **बूड** निमग्न **तरे** उद्धार हो गया **बखान** प्रशंसा **सराध** पखु **श्राद्ध** पक्ष **बिडारि** छोड़ देना **रसाल** आम फल **छकि** तृप्त होकर **सौरभ सने** गन्ध से युक्त **माधवी** वासन्ती का पुष्प पौधा **झंपत** ढंक लेते हैं **झौंर** समूह **अटक्यौ** अटकहुआ **अलि** भौंरा **मूल** जड **बहुरि** फिर

अभ्यास

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

(1) लोभ रुपी चश्मा लगाने पर क्या परिणाम आता है ?
(1) सुमति किस प्रकार प्राप्त हो सकती है ?
(1) एक कनक से दूसरे कनक को अधिक मादक क्यों कहा गया है ?
(1) तीसरे दोहे में कवि ने किनकी गति को समान कहा है ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक -दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) बिहारी के दोहे में ऐसी कौन-सी बातें हैं जिनमें डूबने पर ही उनकी अनुभूति होती है ?
(2) बिहारी कौए के दृष्टांत द्वारा क्या समझाना चाहते हैं ?
(3) भौंरा गुलाब के मूल में क्यों अटका हुआ है ?
(4) कवि हंस को किस तरह के नगर में जाने से मना करता है ?

2. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि बिहारी के बारे में आप क्या जानते हैं ?
(2) नर और नल नीर में क्या समानता है ?
(3) 'कनक-कनक' में प्रयुक्त कवि के अभिप्राय को स्पष्ट कीजिए।
(4) 'सुमित' और 'कुमति' के बारे में अपने विचार प्रकट कीजिए।

3. भाव - सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(1) राखो मेलि कपूर में, हींग न होति सुगंध ।

(2) अनबूड़े बूड़े तरे जे बूड़े सब अंग।

(3) जेतौ नीचौ ह्य चले, तेतौ ऊँचो होय ।

4. निम्नलिखित शब्दों के मानक हिन्दी रूप लिखिए :

चसमां, स्रम, सनमानु, सराध, जैतो, आस, गरबु, हरषि, स्वारथु

5. समानार्थी शब्द लिखिए :

वृथा, मधु, सुगंध, पंछी, लघु, दीन, आदर

6. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) तंत्रीनाद कवित्त रस , सरस राग-----रंग ।

(A) रति (B) मति (C) गति (D) भक्ति

(2) ------की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ ।

(A) आदमी (B) नर (C) मनुष्य (D) व्यक्ति

(3) इहीं आस अटक्यौं रहतु, अलि------कैं मूल ।

(A) कमल (B) मोगरा (C) जूही (D) गुलाब

(4) सुगंध का समानार्थी शब्द चुनकर लिखें।

(A) खुश्बू (B) संगीत (C) लज्जा (D) पवन

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'गागर में सागर' उक्ति को बिहारी के संदर्भ में समझिए।
- अपने पुस्तकालय में जाकर बिहारी के अन्य दोहे पढ़िए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहीं विकास इहिं काल' दोहे के साथ जुड़ी हुई जनश्रुति के बारे में विद्यार्थी को बताएँ।
- विद्यार्थियों को 'दयाराम सतसई,' 'मतिराम सतसई' की भी जानकारी दें।

•

17 अपना-अपना भाग्य

जैनेन्द्रकुमार

(जन्म : सन् 1904 ई. मृत्युः सन् 1990 ई.)

हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद जैनेन्द्रकुमार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म अलीगढ़ जिले के कौड़ियागंज कस्बे में हुआ था। आरंभिक शिक्षा जैन गुरुकुल हस्तिनापुर में हुई। महात्मा गांधी के आवाह्न पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़कर वे राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़े। उनके चिंतन और साहित्य पर गांधीजी के सिद्धांतों का प्रभाव पड़ा। इनकी कहानियों और उपन्यासों में मानव-मन का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। इन्हें हिन्दी में मनोवैज्ञानिक कथा के आरंभ का श्रेय प्राप्त है। जैनेन्द्रजी की कहानियाँ सोदेश्य हैं। उनकी भाषा बड़ी सटीक और सजीव है।

'वातायन' 'एक रात' 'दो चिड़िया' 'फांसी' 'नीलम देश की राजकन्या' और 'ध्रुवयात्रा' आदि इनके प्रमुख कहानी संकलन हैं। 'परख' 'सुनीता' 'त्यागपत्र' 'कल्याणी' 'जयवर्द्धन' तथा 'मुक्तिबोध' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। इन्हें 'भारत-भारती' पुरस्कार, 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' तथा 'पद्मभूषण' सम्मान से अलंकृत किया गया।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने व्यंगपूर्ण ढंग से यह बताना चाहा है कि जो लोग समृद्ध-संपन्न हैं, सुख-सुविधाभोगी हैं वे समाज के गरीबों की समय पर सहायता नहीं करतें, पर बाद में उनके करुण अंत पर यह सोचकर अपने को तसल्ली देते हैं कि उनका भाग्य ही ऐसा था।

बहुत कुछ निरुद्देश्य घूम चुकने पर हम सड़क के किनारे बेंच पर बैठ गए। नैनीताल की संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी। रुई के रेशे-से भाप के बादल हमारे सिरों को छू-छूकर बेटोक घूम रहे थे। हल्के प्रकाश और अँधियारी से रंगकर कभी वे नीले दीखते, कभी सफेद और फिर जरा अरुण पड़ जाते, जैसे हमारे साथ खेलना चाह रहे हों।

पीछे हमारे पोलोवाला मैदान फैला था। सामने अंग्रेजो का एक प्रमोद-गृह था, जहाँ सुहावना, रसीला बाजा बज रहा था और पार्श्वमें था वही सुरम्य अनुपम नैनीताल।

ताल में किश्तियाँ अपने सफेद पाल उडा़ती हुई एक-दो अंग्रेज यात्रियों को लेकर, इधर से और उधर से इधर खेल रही थीं। कहीं कुछ अंग्रेज एक-एक देवी सामने प्रतिस्थापित कर, अपनी सुई-सी शक्ल की डोंगियों को मानो शर्त बाँधकर सरपट दौडा़ रहे थे। कहीं किनारे पर कुछ साहब अपनी बंसी डाले, सधैर्य, एकाग्र, एकस्थ, एकनिष्ठ मछली-चिन्तन कर रहे थे।

पीछे पोंलो-लॉन में बच्चे किलकारियाँ मारते हुए हाकी खेल रहे थे। शोर, मार-पीट, गाली-गलौज भी जैसे खेलका ही अंश था। इस तमाम खेल को उतने क्षणों का उदेश्य बना, वे बालक अपना सारा मन, सारी देह, समग्र बल और समूची विद्या लगाकर मानो खतम कर देना चाहते थे। उन्हें आगे की चिन्ता न थी, बीते का खयाल न था। वे शुद्ध तत्काल के प्राणी थे। वे शब्द की सम्पूर्ण सच्चाई के साथ जीवित थे।

सड़क पर से नर-नारियों का अविरत प्रवाह आ रहा था और जा रहा था। उसका न ओर था, न छोर। यह प्रवाह कहाँ जा रहा था और कहाँ से आ रहा था, कौन बता सकता था? सब तरह के लोग उसमें थे, मानो मनुष्यता के नमूनों का बाज़ार सजकर सामने से इठलाता निकला चला जा रहा हो।

अधिकार-गर्व में तने अंग्रेज उसमें थे और चिथड़ों से सजे, घोड़ों की बाग थामे, वे पहाड़ी उसमें थे, जिन्होंने अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान को कुचलकर शून्य बना लिया था और जो बड़ी तत्परता से दुम हिलाना सीख गए थे।

भागते, खेलते, हँसते, शरारत करते, लाल-लाल अंग्रेज बच्चे थे और पीली-पीली आँखे फाड़े, पिता की उँगली पकड़कर चलते हुए अपने हिन्दुस्तानी नौनिहाल भी थे।

अंग्रेज पिता थे, जो अपने बच्चो के साथ भाग रहे थे, हँस रहे थे और खेल रहे थे। उधर भारतीय पितृदेव भी थे। जो बुजुर्गी को अपने चारों तरफ लपेटे, धन-सम्पन्नता के लक्षणों का प्रदर्शन करते हुए चल रहे थे।

अंग्रेज रमणियाँ थीं, जो धीरे-धीरे नहीं चलती थीं, तेज़ चलती थीं। उन्हें न चलने में थकावट आती थी, न हँसने में लाज आती थी। कसरत के नाम पर वे घोड़े पर भी बैठ सकती थीं, और घोड़े के साथ ही साथ, जरा जी होते ही, किसी-किसी हिन्दुस्तानी पर कोड़े भी फटकार सकती थीं। वे दो-दो, तीन-तीन, चार-चार की टोलियों में नि:शंक, निरापद इस प्रवाह में मानो अपने स्थान को जानती हुई, सड़क पर चली जा रही थीं।

उधर हमारी भारतकी कुललक्ष्मियाँ, सड़क के बिलकुल किनारे दामन बचाती और सँभालती हुई, साड़ी की तहों में सिमट-सिमटकर, लोकलाज, स्त्रित्व और भारतीय गरिमा के आदर्श को अपने परिवेष्टनों में छिपाकर सहमी-सहमी, धरती में आँखें गाड़े, कदम-कदम बढ़ रही थीं।

इसके साथ ही भारतीयता का एक और नमूना था। अपने कालेपन को खुरच-खुरचकर बहा देने की इच्छा करनेवाले अंग्रेजी-दाँ पुरुषोत्तम भी थे, नेटिवों को देखकर मुँह फेर लेते थे और अंग्रेज को देखकर आंखें बिछा देते थे और दुम हिलाते थे। वैसे वे अकड़ के साथ कुचल-कुचलकर चलने का उन्हें अधिकार मिला है।

घण्टे के घण्टे सरक गए। अन्धकार गाढ़ा हो गया। बादल सफेद होकर जम गए। मनुष्यों का वह ताँता एक-एक कर क्षीण हो गया। अब इक्का-दुक्का आदमी सड़क पर छतरी लगाकर निकल रहा था। हम वही के वहीं बैठे थे। सर्दी-सी मालूम हुई। हमारे ओवरकोट भीग गए थे।

पीछे फिरकर देखा। वह, लॉन बर्फ की चादर की तरह बिलकुल स्तब्ध और सुन्न पड़ा था।

सब ओर सन्नाटा था। तल्लीताल की बिजलीकी रोशनियाँ दीप-मालिका-सी जगमगा रही थीं। वह जगमगाहट दो मील तक फैले हुए प्रकृति के जल-दर्पण पर प्रतिबिम्बित हो रही थीं और दर्पण का काँपता हुआ, लहरें लेता हुआ, वह जल प्रतिबिम्बों को सौ गुना, हज़ार गुना करके, उनके प्रकाश को मानो एकत्र और पुंजीभूत कर के व्याप्त कर रहा था। पहाड़ों के सिर पर की रोशनियाँ तारों-सी जान पड़ती थीं।

हमारे देखते-देखते एक घने पर्दे ने आकर इन सब को ढँक दिया। रोशनियाँ मानो मर गई। जगमगाहट लुप्त हो गई। वे काले-काले भूत-से पहाड़ भी इस सफेद पर्दे के पीछे छिप गए। पास की वस्तु भी न दीखने लगी। मानो यह घनीभूत प्रलय था। सब कुछ इस घनी गहरी सफेदी में दब गया। एक शुभ्र महासागर ने फैलकर संस्कृति के सारे अस्तित्व को डुबो दिया। ऊपर-नीचे, चारों तरफ वह निर्भेद्य, सफेद शून्यता ही फैली हुई थी।

ऐसा घना कुहरा हमने कभी न देखा था। वह टप-टप टपक रहा था।

मार्ग अब बिलकुल निर्जन, चुप था। वह प्रवाह न जाने किन घोंसलों में जा छिपा था।

उधर बृहदाकार शुभ्र शून्य में कही से ग्यारह बार टन-टन हो उठा। जैसे कहीं दूर कब्र में से आवाज़ आ रही हो।

हम अपने-अपने होटलों के लिए चल दिए।

रास्ते में दो मित्रों का होटल मिला। दोनों वकील-मित्र छुट्टी लेकर चले गए। हम दोनों आगे बढ़े। हमारा होटल आगे था।

ताल के किनारे-किनारे हम चले जा रहे थे। हमारे ओवरकोट तर हो गए थे। बारिश नहीं मालूम होती थी, पर वहाँ तो ऊपर-नीचे हवा के कण-कण में बारिश थी। सर्दी इतनी थी कि सोचा, कोट पर एक कम्बल और होता तो अच्छा होता।

रास्ते में ताल के बिलकुल किनारे पर एक बेंच पड़ी थी। मैं जी में बेचैन हो रहा था। झटपट होटल पहुँचकर इन भीगे कपडों से छुट्टी-पा, गरम बिस्तर में छिपकर सो रहना चाहता था, पर साथ के मित्र की सनक कब उठेगी, कब थमेगी-- इसका पता न था। उन्होनें कहा--'आओ, जरा यहाँ बैठें।'

हम उस चूते कुहरे में रात के ठीक एक बजे तालाब के किनारे उस भीगी बर्फ-सी ठंडी हो रही लोहे की बेंच पर बैठ गए।

पाँच, दस, पन्द्रह मिनट हो गए। मित्र के उठने का कोई इरादा न मालूम हुआ। मैंने झुँझलाकर कहा-''चलिए भी..''

''अरे, जरा बैठो..........''

हाथ पकड़कर जरा बैठने के लिए जब जोर से बैठा लिया गया, तो और चारा न रहा। सनक से छुटकारा पाना आसान न था और जरा बैठना भी 'जरा' न था।

चुपचाप बैठे तंग हो रहा था, कुढ़ रहा था कि मित्र अचानक बोले-''देखो वह क्या है ?''

मैंने देखा कि कुहरे की सफेदी में कुछ ही हाथ दूर से एक काली-सी मूर्ति हमारी तरफ आ रही थी। मैंने कहा- ''होगा कोई।''

तीन गज की दूरी से दीख पड़ा, एक लड़का, सिर के बड़े-बड़े बाल खुजलाता चला आ रहा था। नंगे पैर, नंगे सिर, एक मैली-सी कमीज लटकाए।

पैर उसके न जाने कहाँ पड़ रहे थे, और वह न जाने कहाँ जा रहा था, कहाँ जाना चाहता था, न दायाँ था, न बायाँ था। पास की चुंगी की लालटेन के छोटे-से प्रकाश-वृत्त में देखा- कोई दस-बारह बरस का होगा। गोरे रंग का है, पर मैल से काला पड़ गया है, आँखें अच्छी, बड़ी पर सूनी हैं। माथा जैसे अभी से झुरियाँ खा गया है। वह हमें न देख पाया, वह जैसे कुछ भी न देख रहा था। न नीचे की धरती, न ऊपर चारों ओर फैला हुआ कुहरा, न सामने का तालाब, और न एकाकी दुनिया। वह बस अपने निकट वर्तमान को देख रहा था ।

मित्र ने आवाज दी-- ''ए !
उसने अपनी सूनी आँखें फाड़ दीं।
दुनिया सो गई है, तू ही क्यों घूम रहा है ?''
''बालक मूक, फिर बोलता हुआ-सा चेहरा लेकर खड़ा रहा।
''कहाँ सोएगा ?''
''यहीं-कहीं।''
''कल कहाँ सोया था ?''
''दुकान पर।''
''आज वहाँ क्यों नहीं ?''
''नौकरी से हटा दिया।''
''क्या नौकरी थी ?''
''सब काम, एक रुपया और जूठा खाना।''
''फिर नौकरी करेगा ?''
''हाँ।''
''बाहर चलेगा ?''
''“हाँ''
''आज क्या खाना खाया ?''
''कुछ नहीं।''
''अब खाना मिलेगा ?''
''नहीं मिलेगा।''
''यों ही सो जाएगा ?''
''हाँ।''
''कहाँ ?''
''यहीं-कहीं।''
''इन्हीं कपड़ों में ?''
बालक फिर आँखों से बोलकर मूक खड़ा था। आँखें मानो बोलती थीं- ''यह भी कैसा मूर्ख प्रश्न है !''
''माँ-बाप हैं ?''
''हाँ । पन्द्रह कोस दूर, गांव में।''
''तूं भाग आया ?''
''हाँ।''
''क्यों ?''
''मेरे कई भाई-बहन हैं, सो भाग आया। वहाँ काम नहीं, रोटी नहीं। बाप भूखा रहता था और मां भूखी रहती थी रोती थी, सो भाग आया। एक साथी और था। उसी गांव का था, मुझसे बड़ा। दोनों साथ यहाँ आए। वह अब नहीं है।''
''कहाँ गया ?''
''मर गया।''
बस जरा-सी उम्र में ही उसकी मौत से पहचान हो गई-मुझे अचरज हुआ, पूछा-''मर गया ?''
''हाँ, साहब ने मारा था, मर गया।''
''अच्छा, हमारे साथ चल।''
वह साथ चल दिया। लौटकर हम वकील दोस्त के होटल पहुँचे।
''वकील साहब !''

वकील साहब होटल के कमरे से उतरकर आए। काश्मीरी दुशाला लपेटे थे, मोजे चढ़े पैरों में चप्पलें थीं। स्वर में हलकी झुंझलाहट थी, कुछ लापरवाही थी।

''ओ हो, फिर आप! कहिए''

''आपको नौकर की जरूरत थी न, देखिए यह लड़का है।''

''कहाँ से लाए? इसे आप जानते हैं?''

''जानता हूँ, यह बेईमान नहीं हो सकता।''

''अजी, ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं। बच्चे-बच्चे में गुण छिपे रहते हैं- आप भी क्या अजीब हैं, उठा लाए कहीं से- लो जी, यह नौकर लो।''

''मानिए तो, यह लड़का अच्छा निकलेगा।''

''आप भी.....जी बस खूब हैं। ऐसे ऐरे-गैरे को नौकर बना लिया जाए और अगले दिन वह न जाने क्या-क्या लेकर चम्पत हो जाए ।''

''आप मानते ही नहीं, मैं क्या करूं।''

''मानें क्या खाक। आप भी....जी अच्छा मजाक करते हैं। अच्छा, अब हम सोने को जाते हैं।''

वह चार रुपया रोज के किराए वाले कमरे में सजी मसहरी पर सोने झटपट चले गए।

वकील साहब के चले जाने पर होटल के बाहर आकर मित्र ने अपनी जेब में हाथ डालकर कुछ टटोला। पर झट कुछ निराश भाव से हाथ बाहर कर वे मेरी ओर देखने लगे।

'क्या है?' मैंने पूछा।

'इसे खाने के लिए कुछ देना चाहता था' अंग्रेजी में मित्र ने कहा, 'मगर दस-दस के नोट हैं।'

'नोट ही शायद मेरे पास है, देखूँ ?'

सचमुच मेरे पाकिट में भी नोट ही थे।

हम फिर अंग्रेजी में बोलने लगे। लड़के के दाँत बीच-बीच में कटकटा उठते थे। कड़ाके की सर्दी थी।

मित्र ने पूछा--'तब?'

मैंने कहा--'दस का नोट ही दे दो।' सकपकाकर मित्र मेरा मुँह देखने लगे--'अरे यार ! बजट बिगड़ जाएगा। हृदय में जितनी दया है, पास में उतने पैसे तो नहीं हैं।'

'तो जाने दो, यह दया ही इस जमाने में बहुत है।'**--मैंने** कहा।

मित्र चुप रहे। जैसे कुछ सोचते रहे। फिर लड़के से बोले--'अब आज तो कुछ नहीं हो सकता। तू कल मिलना। वह 'होटल डी पब' जानता है? वहीं कल १० बजे मिलेगा?'

'हाँ, कुछ काम देंगे हजूर?'

'हाँ, हाँ, ढूंढ़ दूँगा।'

'तो, जाऊँ?' लड़के ने निराशा से पूछा।

'हाँ।' ठंडी साँस खींचकर मित्र ने कहा -- 'कहाँ सोएगा?'

'यहीं कहीं, बेंच पर, पेड़ के नीचे, किसी दुकान की भठ्ठी में !'

बालक कुछ ठहरा। मैं असमंजस में रहा। तब वह प्रेत गति से एक ओर बढ़ा और कुहरे में मिल गया। हम भी होटल की ओर बढ़े। हवा तीखी थी- हमारे कोटों कों पार कर बदन में तीर-सी लगती थी।

सिकुड़ते हुए मित्र ने कहा-''भयानक शीत है। उसके पास कम--बहुत कम कपड़े.......।''

''यह संसार है यार !'' मैंने स्वार्थ की फिलोसुफी सुनाई-**''**चलो पहले बिस्तर में गरम हो लो, फिर किसी और की चिन्ता करना।''

उदास होकर मित्र ने कहा-''स्वार्थ ! जो कहो, लाचारी कहो, निठुराई कहो-या बेहयाई ।''

दूसरे दिन नैनीताल स्वर्ग के किसी काले गुलाम पशु के दुलार का वह बेटा-वह बालक, निश्चित समय पर हमारे होटल-डि-पब में नहीं आया। हम अपनी नैनीताल-सैर खुशी-खुशी खत्म कर चलने को हुए। उस लड़के की आस लगाए बैठे रहने की जरूरत हमने न समझी।

मोटर में सवार होते ही यह समाचार मिला- पिछली रात, एक पहाड़ी बालक, सड़क के किनारे-पेड़ के नीचे ठिठुर कर मर गया।

मरने के लिए उसे वही जगह, वही दस बरस की उम्र और वही काले चिंथड़ों की कमीज मिली। आदमियों की दुनिया ने बस यही उपहार उसके पास छोड़ा था।

पर बतलाने वालों ने बताया कि गरीब के मुंह पर, छाती, मुट्ठियों और पैरों पर, बरफ की हल्की-सी चादर चिपक गई थी, मानो दुनिया की बेहयाई ढंकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफेद और ठंडे कफन का प्रबंध कर दिया था।

सब सुना और सोचा--अपना-अपना भाग्य !

शब्दार्थ-टिप्पण

निरुद्देश्य बिना किसी उद्देश्य के, बेमतलब **अरुण** लाल रंग **प्रकाश-वृत्त** रोशनी का घेरा **मूक** गूंगा, चुपचाप **असमंजस** दुविधा **निठुराई** निष्ठुरता **बेहयाई** निर्लज्जता **सुरम्य** मनोहर, सुंदर

मुहावरे

आँखे फाड़ना आश्चर्य से देखना **चम्पत हो जाना** भाग जाना **कोई चारा न रहना** कोई उपाय न बचना, उपाय न होना **छुटकारा पाना** पीछा छुड़ाना

स्वाध्याय

1. एक -दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) नैनीताल में लेखक और उसके मित्र ने क्या देखा ?

(2) लेखक को लड़के की गरीबी का पता कैसे चला ?

(3) हल्की रोशनी में बादलों के रंग में क्या परिवर्तन दिख रहा था ?

(4) लेखक को लड़के की मृत्यु का समाचार कैसे मिला ?

2. सविस्तार उत्तर दीजिए :

(1) होटल लौटकर लेखक की अपने मित्र से क्या बात हुई ?

(2) नैनीताल की संध्या के दृश्य का वर्णन कीजिए।

(3) पहाड़ी लड़कों के बारे में वकील साहब की क्या राय थी ?

(4) **'**आदमियों की दुनिया**'** ने लड़के के साथ कैसा व्यवहार किया था ?

(5) इस कहानी का शीर्षक **'**अपना-अपना भाग्य**'** क्यों रखा गया है ? समझाइए।

3. सही उत्तर चुनकर लिखिए :

1. वकील साहब ने पहाड़ी लड़के को नौकरी क्यों नहीं देना चाहते थे ?

(1) उन्हें नौकर की जरूरत नहीं थी।

(2) लड़का घरेलू काम नहीं जानता था।

(3) वे अजनबी को नौकर नहीं रखना चाहते थे।

(4) लड़का अधिक वेतन मांग रहा था ।

4. समानार्थी शब्द दीजिए :

धरती, दुनिया, बादल, तीर, प्रकाश, उपहार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- लेखक के मित्र (वकील साहब) और लड़के के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।
- इस कहानी के लिए कोई और शीर्षक सुझाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- जैनेन्द्रकुमार के किसी एक लघु उपन्यास (परख, त्यागपत्र या सुनीता) का परिचय विद्यार्थियों को दीजिए।

•

18 श्रीकृष्ण भक्ति

रसखान

(जन्मः सन् 1548 ई., निधनः सन् 1628 ई.)

कृष्णभक्त कवि रसखान का जन्म स्थान एवं प्रारंभिक निवास दिल्ली माना जाता है। प्रसिद्ध है कि रसखान ने वल्ल्भ संप्रदाय के अंतर्गत विट्ठलदासजी से दीक्षा ली थी। इसके बाद इन्होंने ब्रज भूमि में ही कृष्ण-भक्तिमय जीवन व्यतीत किया था। रसखान की भक्ति आत्मसमर्पण की भक्ति है इन्हें अपने आराध्य की शक्ति और वात्सल्य पर पूरा विश्वास है। व्रज भाषा का अत्यंत सरल रूप इनकी कविता में प्राप्त होता है। श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप का वर्णन, ब्रजप्रेम, भक्ति, राधा-कृष्ण की रूप माधुरी आदि इनकी कविता के मुख्य विषय हैं। रसखान की चार रचनाएँ प्रामाणिक मानी जाती हैं- **'**सुजान रसखान,**' '**प्रेम वाटिका,**' '**दान लीला,**'** और **'**अष्टयाम,**'** । रसखान ने दोहे, कविता, सब से अधिक लिखे हैं जो कोमलकांत पदावली की दृष्टि से अपूर्व हैं। ब्रज भाषा का सरल-तरल, सरस स्वच्छ रूप इनकी रचनाओं में देखते ही बनता है।

प्रस्तुत प्रथम सवैये में रसखान ने अपनी अनन्य भक्ति-भावना प्रदर्शित की है। वे अपने ब्रजप्रेम को अभिव्यक्त करते हुए कहते है कि पुनर्जन्म के बाद यदि उनको मनुष्य, पशु, पत्थर,या पक्षी की योनि मिले तो वे क्रमशः गोकुल गांव नदी, गायों, गोवर्धन पर्वत, यमुना नदी और कदम्ब के पेड़ों का सांनिध्य चाहते हैं। दूसरे सवैये में बाल-कृष्ण के अनुपम सौंदर्य को देखकर स्वयं कामदेव अपनी करोड़ों कलाएँ उन पर न्योछावर कर देता है। अंतिम सवैये में श्रीकृष्ण के मोहक व्यक्तित्व के प्रभाव का कलात्मक चित्रण किया गया है जिसमें ऐसा लगता है कि उनके रूप माधुर्य में पागल होकर सारा ब्रज ही श्रीकृष्ण के हाथों बिक गया है।

सवैये

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसों ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन ।
जौ पशु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मंझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धरयो कर छत्र पुरंदर-धारन ।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन ॥ 1 ॥

धूरि भरे अति सोभित श्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरैं अंगना, पग पैजनी बाजति पीरि कछोटी ॥
वा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निधि कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी ॥ 2 ॥

जा दिन तैं वह नंद को छोहरा, या बन धेनु चराइ गयौ है ।
मोहिनी ताननि गोधन गावत बेनु, बजाइ रिझाइ गयौ है ॥
वा दिन सो कछु टोना सो कै, रसखानि हिय मैं समाइ गयौ है ।
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर, बिकाइ गयौ है ॥ 3 ॥

शब्दार्थ-टिप्पण

मानुष मनुष्य **मंझारन** के बीच **जौ** यदि **पाहन** पत्थर **नित** नित्य **धरयो** धारण किया **पुरन्दर** इन्द्र **वारत** न्योछावर **खग** पक्षी **काम** कामदेव **कालिंदी** यमुना नदी **छोहरा** लड़का **कूल** किनारा **धेनु** गाय **धूरि** धूल **बेनु** बाँसुरी **पैजनी** पायल **सिगरौ** समस्त

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) पशु के रूप में जन्म मिलने पर रसखान की क्या अभिलाषा है ?

(1) पक्षी के रूप में कवि कहाँ बसना चाहते हैं ?

(1) पत्थर के रूप में होने पर कवि क्या बनना चाहते हैं ?

(1) कौए को भाग्यशाली क्यों कहा गया है ?

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कवि कौन-से गिरि का पत्थर होना चाहते हैं ?

(2) आँगन में खेलते हुए कृष्ण ने क्या पहन रखा है ?

2 . निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) नंद के लड़के ने व्रजवासियों को किस प्रकार रिझाया है ?

(2) खेलते-खाते हुए कृष्ण किस प्रकार शोभित हो रहे हैं ?

3. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) पुनर्जन्म होने पर कवि रसखान व्रज में बसने को क्यों कहते हैं ?

(2) व्रज में कोई किसी की मर्यादा क्यों नहीं कर रहा है ?

(3) कामदेव अपनी करोड़ों कलाएँ किस छवि पर न्योच्छावर कर रहा है ?

(4) कृष्ण के बाल-सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

4. भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) काग के भाग बड़े सजनी

(2) कोऊ न काहू की कानि करै

5. निम्निलिखित शब्दो के मानक हिन्दी रूप में लिखिए :

मानुष, सोभित, पीरी, बस, पसु, कोऊ, बेनु, ब्रज

6. योग्य विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो, चेरौं नित...........की धेनु मंझारन

(A) नंद (B) चंद (C) यशोदा (D) बलराम

(2) धूरि भरे अति ....स्यामजू

(A) सोजत (B) मोहित (C) सोभित (D) लोभित

(3) कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर.............गयौ है।

(A) बिकाइ (B) लुटाइ (C) रिझाय (D) रिसाइ

(4) प्रत्यक्ष का विरोधी शब्द चुनकर लिखिए :

(A) सामने (B) परोक्ष (C) पराया (D) निरपेक्ष

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रसखान के कृष्णभक्ति के अन्य पद पढ़िए ।
- अपनी कक्षा में रसखान के सवैयों का सस्वर पाठ कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को अन्य कृष्णभक्त कवियों की जानकारी प्रदान करें।

•

19	सादगी और स्वच्छता

मोहनदास करमचंद गांधी

(जन्म: सन् 1869 ई., निधन: सन् 1948 ई.)

हम जिन्हें सम्मान तथा अपनत्व से महात्मा गांधी कहते हैं उनका पूरा मूल नाम मोहनदास करमचन्द गांधी है। इनका जन्म गुजरात के पोरबंदर नामक शहर में हुआ । इनके माता-पिता के धार्मिक संस्कारों और भक्ति भावना ने इनके व्यक्तित्व में उच्च मानवीय आदर्शों और मूल्यों के प्रति अटूट निष्ठा पैदा की थी। मैट्रिक पास करने के बाद इन्होंने इग्लैण्ड से बैरिस्टरी की परीक्षा पास की। इनके सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ दक्षिण अफ्रीका में हुआ। वहां वकालत करते समय वे लम्बे समय तक गिरमिटिया लोगों के अधिकार के लिए अंग्रेज सरकार से लड़ते रहे। सन् 1915 में वे भाारत वापस लौटे और स्वतंत्रता संग्राम में न केवल सक्रिय हिस्सेदारी की अपितु उसे बड़ा सबल नेतृत्व भी प्रदान किया और भारत के आजाद होने तक भारतीय राजनीति के मुख्य सूत्रधार बने रहे। सत्य और अहिंसा को हथियार बनाकर चलाए गए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सफलता ने बापू को विश्व की महान् विभूतियों के बीच लाकर खड़ा कर दिया। ये आधुनिक युग के बड़े महत्त्वपूर्ण विचारक, चिंतक और कर्मयोगी थे। इनके विचारों ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। समग्र भारतीय साहित्य ने बापू के विचारों और कार्यों से प्रेरणा ली है।

साबरमती आश्रम, गुजरात विद्यापीठ, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-सभा, वर्धा आश्रम के संस्थापक और महिलोद्धार, अछूतोद्धार राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार जैसे रचनात्मक कार्यक्रमों के गांधीजी अगुआ रहे। अपने सादगीपूर्ण जीवन और आचरण तथा भारतीय जनता की नि:स्वार्थ सेवा से वे अपने जीवनकाल में सामान्य व्यक्ति से महात्मा और राष्ट्रपिता बन गये। गांधीजी उच्चकोटि के वकील, राजनेता, कुशल सम्पादक और आत्मकथाकार थे। गांधीजी ने यंग इंडिया, नवजीवन (अंग्रेजी, हिन्दी) हरिजन पत्रिका का सफल सम्पादन किया। इन्होंने 'सत्यनां प्रयोगो' नाम से गुजराती में आत्मकथा लिखी थी जो आज भी मील का पत्थर मानी जाती है। भारत सरकार ने उनके व्याख्यानों, सम्पादकीय लेखों तथा पत्रों को संपूर्ण गांधी वाङमय नाम से प्रकाशित किया है। काका कालेलकर ने उनके चुने हुए लेखों, भाषणों तथा सम्पादकीय लेखों का संकलन 'बापू की हिन्दीवाणी' के नाम से किया है।

प्रस्तुत अंश गांधीजी की आत्मकथा से है। उनके सादगी एवं स्वावलंबन्ध सम्बन्धी विचार और प्रयासों का चित्रण उनके द्वारा किया गया है। धोबी की गुलामी से मुक्ति पाना और अपना काम खुद करने का कुछ लोगों के लिए हँसी का कारण बनता है। पर वे उसे नजर अंदाज कर देते हैं और गोखलेजी के दुपट्टे वाला प्रसंग उन्हें उत्साहित ही करता है। इस प्रकार स्वावलंबन और सादगी उनके शौक में सुमार हो गए।

अपने अफ्रीका निवास के दौरान ही गाँधीजी ने सफाई के महत्व को समझा था, जब डरबन में प्लेग के प्रकोप का भय पैदा हुआ तब उन्होंने हिन्दुस्तानियों के रिहायशी क्षेत्रों में सख्ती से सफाई का कार्य करवाया। इससे उन्हें कुछ कड़वे अनुभव भी हुए। पर वे स्वीकार करते हैं कि आप सुधार के लिए निकलते हैं तो इतनी तो तैयारी रखनी होगी।

इसी प्रकार अकाल के समय में लोगों से चंदा इकट्ठा कर समाज को सहायता पहुँचाने की सोच भी उन्हें सत्य की ओर नजदीक ले जाती है और उनका विश्वास दृढ़ होता जाता है।

भोग भोगना मैनें शुरु तो किया, पर वह टिक न सका। घर के लिए साज-सामान भी बसाया, पर मेरे मन में उसके प्रति कभी मोह उत्पन्न नहीं हो सका। इसलिए घर बसाने के साथ ही मैंने खर्च कम करना शुरू कर दिया। धोबी का खर्च भी ज्यादा मालूम हुआ। इसके अलावा, धोबी निश्चित समय पर कपड़े नहीं लौटाता था। इसलिए दो-तीन दर्जन कमीजों और उतने ही कालरों से भी मेरा काम चल नहीं पाता था। कालर मैं रोज बदलता था। कमीज रोज नहीं तो एक दिन के अन्तर से बदलता था। इससे दोहरा खर्च होता था। मुझे यह व्यर्थ प्रतीत हुआ। अतएव मैने धुलाई का सामान जुटाया। धुलाई-कला पर पुस्तक पढ़ी और धोना सीखा। पत्नी को भी सिखाया। काम का कुछ बोझ तो बढ़ा ही, पर नया काम होने से उसे करने में आनन्द आता था।

पहली बार अपने हाथों धोये हुए कालर को तो मैं कभी भूल नहीं सकता। उसमें कलफ अधिक लग गया था और इस्तरी पूरी गरम नहीं थी। तिस पर कालर के जल जाने के डर से इस्तरी को मैंने अच्छी तरह दबाया भी नहीं था। इससे कालरमें कड़ापन तो आ गया, पर उसमें से कलफ झड़ता रहता था। ऐसी हालत में मैं कोर्ट गया और वहाँ बारिस्टरों के लिए मजाक का साधन बन गया। पर इस तरह का मजाक सह लेने की शक्ति उस समय भी मुझमें काफी थी।

मैंने सफाई देते हुए कहा, अपने हाथों कालर धोने का मेरा यह पहला प्रयोग है, इस कारण इसमें से कलफ झड़ता है। मुझे इससे कोई अड़चन नहीं होती : तिस पर आप सब लोगों के लिए विनोद की इतनी सामग्री जुटा रहा हूँ, सो घाते में।

एक मित्र ने पूछा, पर क्या धोबियों का अकाल पड़ गया है ?

यहाँ धोबीका खर्च मुझे तो असह्य मालूम होता हैं। कालर की कीमत के बराबर धुलाई हो जाती है और इतनी धुलाई देने के बाद भी धोबी की गुलामी करनी पड़ती है। इसकी अपेक्षा अपने हाथ से धोना मैं ज्यादा पसन्द करता हूँ।

स्वावलम्बन की यह खूबी मैं मित्रों को समझा नहीं सका।

मुझे कहना चाहिये कि आखिर धोबी के धंधे में अपने काम लायक कुशलता मैंने प्राप्त कर ली थी और घर की धुलाई धोबी की धुलाई से जरा भी घटिया नहीं होती थी। कालर का कड़ापन और चमक धोबी के धोये कालर से कम न रहती थी। गोखले के पास स्व.महादेव गोविन्द रानडे की प्रसादीरूप एक दुपट्टा था। गोखले उस दुपट्टे को अतिशय जतन से रखते थे और विशेष अवसर पर ही उसका उपयोग करते थे। जॉहनिस्बर्ग में उनके सम्मान में जो भोज दिया गया था, वह एक महत्वपूर्ण अवसर था। उस अवसर पर उन्होंने जो भाषण दिया वह दक्षिण अफ्रीका में उनका बड़े से बड़ा भाषण था । अतएव उस अवसर पर उन्हें उक्त दुपट्टे का उपयोग करना था। उसमें सिलवटें पड़ी हुई थीं और उस पर इस्तरी करनेकी जरुरत थी। धोबीका पता लगाकर उससे तुरन्त इस्तरी कराना सम्भव न था। मैंने अपनी कला का उपयोग करने देने की अनुमति गोखले से चाही।

मैं तुम्हारी वकालत का तो विश्वास कर लूगाँ, पर इस दुपट्टे पर तुम्हें अपनी धोबी कला का उपयोग नहीं करने दूँगा। इस दुपट्टे पर तुम दाग लगा दो तो ? इसकी कीमत तुम जानते हो ? यों कहकर अत्यन्त उल्लास से उन्होंने प्रसादी की कथा मुझे सुनायी।

मैंने फिर बिनती की और दाग न पड़ने देने की जिम्मेदारी ली। मुझे इस्तरी करनेकी अनुमति मिली और अपनी कुशलता का प्रमाण-पत्र मुझे मिल गया ! अब दुनिया मुझे प्रमाण-पत्र न दे तो भी क्या ?

जिस तरह मैं धोबी की गुलामी से छूटा, उसी तरह नाई की गुलामी से भी छूटने का अवसर आ गया। हजामत तो विलायत जानेवाले सब कोई हाथ से बनाना सीख ही लेते हैं, पर कोई बाल छाँटना भी सीखता होगा, इसका मुझे खयाल नहीं है। एक बार प्रिटोरिया में मैं एक अंग्रेज हज्जामकी दुकान पर पहुँचा। उसने मेरी हजामत बनाने से साफ इनकार कर दिया और इनकार करते हुए जो तिरस्कार प्रकट किया, सो घाते में रहा। मुझे दु:ख हुआ। मैं बाजार पहुँचा। मैंने बाल काटनेकी मशीन खरीदी और आईनेके सामने खड़े रहकर बाल काटे। बाल जैसे-तैसे कट तो गये, पर पीछे के बाल काटने में बड़ी कठिनाई हुई। सीधे तो वे कट ही न पाये। कोर्ट में खूब कहकहे लगे।

तुम्हारे बाल ऐसे क्यों हो गये हैं ? सिर पर चूहे तो नहीं चढ़ गये थे ?

मैंने कहा: जी नहीं, मेरे काले सिर को गोरा हज्जाम कैसे छू सकता है ? इसलिए कैसे भी क्यो न हों, अपने हाथसे काटे हुए बाल मुझे अधिक प्रिय हैं।

इस उत्तर से मित्रों को आश्चर्य नहीं हुआ। असल में उस हज्जामका कोई दोष न था। अगर वह काली चमड़ीवालों के बाल काटने लगता तो उसकी रोजी मारी जाती। हम भी अपने अछूतों के बाल ऊँची जातिके हिन्दुओंके हज्जामों को कहाँ काटने देते हैं ? दक्षिण अफ्रीका में मुझे इसका बदला एक नहीं, अनेकों बार मिला है : और चूँकि मैं यह मानता था कि यह हमारे दोष का परिणाम है, इसलिए मुझे इस बात से कभी गुस्सा नहीं आया।

स्वावलम्बन और सादगी के मेरे शौक ने आगे चलकर जो तीव्र स्वरुप धारण किया उसका वर्णन यथास्थान होगा। इस चीज की जड़ तो मेरे अन्दर शुरु से ही थी। उसके फूलने-फलने के लिए केवल सिंचाई की आवश्यकता थी। वह सिंचाई अनायास ही मिल गई।

* * * *

सफाई आन्दोलन ओर अकाल कोष

समाज के एक भी अंग का निरुपयोगी रहना मुझे हमेशा अखरा है। जनता के दोष छिपाकर उसका बचाव करना अथवा दोष दूर किये बिना अधिकार प्राप्त करना मुझे हमेशा अरुचिकर लगा है। इसलिए दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानियों पर लगाये जानेवाले एक आरोप का, जिसमें कुछ तथ्य था, इलाज करने का काम मैनें वहाँ के अपने निवासकाल में ही सोच लिया था। हिन्दुस्तानियों पर जब-तब यह आरोप लगाया जाता था कि वे अपने घर-बार साफ नहीं रखते और बहुत गन्दे रहते हैं। इस आरोप को नि:शेष करने के लिए आरम्भमें हिन्दुस्तानियों के मुखिया माने जानेवाले लोगों के घरो में तो सुधार आरम्भ हो ही चुके थे। पर घर-घर घूमने का सिलसिला तब शुरु हुआ जब डरबन में प्लेग के प्रकोप का ड़र पैदा हुआ। इसमें म्युनिसिपालिटी के अधिकारियों का भी सहयोग और सम्मति थी। हमारी सहायता मिलन से उनका काम हलका हो गया और हिन्दुस्तानियों को कम कष्ट उठाने पड़े : क्योंकि साधारणत: जब प्लेग आदिका उपद्रव होता है, तब अधिकारी घबरा जाते हैं और उपायों की योजना में मर्यादा से आगे बढ़ जाते हैं। जो लोग उनकी दृष्टिमें खटकते हैं, उन पर उसका दबाव असह्य हो जाता है। भारतीय समाज ने खुद ही सख्त उपायों से काम लेना शुरु कर दिया था, इसलिए वह इन सख्तियों से बच गया।

मुझे कुछ कड़वे अनुभव भी हुए। मैंने देखा कि स्थानीय सरकार से अधिकारों की माँग करने में जितनी सरलता से मैं अपने समाज की सहायता पा सकता था, उतनी सरलता से लोगों से उनके कर्तव्यका पालन कराने के काम में सहायता प्राप्त न कर सका। कुछ जगहों पर मेरा अपमान किया जाता, कुछ जगहों पर विनय-पूर्वक उपेक्षा का परिचय दिया जाता। गन्दगी साफ करने के लिए कष्ट उठाना उन्हें बहुत अखरता था। तब पैसा खर्च करने की तो बात ही क्या ? लोगों से कराना चाहता है, उससे तो उसे विरोध, तिरस्कार और प्राणों के संकट की भी आशा रखनी चाहिये। सुधारक जिसे सुधार मानता है, समाज उसे बिगाड़ क्यों न माने ? अथवा बिगाड़ न माने तो भी उसके प्रति उदासीन क्यों न रहे ?

इस आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि भारतीय समाज में घर-बार साफ रखने के महत्व को न्यूनाधिक मात्रा में स्वीकार कर लिया गया। अधिकारियों की दृष्टि में मेरी साख बढ़ी। वे समझ गये कि मेरा धन्धा केवल शिकायतें करना या अधिकार माँगने का ही नहीं है: बल्की शिकायतें करने या अघिकार माँगने में मैं जितना तत्पर हूँ, उतना ही उत्साह और दृढता भीतरी सुधार के लिए भी मुझमें है।

पर अभी समाजकी वृत्ति को दूसरी एक दिशा में विकसित करना बाकी था। इन उपनिवेशवासी भारतीयों को भारतवर्ष के प्रति अपना धर्म भी अवसर आने पर समझना और पालना था। भारतवर्ष तो कंगाल है। लोग धन कमाने के लिए परदेश जाते हैं। उनकी कमाई का कुछ हिस्सा भारतवर्ष को उसकी आपत्ति के समय में मिलना चाहिये। सन् 1817 मैं यहाँ अकाल पड़ा था और सन् 1899 में दुसरा भारी अकाल पड़ा। इन दोनों अकालों के समय दक्षिण अफ्रीका से अच्छी मदद आयी थी। पहले अकाल के समय जितनी रकम इकठ्ठा हो सकी थी, दूसरे अकाल में मौके पर उससे कहीं अधिक रकम इकठ्ठा हुई थी। इस चंदे में हमने अंग्रेजों से भी मदद माँगी थी और उनकी ओर से अच्छा उत्तर मिला था। गिरमिटिया हिन्दुस्तानियों ने भी अपने हिस्से की रकम जमा करायी थी।

इस प्रकार इन दो अकालों के समय जो प्रथा शुरू हुई वह अब तक कायम है, और हम देखते हैं कि जब भारतवर्ष में कोई सार्वजनिक संकट उपस्थित होता है, तब दक्षिण अफ्रीका की ओर से वहाँ बसनेवाले भारतीय हमेशा अच्छी रकमें भेजते हैं।

इस तरह दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की सेवा करते हुए मैं स्वयं धीरे-धीरे कई बातें अनायास सीख रहा था। सत्य एक विशाल वृक्ष है। ज्यों-ज्यों उसकी सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें से अनेक फल पैदा होते दिखायी पड़ते हैं। उसका अन्त ही नहीं होता। हम जैस-जैसे उसकी गहराई में उतरते हैं, वैसे-वैसे उसमें से अधिक रत्न मिलते जाते हैं, सेवा के अवसर प्राप्त होते रहते हैं।

शब्दार्थ-टिप्पण

अकाल सूखा **उदासीन** विरक्त,कंगाल **उपद्रव** उत्पात, हलचल **दोष** आरोप **सख्ती** कठोरता,क्रूरता **साख** इज्जत **आपत्ति** आपदा **सार्वजनिक** सब लोगों के लिए

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) डर्बन में किस रोग का डर फैला था ?

(2) दक्षिण अफ्रीका में हिन्दुस्तानियों पर क्या आरोप लगाया जाता था ?

(3) लोग परदेश क्यों जाते हैं ?

(4) गांधीजी दक्षिण अफ्रीका क्यों गए ?

(5) हज्जाम ने गांधीजी के बाल क्यो नहीं काटे ?

(6) दक्षिण अफ्रीकामें किस प्रकार का भेदभाव फैला था ?

(7) गांधीजी में कौन कौन से शौक थे ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) विशाल वृक्ष किसे कहा गया है ? क्यों ?

(2) गांधीजी ने खर्च कम करना शुरु क्यों किया ?

(3) गांधीजी का प्रिटोरिया में तिरस्कार क्यों हुआ ?

(4) गांधीजी ने कपड़े अपने हाथ से धोना क्यों पसन्द किया ?

3. संक्षेप में उत्तर दीजिए :

(1) गांधीजी धोबी की गुलामी से कैसे मुक्त हुए?
(2) गांधीजीने अपने बाल स्वयं क्यों काटे?
(3) गांधीजी के सफाई आंदोलन का क्या परिणाम आया?
(4) गांधीजी के स्वावलंबन और सादगी से क्या सीख मिलती है ?
(5) गांधीजी बारिस्टरों के लिए मजाक का विषय कैसे बने?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

सत्य एक विशाल वृक्ष है। ज्यों -ज्यों उसकी सेवा की जाती है, त्यों -त्यों उसमें से अनेक फल पैदा होते दिखायी पड़ते हैं। उसका अन्त ही नहीं होता।

5. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) गांधीजी किस देश में वकालात करने गए?

(A) अमेरिका (B) दक्षिण अफ्रीका (C) जापान (D) जर्मनी

(2) प्लेग के प्रकोप का डर किस शहर में फैला था।

(A) डरबन (B) जोहानिस्बर्ग (C) प्रिटोरिया (D) केपटाउन

(3) लोगों से कुछ भी काम कराना हो तो क्या रखना चाहिए?

(A) रुपये (B) हिम्मत (C) धीरज (D) मित्रता

(4) गांधीजीने विशाल वृक्ष किसे कहा है?

(A) साहस (B) ईमानदारी (C) सत्य (D) निष्ठा

6. मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

दाग लगना

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

आरम्भ, अपेक्षा, शुरू, पसंद, सम्भव, अनायास, निरुपयोगी, सहयोग, परदेश

8. निम्नलिखित शब्दों के सामानार्थी शब्द लिखिए :

उल्लास, प्रतीत, अवसर, गुस्सा, धीरज, उत्साह

विद्यार्थी-प्रवृति

- विद्यार्थी स्वावलम्बन और सादगी के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

शिक्षक-प्रवृति

- शिक्षक विद्यार्थियों को 'गांधीजी की आत्मकथा' के अन्य अंशों की जानकारी दें।

•

20 बहुत दिनों के बाद

नागार्जुन

(जन्म :सन् 1911 ई.; निधन : सन् 1998- ई.)

बाबा नागार्जुन के नाम से सम्पूर्ण हिन्दी जगत में लोकप्रिय कवि नागार्जुन का पैतृक नाम वैद्यनाथ मिश्र है। इनका जन्म तरौनी के जिला दरभंगा में हुआ था। काशी और कलकत्ता से इन्होंने साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने पाली भाषा और बौद्ध दर्शन का विशेष अध्ययन श्रीलंका के केलानिया (कोलंबो)के बौद्ध परिवेश में किया। वहीं पर इन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। राहुल सांकृत्यायन के साथ तिब्बत के दुर्गम प्रदेशों की इन्होंने यात्रा की है। बिहार के किसान संघर्षो का नेतृत्व किया और उसी सिलसिले में दस महीने जेल में भी रहे।

प्रकृति और प्रेम से लेकर राजनीति तक उनकी रचनाओं का क्षेत्र फैला हुआ है। शासन की विसंगतियों, लोगों की अवसरवादी प्रकृति आदि पर इन्होंने खुलकर व्यंग्य किया है। जनश्रम की महिमा के गायक नागार्जुन की कविताओं में व्यंग्य का स्वर मुखर है। इन्होंने अपनी कविताओं में सरल भाषा का प्रयोग किया है। इनके काव्य में विषयगत विविधता के दर्शन होते हैं। इन्होंने हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली, संस्कृत और बंगला भाषा में भी रचनाएँ की हैं। कविता के साथ ही कथा-साहित्य में भी इनका बड़ा योगदान रहा है। आपके 'पत्रहीन नग्नगाछ' मैथिली कविता संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला है। 'युगधारा,' 'प्यासी पथराई आँखें,' 'सतरंगे पंखों-वाली' 'तालाब की मछलियाँ,' 'भस्मांकुर' इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। 'बलचनमा,' 'रतिनाथ की चाची,' 'नई पौध,' 'बाबा बटेसरनाथ,' 'दुखमोचन,' 'उग्रतारा,' प्रमुख उपन्यास हैं।

प्रस्तुत कविता में कवि का अपना मातृभूमि प्रेम स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। आज की शहरी संस्कृति की चमक-दमक में भी अपना गाँव, अपनी मातृभूमि का आकर्षण, उसके प्रति मोह कम नहीं होता है। बड़ी ही सीधी-सादी सरल और सहज भाषा में गाँव का सटीक और मार्मिक चित्र उभर आया है।

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी भर देखी
पकी-सुनहली फसलों की मुसकान
बहुत दिनों के बाद।

अब की मैं जी भर सुन पाया
धान कूटती किशोरियों की कोकिल कंठी तान
बहुत दिनों के बाद।

अब की मैंने जी भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताजे-टटके फूल
बहुत दिनों के बाद।

अब की मैं जी भर छू पाया
अपनी गँवईं पगडंडी की चंदनवर्णी धूल
बहुत दिनों के बाद।

अब की मैंने जी भर
तालमखाना खाया गन्ने चूसे जी भर
बहुत दिनों के बाद।

अब की मैंने जी भर भोगे
गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भू-पर
बहुत दिनों के बाद।

शब्दार्थ-टिप्पण

मुसकान मुस्कराहट **स्मित पगदंडी** सकरा रास्ता **कोकिल** कोमल **भू** पृथ्वी **तान** आवाज

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

(1) स्त्रियाँ धान कूटते समय क्या करती हैं।?

(2) कविने जी भर कर क्या देखा?

(3) पगडंडी कैसी थी?

(4) कवि ने किसके फूल सूंघे?

(5) कवि ने कैसी फसलें देखीं?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1)कवि ने किन किन इन्द्रिग्राह्य संवेदनों का भोग किया?

(2) स्त्रियाँ क्या कर रहीं थी? उनकी आवाज कैसी थी?

(3) किशोरियों के कार्य का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए?

3. विस्तारपूर्वक उत्तर लिखिए।

(1) मौलसिरी के फूल कैसे थे? कवि ने उनका किस प्रकार उपयोग किया?

(2) कवि ने ग्रामीण क्षेत्र का कैसा वर्णन किया है?

(3) बहुत दिनों के बाद कवि ने क्या-क्या अनुभव किए?

(4) ग्राम्य जीवन के कार्यों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

4. पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

अब की मैं जी भर सुन पाया।
धान कूटती किशोरियों की कोकिल कंठी तान
बहुत दिनों के बाद।

5. सही जोड़े मिलाइए ।

क	ख
(1) किशोरियों की कोकिल कंठी	(1) फसलों की मुसकान
(2) जी भर सूँघे	(2) गँवईं पगडंडी की चंदनवर्णों धूल
(3) जी भर देखी	(3) तान
(4) जी भर छू पाया	(4) ताजे टटके फूल

6. समानार्थी शब्द लिखिए ।

धूल, फूल, पगडंडी, भू

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी काव्य का कक्षा में समूह गान करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक विद्यार्थियों को ग्राम्य जीवन के विषय में बताएँ ।

•